छत्तीसगढ़ भारती

कक्षा – 8

सत्र 2019–20

DIKSHA एप कैसे डाउनलोड करें?

विकल्प 1 : अपने मोबाइल ब्राउज़र पर diksha.gov.in/app टाइप करें।

विकल्प 2 : Google Play Store में DIKSHA NCTE ढूंढे एवं डाउनलोड बटन पर tap करें।

DIKSHA

मोबाइल पर QR कोड का उपयोग कर डिजिटल विषय वस्तु कैसे प्राप्त करें ?

DIKSHA App को लॉच करे → **App** की समस्त अनुमति को स्वीकार करें → उपयोगकर्ता **Profile** का चयन करें।

1. पाठ्यपुस्तक में QR Code को Scan करने के लिए मोबाइल में QR Code tap करें।
2. मोबाईल को QR Code पर केन्द्रित करें।
3. सफल Scan के पश्चात् QR Code से लिंक की गई सूची उपलब्ध होगी।

डेस्कटॉप पर QR Code का उपयोग कर डिजिटल विषय–वस्तु तक कैसे पहुँचे ?

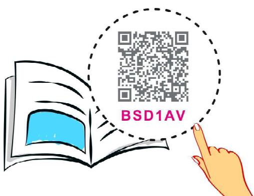

1. QR Code के नीचे 6 अंक का Alpha Numeric Code दिया गया है।

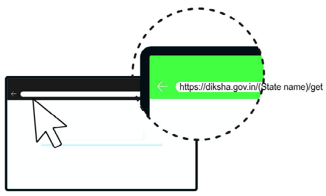

2. ब्राउज़र में diksha. gov.in/cg टाईप करें।

3. सर्च बार पर 6 डिजिट का QR CODE टाईप करें।

4. प्राप्त विषय–वस्तु की सूची से चाही गई विषय–वस्तु पर क्लिक करें।

राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् छत्तीसगढ़, रायपुर

निःशुल्क वितरण हेतु

प्रकाशन वर्ष 2019

AIU8FD

सहयोग
एस.सी.ई.आर.टी. छत्तीसगढ़, रायपुर
डॉ. हृदयकांत दीवान, (विद्या भवन, उदयपुर)
प्रो. रमाकांत अग्निहोत्री (दिल्ली विश्वविद्यालय)
अजीम प्रेम जी फाउनडेशन

समन्वयक डॉ. विद्यावती चन्द्राकर

संपादक डॉ. सी.एल. मिश्र, डॉ. विद्यावती चन्द्राकर

लेखक–मंडल

हिन्दी	छत्तीसगढ़ी
डॉ. एस.एस. त्रिपाठी, डॉ. बृजमोहन इष्टवाल, गजानंद प्रसाद देवांगन, राजेन्द्र पाण्डे, श्री दिनेश गौतम, विनय शरण सिंह, कुमार अनुपम, श्रीमती सीमा अग्रवाल, डॉ. रचना अजमेरा, श्रीमती उषा पवार, श्री धीरेन्द्र कुमार, श्री शोभा शंकर नागदा, डॉ. रचना दत्त, श्री कार्तिकेय शर्मा।	डॉ. जीवन यदु, डॉ. पीसी लाल यादव, श्री विनय शरण सिंह, डॉ. मांघी लाल यादव, श्री मंगत रवींद्र, श्री डुमन लाल ध्रुव, श्री पाठक परदेशी, श्री गणेश यदु, श्री कुबेर साहू, श्रीमती नम्रता सिंह, श्री निशिकांत त्रिपाठी, श्रीमती मैना अनंत।

आवरण पृष्ठ एवं
लेआउट डिज़ाइन – रेखराज चौरागड़े
फोटोग्राफ – एस. अहमद (अंतिम आवरण पृष्ठ)
चित्रांकन – राजेन्द्र सिंह ठाकुर, रेखराज चौरागड़े, समीर श्रीवास्तव
सहयोगी – सुरेश कुमार, मुकुंद साहू

राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, रायपुर उन सभी कवियों, लेखकों या उनके उत्तराधिकारियों के प्रति, जिनकी रचनाएँ इस पुस्तक में समाहित की गई हैं, अपनी कृतज्ञता ज्ञापित करती है।

प्रकाशक

छत्तीसगढ़ पाठ्यपुस्तक निगम, रायपुर (छ.ग.)

मुद्रक

मुद्रित पुस्तकों की संख्या – ....

आमुख

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 में यह स्पष्ट रूप से उल्लेख किया गया है कि प्राथमिक स्तर की स्कूली शिक्षा अवश्य घरेलू भाषा के माध्यम से ही दी जाए। इस महत्वपूर्ण अनुशंसा को साकार रूप देने के लिए ही ''छत्तीसगढ़ी पाठ'' तैयार की गई है।

मातृभाषा में प्राथमिक शिक्षा के हिमायती शिक्षाविदों में महात्मा गांधी, रवीन्द्रनाथ टैगोर, स्वामी विवेकानंद भी रहे हैं। छत्तीसगढ़ बनने के बाद यद्यपि छत्तीसगढ़ी के पाठों को नई पाठ्यपुस्तकों में स्थान मिला पर उनकी संख्या कम थी। राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद् के प्रस्ताव पर शासन ने नए शिक्षा सत्र से हिन्दी की प्रचलित पाठ्यपुस्तकों के एक चौथाई पाठों को मातृभाषा में देने का निर्णय लिया। शासन ने यह कार्य एस.सी.ई.आर.टी. को सौंपा जिसके निर्देशानुसार स्थानीय भाषा छत्तीसगढ़ी भाषा में पाठों की रचना की गई।

मातृभाषा में अध्यापन से बच्चों की झिझक समाप्त होती है और वे खुलकर अपने विचार व्यक्त कर पाते हैं। शाला के नए परिवेश में आए बच्चों के लिए स्कूली भाषा की समस्या उनके लिए जिस अजनबीपन को लेकर आती है, मातृभाषा में शिक्षण उसे सहजता से दूर कर देता है।

मातृभाषा में संप्रेषण सहज होने से विद्यार्थियों के लिए व्यक्तित्व विकास व आत्मगौरव के अवसर जुटा देता है। आज का युग ज्ञान–विज्ञान का युग है, ज्ञान–विज्ञान को यदि बच्चे की अपनी भाषा के साथ जोड़ दिया जाए, उनकी भाषा में प्रस्तुत किया जाए तो बच्चे के लिए यह प्रगति की राह सुलभ करवाता है।

प्रारंभ में भारती के वर्तमान पाठों में से एक चौथाई पाठ उनकी अपनी मातृभाषा में दिए गए हैं। धीरे–धीरे मातृभाषा में प्राथमिक शिक्षा की ओर हम आगे बढ़ेंगे।

स्कूल शिक्षा विभाग एवं राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, छ.ग. द्वारा शिक्षकों एवं विद्यार्थियों में दक्षता संवर्धन हेतु अतिरिक्त पाठ्य संसाधन उपलब्ध कराने की दृष्टि से Energized Text Books एक अभिनव प्रयास है, जिसे ऑन लाईन एवं ऑफ लाईन (डाउनलोड करने के उपरांत) उपयोग किया जा सकता है। ETBs का प्रमुख उद्देश्य पाठ्यवस्तु के अतिरिक्त ऑडियो–वीडियो, एनीमेशन फॉरमेट में अधिगम सामग्री, संबंधित अभ्यास, प्रश्न एवं शिक्षकों के लिए संदर्भ सामग्री प्रदान करना है।

इस पुस्तक में मातृभाषा के पाठों में आए हिन्दी के शब्दों को हमने ज्यों 'का' त्यों ले लिया है। इसका कारण यह है कि ज्ञान–विज्ञान की भाषा में हिन्दी ने संस्कृत के शब्दों का प्रयोग जिस तरह किया है, उसी तरह मातृभाषा में हिन्दी के शब्दों का प्रयोग हो ताकि मातृभाषा उसे आत्मसात कर अधिक समृद्ध हो तथा विज्ञान जैसे विषय की पढ़ाई में बच्चों को आसानी हो। प्रारंभिक तौर पर इसे मनोरंजक बनाकर और स्थानीयता से जोड़कर प्रस्तुत किया गया है ताकि बच्चों को यह अधिक रुचिकर लगे। इस संबंध में प्रारंभिक फीडबैक हमारा उत्साह बढ़ाने वाला है तथा इस संबंध में आने वाले आपके सुझावों का स्वागत है। ये सुझाव क्षेत्रीय भाषा की पुस्तकों को बेहतर बनाने में हमारी सहायता करेंगे। पुस्तक को तैयार करने में हमें जिन विद्वानों का सहयोग प्रत्यक्ष–अप्रत्यक्ष रूप से मिला, परिषद् उनके प्रति आभारी है।

संचालक

राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्

छत्तीसगढ़, रायपुर

प्राक्कथन

छत्तीसगढ़ राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् की नई किताब बनाने का उद्देश्य बच्चों को स्वतंत्र और जिज्ञासु पाठक बनाना है। परिषद् की पुस्तकों ने यह भी रेखांकित किया है कि भाषा सीखने–सिखाने का दायित्व सिर्फ भाषा की पुस्तक का ही नहीं है वरन् अन्य विषयों की भी इसमें भूमिका है। सामाजिक अध्ययन, विज्ञान व गणित की पुस्तकों को पढ़कर समझने के प्रयास से, स्वतंत्र व समृद्ध पाठक बनाना संभव होता है। पाठ्यपुस्तकों के अलावा विद्वानों द्वारा रचित साहित्य, अन्य प्रसिद्ध लेखकों द्वारा लिखी सामग्री के साथ–साथ बच्चों के लिए अन्य कहानी, कविता, नाटक आदि की पुस्तकों की भी एक महत्वपूर्ण भूमिका है। बच्चों के अनेक स्वाभाविक अनुभवों के बारे में सोचना, उनका गहराई से विश्लेषण करना व इन सबको एक–दूसरे से बाँटना न सिर्फ भाषायी समझ बढ़ाता है वरन् कई और महत्वपूर्ण क्षमताएँ भी प्रदान करता है।

कक्षा आठवीं में पढ़नेवाले बच्चों के भाषायी ज्ञान को और समृद्ध बनाना है। इसमें समझने व अभिव्यक्त करने, दोनों तरह की क्षमताएँ शामिल हैं। अच्छे लेखकों, कवियों और साहित्यकारों द्वारा लिखी कहानी, कविता, निबंध, नाटक आदि साहित्य की विधाएँ तो हैं ही, साथ–ही–साथ ऐसी पुस्तकें सोचने–समझने के तरीकों को भी समृद्ध बनाती हैं। इन सभी की पढ़ने में रुचि पैदा करना ही एक प्रमुख लक्ष्य है। ज्यादातर भाषा–शिक्षण व साहित्य का उद्‌देश्य बच्चे के विकास व समाज के साथ उसके संबंध को गहरा करना व उसके सोचने व जीवन दर्शन को वृहद् करना है। इस लक्ष्य को पूरा करने के लिए यह आवश्यक है कि बच्चे अच्छे साहित्य को पढ़ें–लिखें और उस पर बातचीत करें। बच्चों का पुस्तक की सामग्री के साथ संबंध गहरा हो, उनके बीच एक सतर्क पाठक का रिश्ता बने। इसके लिए वे पाठों पर आधारित नए प्रश्न बनाएँ व अपने जीवन के अनुभवों के आधार पर सामग्री में प्रस्तुत विचारों पर टिप्पणी करें।

कक्षा आठवीं के बच्चों से यह भी अपेक्षा है कि वे पाठ्‌यपुस्तक में प्रस्तुत विचारों तथा घटनाओं के वर्णनों आदि के बारे में सोचें–विचारें, सवाल करें और अपनी राय बनाएँ। यह सब करना कुछ हद तक संभव है। कक्षा आठवीं में हम यह भी अपेक्षा करते हैं कि बच्चे समूहों में अब ज्यादा बार खुद पढ़कर व चर्चा करके सीखें और अपनी समझ को पुख्ता करें। हमारी कोशिश है कि भाषा की पुस्तक के माध्यम से नए अनुभवों व विचारों से रू–ब–रू होने का व उन्हें अहसास करने का एक जीवंत अनुभव मिले।

शिक्षा का अधिकार अधिनियम 2009 बच्चों को गुणवत्तायुक्त शिक्षा देने पर जोर देता है। एन.सी.ई.आर.टी.,नई दिल्ली द्वारा कक्षा 1–8 तक के बच्चों हेतु कक्षावार, विषयवार अधिगम प्रतिफलों का निर्माण कर सुझावात्मक शिक्षण प्रक्रियाओं का उल्लेख किया है। जिससे बच्चों के सर्वांगीण विकास के लक्ष्य को प्राप्त किया जा सकेगा। पुस्तकों में समयानुसार संशोधन तथा परिवर्धन एक निरंतर प्रक्रिया है। अतः सत्र 2018–19 हेतु पुस्तकों को समसामायिक तथा प्रासंगिक बनाया गया है। जिससे बच्चों को वांछित उपलब्धि प्राप्त करने के अधिक अवसर उपलब्ध होंगे। आशा है कि पुस्तकें शिक्षक साथियों तथा बच्चों को लक्ष्य तक पहुँचने में मददगार होंगी।

इस पुस्तक को तैयार करने में शिक्षाविदों, शिक्षकों, शिक्षक प्रशिक्षकों का सक्रिय सहयोग एवं मार्गदर्शन प्राप्त हुआ। इसके बावजूद पुस्तक में सुधार करने और जोड़ने की संभावनाएँ तो सदैव रहेंगी।

इस पुस्तक को और बेहतर बनाने के लिए आप अपने बहुमूल्य सुझाव परिषद् को भेजेंगे, ऐसी हमारी उम्मीद है।

शुभकामनाओं के साथ।

संचालक

राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्

छत्तीसगढ़, रायपुर

शिक्षकों के लिए

छत्तीसगढ़ राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद् के मार्गदर्शन में कक्षा आठवीं के लिए बनी हिन्दी की नवीन पुस्तक आपके सामने है। पुस्तक बनाने में राष्ट्रीय शिक्षाक्रम पाठ्यचर्या की रूपरेखा–2005 को भी ध्यान में रखा गया है। पुस्तक में विषयगत एवं विधागत विविधता के साथ–साथ बच्चों की जिंदगी से जुड़े अनुभवों को ध्यान में रखकर सामग्री को संकलित किया गया है। ये पाठ साहित्य की विविध विधाओं–कविता, कहानी, वर्णन, नाटक, निबंध, पत्र, डायरी, आत्मकथा, जीवनी,संस्मरण, यात्रा वर्णन आदि के रूप में संकलित हैं। साहित्य की सभी विधाओं को शामिल किया जा सके, ऐसा कर पाना इस स्तर पर और एक पुस्तक में संभव नहीं है। अतः यह अपेक्षा है कि आप अन्य विधाओं की पुस्तकों को पढ़ने के लिए बच्चों को प्रेरित करेंगे। पुस्तक में संकलित पाठों पर काम करने के लिए बच्चों के बीच संवाद, चर्चा, समूह चर्चा, मौखिक कथन, वाचन, अभिनय, समीक्षा, मौलिक लेखन, सृजनकार्य आदि गतिविधियाँ प्रस्तावित की गई हैं। हमारी आपसे यह अपेक्षा है कि आप पूर्णतया इसी पुस्तक पर निर्भर न रहें। पुस्तक पर निर्भरता उतनी ही हो जितनी की जरूरत हो।

हमारी अपेक्षा है कि इस पुस्तक के उपयोग से बच्चे भाषा में रुचि बना पाएँगे और कक्षा 8 के अंत तक वे अपने मन से नई–नई कहानियाँ, कविताएँ, नाटक आदि पढ़ने लगेंगे और उन पर परस्पर चर्चा कर सकेंगे। भाषा सीखने–सिखाने के बारे में सोचते समय हमें यह ध्यान रखना चाहिए कि बच्चे आस–पास के वातावरण व दुनिया को जानना व समझना चाहते हैं। हमें यह प्रयास करना है कि उनकी दृष्टि व अनुभूति अधिक संवेदनशील व गहरी हो। सामाजिक यथार्थ के बहुत बड़े हिस्से को गहराई से देखने की क्षमता हमें साहित्य से ही मिलती है। इसलिए हमारा यह प्रयास होना चाहिए कि पाठ्यपुस्तक के अतिरिक्त हम उन्हें कुछ अन्य सामग्री पढ़ने को दें।

इस स्तर के बच्चे स्वतंत्र रूप से पढ़ने–लिखने में आत्मनिर्भर हो चुके होते हैं। अब इन बच्चों को दी गई सामग्री पर स्वतंत्र रूप से काम करने के अवसर और नई चुनौतियाँ दिए जाने की जरूरत है। आपकी भूमिका एक मददगार के रूप में होनी है। सीखना स्वयं करने से ही होता है, अतः बच्चों को इसके लिए अधिक–से–अधिक मौका मिले।

इस स्तर के बच्चों की भाषायी क्षमताओं को आगे बढ़ाने हेतु यह पुस्तक एक आधार सामग्री के रूप में है। यहाँ उद्देश्य यह है कि बच्चे अच्छे लेखकों और कवियों द्वारा रचे गए साहित्य को पढ़ें और उस पर चिंतन मनन करें। भाषाशिक्षण का उद्देश्य बच्चों को एक अच्छा पाठक बनाने के साथ–साथ सोचने–विचारने, चिंतन करने, विचारों को विस्तारित करने, कल्पना करने तथा नई बातें खोजने, तर्क समझने आदि के लिए तैयार करना है।

यह भी अपेक्षा है कि बच्चा न सिर्फ पुस्तक की सामग्री को गहराई से समझकर उसकी विवेचना कर सके वरन् किसी भी सामग्री पर गहरे रूप से विचार करने व अध्ययन करने की क्षमता विकसित कर सके।

इस पुस्तक की पाठ्य–सामग्री में विविधता इसलिए रखी गई है कि बच्चे हर प्रकार की सामग्री का परिचय पा सकें व उसका रस ले सकें। इस पुस्तक में अभ्यास उदाहरणस्वरूप दिए गए हैं। आप इन्हें विस्तारित कर सकते हैं। कक्षा 5 तक की पुस्तकों में हमने प्रत्येक पाठ में नए प्रश्न बनाकर मौखिक रूप में परस्पर प्रश्न पूछने और उत्तर देने के अभ्यास करवाए हैं। इस पुस्तक में भी कई जगह यह गतिविधि कराने के लिए इंगित किया गया है। बच्चे भी सोचकर सवाल बनाएँ तो उनकी पढ़ पाने की क्षमता सुदृढ़ होगी।

बच्चों की पढ़ने की क्षमता बढ़ाने व पाठ के बारे में गहरे रूप से विचार करने की समझ पैदा करने के लिए आवश्यक है कि उसे सवालों के रूप में कुछ ऐसे स्रोत मिलें जो पाठ को समझने में उसकी मदद करें। पाठ के अंत में दिए गए प्रश्न पाठ की समझ का एक हद तक मूल्यांकन कर सकते हैं। किन्तु इन प्रश्नों का वास्तविक उद्देश्य बच्चों में पढ़ने व समझने की एक कोशिश पैदा करना है। प्रश्नों के कुछ उदाहरण पाठ में दिए गए हैं; कृपया आप स्वयं पाठ पढ़ाते समय और भी प्रश्न बनाएँ।

बच्चों से भी प्रश्न बनाने का कार्य करवाएँ। शुरू में वे नए मौखिक प्रश्न बनाकर एक–दूसरे से पूछ सकते हैं। धीरे–धीरे ये सवाल गहरे होते जाएँगे। बाद में उन्हें लिखित प्रश्न बनाने के लिए भी प्रेरित करें। इनमें से कुछ तो सूचना आधारित प्रश्न हो सकते हैं। ऐसे प्रश्नों के उत्तर सीधे पाठ से खोजे जा सकते हैं। कुछ कार्यकारण संबंध वाले प्रश्न हो सकते हैं तथा कुछ कल्पनात्मकता व सृजनात्मकता वाले प्रश्न भी होंगे। इन प्रश्नों का जवाब बच्चे अपनी भाषा में लिखें तो ज्यादा अच्छा होगा। कुछ प्रश्न पूर्ण सामग्री को समझकर उसके आधार पर हो सकते हैं या उसका सार लिखने जैसे; और कुछ ऐसे भी हो सकते हैं, जो पाठ्य सामग्री में व्यक्त विचारों के बारे में टिप्पणी माँगें। अर्थ समझना पढ़ने का सबसे महत्वपूर्ण हिस्सा है और उसी में पारंगत करना पुस्तक का एक लक्ष्य होगा।

कक्षा आठ में जिन अभ्यासों पर जोर दिया गया है, वे हैं –

- पढ़ी गई सामग्री का सार लिखना।
- सामग्री पर अपने अनुभवों के आधार पर टिप्पणी करना।
- सन्दर्भ से शब्दों को अर्थ देना व नए वाक्य बनाना।
- कहानी पढ़कर समझना और समूह में उस पर नाटक तैयार करना।
- दी गई सामग्री के आधार पर कल्पना करना, जैसे यदि ऐसा नहीं होता तो क्या होता।
- सामग्री में दिए गए घटनाक्रम, विवरण, कथन को आगे बढ़ाना व उसे और विस्तार देना।
- सामग्री में दिए गए तर्कों के आधार पर या उस जैसे तर्क सोचना व पाठ जैसे पैराग्राफ बनाना।

ये मात्र उदाहरण हैं। इनके अलावा भी और बहुत प्रकार के अभ्यास आप सोच सकते हैं। सरल पाठ पर आधारित सवाल बनाने में तो बच्चों को भी मजा आएगा।

इसके अलावा कुछ और बातें भी महत्वपूर्ण हैं। व्याकरण भाषा का हिस्सा है। वह भाषा को एक ऐसा ढाँचा देता है जिसके चलते हम एक दूसरे की बात समझ पाते हैं। व्याकरण का अहसास करना,उसके नियमों को खँगालना भाषा को समझने में मदद करता है। व्याकरण के अधिकांश नियम प्रयोग करते समय उभरते हैं। हम बच्चों को पाठ के कुछ वाक्य लेकर उनमें निहित नियम पहचानने को कह सकते हैं। इस पुस्तक में भाषातत्व और व्याकरण के अंतर्गत इसी प्रकार के प्रश्न दिए गए हैं। विराम चिह्नों का प्रयोग भाषा को समृद्ध बनाता है। केवल निर्धारित परिभाषाएँ व नियम याद करना व्याकरण नहीं है, वरन् भाषा को समझने व उसकी समृद्धि के अहसास की राह में कदम है।

कक्षा 6, 7 और 8 की पुस्तकों में हमने शब्दार्थ पाठ के अंत में भी दिया गया है तथा शब्दकोश के रूप में पुस्तक के अंत में दिए हैं। हमारा विचार है कि इससे बच्चों को शब्दकोश देखना आएगा। शब्दकोश में हमने जगह–जगह रिक्त स्थान छोड़े हैं और प्रत्येक वर्ण से प्रारंभ होने वाले शब्दों के अंत में चौखाने में कुछ शब्द डाले हैं। इन शब्दों को शब्दकोश के क्रम से उन रिक्त स्थानों में भरकर इनके अर्थ लिखने हैं। आपको यह देखना है कि बच्चे यह गतिविधि नियमित रूप से करें। ये शब्द अधिकांशतः ऐसे हैं जो वे पूर्व में पढ़ चुके हैं। जिन शब्दों के अर्थ बच्चे नहीं जानते, उन्हें आप बता सकते हैं। शब्द भंडार में वृद्धि करने के लिए यह गतिविधि लाभदायक सिद्ध होगी।

एक और बात कहना आवश्यक है। जब भी हम किसी पाठ को पढ़ते हैं तो उसमें छिपे भावार्थ की समझ सबके लिए एक जैसी नहीं होती। एक ही कहानी सबको अच्छी भी नहीं लगती और उसका अर्थ भी सब एक जैसा नहीं निकालते। किंतु पढ़ने वालों की सदैव यह कोशिश होनी चाहिए कि वह न सिर्फ अपनी समझ जानें व उसे व्यक्त करें, वरन् लेखक की बात उसके नजरियें से देख पाएँ और यह जान पाएँ कि लेखक क्या कहना चाहता है। बच्चों को इस तरह के प्रयास करने के मौके देना भी आवश्यक होगा।

आपके जो भी सुझाव हों और जो नए अभ्यास आप बनाएँ उन्हें हमें लिख भेजें।

धन्यवाद।

संचालक
राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्
छत्तीसगढ़, रायपुर

7X4SHJ

कक्षा 8

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	पाठ	विधा	रचयिता	पृष्ठ
1.	नई उषा	कविता	श्री सत्यनारायण लाल	01–04
2.	एक नई शुरुआत	कहानी	सुश्री कमला चमोला	05–11
3.	अब्राहम लिंकन का पत्र	पत्र	श्री अब्राहम लिंकन	12–15
4.	पचराही	निबंध	लेखक मंडल	16–20
5.	इब्राहीम गार्दी	कहानी	श्री वृंदावन लाल वर्मा	21–27
6.	जो मैं नहीं बन सका	व्यंग्य	डॉ. ज्ञान चतुर्वेदी	28–34
7.	दीदी की डायरी	डायरी	संकलित	35–40
8.	एक साँस आजादी के	कविता	डॉ. जीवन यदु	41–43
9.	साहस के पैर	कहानी	श्री जयशंकर अवस्थी	44–48
10.	प्रवास	निबंध	श्री सालिम अली	49–55
11.	हमारा छत्तीसगढ़	कविता	श्री लखनलाल गुप्ता	56–59
12.	अपन चीज के पीरा	कहानी	संकलित	60–65
13.	विजयबेला	एकांकी	श्री जगदीश चंद्र माथुर	66–78
14.	आतिथ्य	आत्मकथा	श्री भदंत आनंद कौशल्यायन	79–84
15.	मनुज को खोज निकालो	कविता	श्री सुमित्रानंदन पंत	85–87
16.	बरसात के पानी ले भू–जल संग्रहण	निबंध	लेखक मंडल	88–92
17.	तृतीय लिंग का बोध	निबंध	लेखक मंडल	93–96
18.	ब्रज माधुरी	कविता	कविवर पद्माकर/हरिश्चंद्र/बेनी	97–100
19.	कटुक वचन मत बोल	निबंध	श्री रामेश्वर दयाल दुबे	101–105
20.	मिनी महात्मा	कहानी	श्री आलम शाह खान	106–112
21.	सिखावन	कविता	संकलित	113–117
22.	हिरोशिमा की पीड़ा	कविता	अटल बिहारी वाजपेयी	118–122
23.	शब्दकोश			123–135

पाठ 1

नई उषा

7XDNY7

– श्री सत्यनारायण लाल

प्रस्तुत कविता आज़ादी के पश्चात् देश के युवाओं को संबोधित है। दासता की कालिमा छँट चुकी है। दासता की बेड़ियों को काटने के लिए भारतीय नवयुवाओं ने असंख्य कुर्बानियाँ दी हैं। अतः आज़ादी के इन स्वर्णिम लम्हों में आज उत्तरदायित्व कुछ और अधिक है। देश की प्रगति और विकास के लिए युवा वर्ग को पहल और परिश्रम के लिए प्रतिबद्ध होना होगा। विभिन्न प्रकार की संकीर्णताओं से ऊपर उठकर अशिक्षा, अज्ञान और अन्याय के प्रति लोगों को सतर्क करते हुए एक संवेदनशील मानवीय समाज को मूर्त रूप देने के प्रयत्नों को अनवरत गति देनी पड़ेगी।

उठो, नई किरण लिए जगा रही नई उषा
उठो, उठो नए संदेश दे रही दिशा–दिशा।

खिले कमल अरुण, तरुण प्रभात मुस्करा रहा,
गगन विकास का नवीन, साज है सजा रहा।
उठो, चलो, बढ़ो, समीर शंख है बजा रहा,
भविष्य सामने खड़ा प्रशस्त पथ बना रहा।

उठो, कि सींच स्वेद से, करो धरा को उर्वरा,
कि शस्य श्यामला सदा बनी रहे वसुंधरा।
अभय चरण बढ़ें समान फूल और शूल पर,
कि हो समान स्नेह, स्वर्ण, राशि और धूल पर।

सुकर्म, ज्ञान, ज्योति से स्वदेश जगमगा उठे,
कि स्वाश्रयी समाज हो कि प्राण–प्राण गा उठे।
सुरभि मनुष्य मात्र में भरे विवेक ज्ञान की,
सहानुभूति, सख्य, सत्य, प्रेम, आत्मदान की।

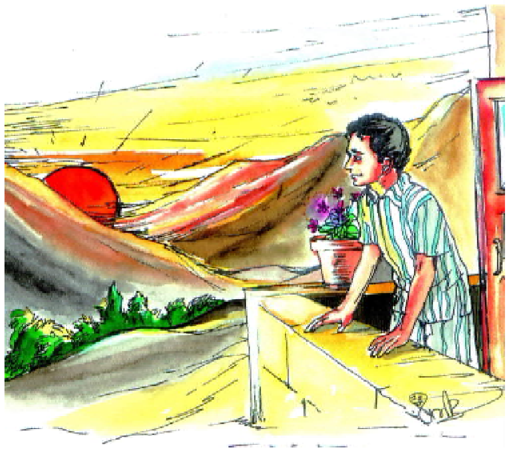

प्रवाह स्नेह का प्रत्येक प्राण में पला करे,
प्रदीप ज्ञान का प्रत्येक गेह में जला करे।
उठो, कि बीत है चली प्रमाद की महानिशा,
उठो, नई किरण लिए जगा रही नई उषा।

शब्दार्थ :– **स्वेद** – पसीना, **शस्य** – धान, अन्न, **उर्वरा** – उपजाऊ, **विस्तृत** – व्यापक, **सुकर्म** – अच्छा कार्य, **स्वाश्रयी** – स्वयं पर आश्रित, **सुरभि** – सुगंध, **सख्य**– सखा या मित्र भाव, **आत्मदान** – बलिदान, **गेह** – घर, **प्रमाद** – आलस्य, **महानिशा** – गहन रात्रि, रात्रि का मध्य भाग।

अभ्यास

पाठ से

1. नई उषा से कवि का क्या अभिप्राय है?
2. सभी मनुष्यों में किन–किन गुणों का विकास होना चाहिए?
3. कविता में कवि के 'प्राण–प्राण गा उठे' कहने का क्या आशय है ?
4. समाज को स्वाश्रयी कैसे बनाया जा सकता है?
5. नई उषा शीर्षक कविता में कवि किन–किन परिवर्तनों की ओर संकेत करता है?
6. कविता में वर्णित वसुंधरा शस्य श्यामला सदा कैसे बनी रह सकती है ? स्पष्ट कीजिए।
7. प्रमाद की महानिशा बीतने से कवि का क्या तात्पर्य है ?
8. प्रस्तुत कविता नवयुवकों के मन में किन–किन भावों का संचार कर रही है ?
9. यह कविता नवयुवकों को क्या संदेश दे रही है?

पाठ से आगे

1. कविता की इन पंक्तियों के भाव को अपने शब्दों में लिखिए–

   उठो, चलो, बढ़ो, समीर शंख है बजा रहा,
   भविष्य सामने खड़ा प्रशस्त पथ बना रहा।
   प्रवाह स्नेह का प्रत्येक प्राण में पला करे,
   प्रदीप ज्ञान का प्रत्येक गेह में जला करे।

   7XHJZU

2. उषाकाल में हमारे आस–पास के परिवेश में क्या परिवर्तन नजर आता है और हमें कैसा महसूस होता है? लिखिए।

3. स्वाश्रयी अथवा स्वनिर्भर समाज से आप क्या समझते हैं? शिक्षक से चर्चा कर इसकी विशिष्टताओं को लिखिए।

4. कवि धरा को उर्वर करने के लिए स्वेद से सींचने का आमंत्रण देता है, इसके विभिन्न तरीकों पर आपस में चर्चा कर कक्षा में प्रस्तुत कीजिए।

भाषा से

1. कविता में अरुण, प्रभात, स्वेद्, धरा, सुकर्म, शस्य जैसे शब्द आए हैं, जिन्हें हम 'तत्सम' शब्द कहते हैं। तत्सम (तत् + सम = उसके समान) आधुनिक भारतीय भाषाओं में प्रयुक्त ऐसे शब्द हैं जिनको संस्कृत से बिना कोई रूप बदले ले लिया गया है। अर्थात ये शब्द सीधे संस्कृत से आये हैं। कविता से ऐसे शब्दों का चुनाव कर उनका अर्थ अपनी भाषा में स्पष्ट करते हुए वाक्य में प्रयोग कीजिए।

2. नई किरण, नए संदेश, खिले कमल जैसे शब्द कविता की पंक्तियों में प्रयुक्त हुए हैं, जो संज्ञा अथवा सर्वनाम की विशेषता बता रहे हैं अथवा उत्पन्न कर रहे हैं, जिन्हें हम विशेषण कहते हैं । कविता में प्रयुक्त ऐसे विशेषणों को पहचान कर उनकी जगह नए विशेषणों के सार्थक प्रयोग कीजिए। जैसे –सुनहली किरण, शुभ संदेश, मुस्कुराते कमल।

3. उठो, उठो नए संदेश दे रही दिशा–दिशा।
   इस पंक्ति में 'उ एवं द' वर्ण की आवृत्ति कई बार हुई है।

   जहाँ एक ही पंक्ति में एक ही वर्ण की बार–बार आवृत्ति होती हो वहाँ अनुप्रास अलंकार होता है। इससे भाषा में प्रवाह, लय और सौंदर्य उत्पन्न होता है।

   यहाँ कविता की एक पंक्ति दी गई है। दिए गए शब्दों की सहायता से शेष तीन पंक्तियों की रचना कीजिए।

   पूर्व दिशा, सूरज, चहचहाना, पक्षी, रात, अँधेरा, खिला, किरण, बाग–बगीचे।

   जागो–जागो हुआ सवेरा।

   ....

   ....

   ....

   ....

योग्यता विस्तार

1. सुमित्रानंदन पन्त रचित 'प्रथम रश्मि' शीर्षक कविता की कुछ पंक्तियाँ नीचे दी गई हैं, पूरी कविता ढूँढ़कर पढ़िए और साथियों तथा शिक्षकों के साथ चर्चा कीजिए।

7Y6C45

प्रथम रश्मि का आना रंगिणि!
तूने कैसे पहचाना?
कहाँ–कहाँ हे बाल–विहंगिनि!
पाया तूने वह गाना?
सोयी थी तू स्वप्न नीड़ में,
पंखों के सुख में छिपकर,
ऊंघ रहे थे घूम द्वार पर,
प्रहरी–से जुगनू नाना।
शशि–किरणों से उतर–उतरकर,
भू पर कामरूप नभ–चर,
चूम नवल कलियों का मृदु–मुख,
सिखा रहे थे मुसकाना।

2. जल्दी जागकर सूर्योदय से पूर्व के दृश्य का अवलोकन कीजिए। उस समय प्रकृति में क्या–क्या घटित होता है, उस पर दस वाक्य लिखिए।

पाठ 2

एक नई शुरुआत

– सुश्री कमला चमोला

7YF85S

मनोवैज्ञानिकों और शिक्षाशास्त्रियों का यह मत है कि विद्रोही बच्चों के प्रति उपेक्षा का भाव या दण्डात्मक कार्यवाही उन्हें और अधिक उग्र बनाती है। इसके विपरीत यदि उन्हें प्रोत्साहन मिले, उनको उत्तरदायित्वपूर्ण काम सौंपा जाए तो वे सामान्य बालकों से अधिक अच्छा कार्य कर सकते हैं। कहानीकार ने इसी सिद्धांत पर प्रस्तुत कहानी की रचना की है। प्रोत्साहन पाकर और उत्तरदायित्व का भार पड़ने पर सुधीर के चरित्र में जो बदलाव आया, वही प्रस्तुत कहानी का मुख्य तथ्य है, बाल मनोविज्ञान पर आधारित यह कहानी बहुत महत्पवूर्ण भूमिका अदा करती है।

''श्रीकांत को कक्षा का मॉनीटर बनाया जाता है क्योंकि कक्षा के 85 प्रतिशत लड़कों ने उसके नाम का समर्थन किया है।'' कक्षाध्यापक शर्मा जी ने यह घोषणा की तो सभी लड़के तालियाँ बजाने लगे। कक्षा में सिर्फ सुधीर ही ऐसा लड़का था जो तिरछी आँखों से श्रीकांत को घूर रहा था।

श्रीकांत ने उसकी ओर देखा तो उसने अकड़कर गर्दन दूसरी ओर घुमा ली। श्रीकांत मुस्करा पड़ा। उसे सुधीर से ऐसे ही व्यवहार की अपेक्षा थी। उसे इस शहर में आए छह माह होने को थे। उसकी शराफत और होशियारी से सभी लड़के प्रभावित थे। पढ़ाई में भी वह अच्छा था। सभी लड़कों के साथ उसकी दोस्ती हो गई थी। एक सुधीर ही था जो उससे बात करने में भी अपनी हेठी समझता था। श्रीकांत को लगता जैसे सुधीर मन–ही–मन उससे ईर्ष्या करता है। सुधीर हद दर्जे का गुस्सैल, अक्खड़ और शरारती किस्म का लड़का था। श्रीकांत को लड़कों से पता चला था कि वह गलत सोहबत में भी पड़ गया है। सभी उससे बात करने में कतराते थे। कक्षा की लड़कियाँ तो उसकी ओर नजर उठाकर भी नहीं देखती थीं। जब पीरियड खत्म हुआ तो श्रीकांत सुधीर के पास जाकर बोला, ''तुम्हें मेरा मॉनीटर बनना पसंद नहीं आया क्या?''
''मॉनीटर बने हो, राजा नहीं– मॉनीटरी सँभालनी मुश्किल हो जाएगी तुम्हारे लिए और हाँ, मुझ पर रौब गाँठने की कोशिश भी मत करना वरना...।'' श्रीकांत को एक अप्रत्यक्ष–सी धमकी देकर सुधीर चला गया।

सुधीर का व्यवहार अजीब–सा लगा श्रीकांत को। आखिर वह इस कदर बिगड़ क्यों गया है? अब वह दसवीं कक्षा में है, समझदार है, फिर गुंडों जैसी धमकियाँ क्यों देता है? कक्षा में उसने सुमेश से सुधीर के बारे में पूछा तो सुमेश बोला, ''शरारती तो खैर सुधीर बचपन से ही था, फिर गलत संगत में भी पड़ गया। तब हम आठवीं कक्षा में थे। इसे सजा के रूप में पूरे स्कूल के सामने स्टेज पर खड़ा रखा गया। उस घटना के बाद सबने इससे बात करना कम कर दिया। सभी अध्यापक भी इसे गैर जिम्मेदार और बिगड़ा हुआ लड़का मानने लगे और फिर तो सचमुच सुधीर बिगड़ता ही गया। अब तो जैसे पूरा दादा ही बन गया है।''

सुमेश की बात सुनकर श्रीकांत सोच में डूब गया। उसे लगा सुधीर को गिरावट की इस हद तक पहुँचाने में शायद कक्षा के लड़के–लड़कियाँ और अध्यापक सभी का हाथ है। उसे सदा प्रताड़ना और डाँट ही सुनने को मिली है। प्रार्थना के समय उसे पूरे स्कूल के सामने खड़ा रखा गया। शायद इस सार्वजनिक अपमान ने ही उसका स्वभाव विद्रोही बना दिया है। अब अगर उसे जिम्मेदार लड़का मानकर काम सौंपे जाएँ, हर काम में उसका सहयोग और सलाह लेकर उसे भी अपने साथ शामिल किया जाए तो शायद वह सुधर जाए।

सुधीर के कारण श्रीकांत को मॉनीटर का काम सँभालने में बड़ी मुश्किल हो रही थी । सुधीर ऐसी हरकतें करता जिससे श्रीकांत को परेशानी हो और उसे डाँट पड़े। जब तक ब्लैक बोर्ड साफ करके श्रीकांत चॉक लेकर आता, सुधीर ब्लैक बोर्ड पर हास्यास्पद कार्टून बना देता।

अध्यापक के आने से पहले वह और उसके दो–एक साथी इस कदर शोर मचाते कि मॉनीटर यानी श्रीकांत को तगड़ी डाँट खानी पड़ती। मगर श्रीकांत ने कभी अध्यापक से सुधीर की शिकायत नहीं की।

स्कूल का वार्षिकोत्सव करीब आ रहा था। कक्षाध्यापक 'प्रायश्चित' नाटक के लिए पात्रों का चयन कर रहे थे। श्रीकांत को राणा की भूमिका के लिए चुना गया तो वह तुरंत खड़ा होकर बोला, ''सर, शक्ति सिंह की भूमिका के लिए आप सुधीर को ले लीजिए; उसकी आवाज़ में गंभीरता और गहराई है। वह यह भूमिका अच्छी तरह कर सकता है।''

''मगर...।'' अध्यापक संदेह प्रकट करने लगे तो श्रीकांत उनकी बात काटकर बोला, ''मानता हूँ कि नाटक में प्रमुख पात्र शक्ति सिंह ही है, पर उसे सुधीर पूरी निष्ठा, लगन से कर पाएगा, इसका मुझे पूरा विश्वास है सर...।'' इस तरह शक्ति सिंह की भूमिका के लिए सुधीर को चुन लिया गया। सुधीर कई वर्ष बाद स्कूल के किसी आयोजन में भाग ले रहा था। वह कृतज्ञता भरी नजरों से बीच–बीच में श्रीकांत को देख लेता था।

प्रतिदिन नाटक का अभ्यास होता था। सुधीर अब अपेक्षाकृत शांत नज़र आता था। एक दिन अभ्यास में कुछ देर हो गई। अँधेरा घिरने लगा था। अध्यापक बोले, ''श्रीकांत, अँधेरा हो रहा है, तुम लोग तो चले जाओगे पर पहले तुम लोगों को इन लड़कियों को इनके घर तक पहुँचाना होगा।''

''आप चिंता न करें सर, हम लोग इन्हें घर तक पहुँचा कर आएँगे। रीता और नंदा को मैं छोड़कर आऊँगा; वंदना और मीरा को रवि और गीता व सुप्रिया को सुधीर...।''

''क्या?'' गीता और सुप्रिया सुधीर के नाम से चौंक पड़ीं। सुप्रिया बोली, ''तुम्हारा दिमाग तो खराब नहीं है, श्रीकांत। हमें सुधीर जैसे बदमाश और बिगड़े हुए लड़के के साथ भेज रहे हो?''

''सुधीर बदमाश नहीं है,'' श्रीकांत बोला। ''मै इतने दिनों में उसे अच्छी तरह से जान गया हूँ। हर काम में उसे गैर–जिम्मेदार और बिगड़ा हुआ मानकर सभी ने उसे अलग–थलग रखा है। अब हमें उसे अपने करीब लाना है, उसमें जिम्मेदारी की भावना पैदा करनी है। गीता और सुप्रिया, तुम दोनों विश्वास रखो, सुधीर तुम्हें हम सबसे अधिक सुरक्षित ढंग से घर तक छोड़कर आएगा।''इसके बाद उसने सुधीर को आवाज लगाई –

'' सुधीर! जरा इधर आओ। हम सबको इन लड़कियों को घर तक पहुँचाने की जिम्मेदारी निभानी है। मैं रीता और सुनंदा को साथ ले जा रहा हूँ, तुम गीता और सुप्रिया को छोड़ आओ।'' श्रीकांत की बात पर सुधीर फटी–फटी आँखों से श्रीकांत को देखने लगा। श्रीकांत ने उसे इस लायक समझा, यह सोचकर उसकी आँखों में हल्की–सी नमी उतर आई, जिसे छिपाकर वह बोला, ''क्या गीता और सुप्रिया तैयार हैं?''

''हाँ–हाँ, क्यों नहीं, चलो,'' सुप्रिया मुस्कराकर बोली।

अगले दिन गीता ने श्रीकांत से हँसकर कहा, ''भई, जबर्दस्त बाडीगार्ड है सुधीर। हमें भी भीड़ से ऐसे बचाकर ले जा रहा था, जैसे हम काँच की गुड़ियाँ हों जो किसी के छूने भर से बिखर जाएँगी। सच, सुधीर का यह रूप तो हमने कल पहली बार देखा।''

श्रीकांत के होठों पर एक मुस्कान–सी आ गई। सुधीर को सुधारने के लिए उसके कदम सही दिशा में उठ रहे हैं। वार्षिकोत्सव सफल रहा और नाटक में जब सुधीर को सर्वश्रेष्ठ अभिनेता का पुरस्कार मिला तो हॉल में देर तक तालियाँ गूँजती रहीं। सुधीर के चेहरे पर संकोच भरा गर्व का भाव था।

सभी छात्र–छात्राओं को स्कूल की ओर से पिकनिक पर ले जाया जा रहा था। सभी को पंद्रह–पंद्रह रुपए जमा करने थे। श्रीकांत के पास सारे छात्र पैसा जमा करने लगे तो वह बोला, ''मुझे और भी कई काम करने हैं, तुम लोग अपने पैसे सुधीर के पास जमा करो।''

''मेरे पास?'' सुधीर चौंक पड़ा। अभी तक उसके साथ 'चोर' जैसा शब्द जुड़ा था। वह सोचने लगा, 'क्या श्रीकांत को पता नहीं कि एक बार मैं फीस के पैसे चुराते हुए पकड़ा गया था।'

''हाँ, पैसे तुम ही इकट्ठे करोगे, सुधीर,'' श्रीकांत बोला, ''बाद में वर्मा सर के पास जमा कर आना।'' श्रीकांत तो बाहर चला गया पर सुधीर हतप्रभ–सा बैठा था। खिड़की से श्रीकांत ने झाँका तो खामोश सोच में निमग्न देख, उसके होठों पर एक मुस्कान आ गई।

सुधीर का स्वभाव अब दिनोंदिन बदल रहा था। अक्खड़ता की जगह अब उसकी बातों में सौम्यता आने लगी थी। गाली–गलौज और लड़ाई भी कम हो गई थी। उसके अंदर आए इस परिवर्तन को सभी लड़के लक्ष्य कर रहे थे।

एक दिन श्रीकांत कक्षा के अपने सहपाठियों से बोला, ''आज सुधीर का जन्मदिन है; शाम को हम लोग उसे बधाई देने उसके घर चलेंगे।''

''लेकिन मेरी माँ ने तो उसके घर जाने को सख्त मना किया हुआ है,'' नीरज बोला।

''लेकिन यह तब किया था जब वह सचमुच बिगड़ा हुआ था और अब तुम सभी देख रहे हो कि वह एक अच्छा लड़का बनने के प्रयास में जुटा है। कक्षा के लड़के उसे बिगड़ा जानकर शुरू से ही उससे अलग–थलग रहे, इसी कारण वह और भी बिगड़ता गया। अब हम लोग उसके करीब जाएँगे तो उसे भी सहारा मिलेगा ऊपर उठने में।''

शाम को दरवाजे पर खट्–खट् हुई तो सुधीर ने दरवाजा खोला। बाहर श्रीकांत सहित कक्षा के 8–10 लड़कों को खड़ा देख वह सकपका गया। सभी मुस्कराकर बोले, ''जन्मदिन मुबारक हो सुधीर....।''

''लेकिन तुम लोगों को पता कैसे चला कि आज मेरा जन्मदिन है?''

सुधीर अब भी उलझन में खड़ा था। इस पर श्रीकांत बोला, ''ताड़ने वाले कयामत की नज़र रखते हैं जनाब। जब परीक्षा के लिए तुम फार्म भर रहे थे तब मैंने तुम्हारी जन्मतिथि देख ली थी। अच्छा, अब अंदर आने को भी कहोगे या बाहर ही खड़ा रखोगे?''

''ओह–आओ, आओ; अंदर आ जाओ।'' सुधीर के चेहरे से प्रसन्नता छलक रही थी। सबने तोहफे मेज पर रख दिए। तभी सुधीर की माँ आई और बोली, ''तुम लोगों ने बहुत अच्छा किया जो इसके जन्मदिन पर आए। चार–पाँच साल से इसने जन्मदिन मनाना ही छोड़ दिया था। तुम लोग बैठो, मैं पकौड़े तलती हूँ।''

''देखिए आंटी, कहीं बेसन कम न पड़ जाए, हम लोग बिना भरपेट खाए टलने वाले नहीं,'' श्रीकांत बोला तो सुधीर की माँ मुस्कराकर बोलीं, ''घबराओ मत, बहुत बेसन है।''

पकौड़े खाते हुए सभी लड़के खिलखिलाकर हँस रहे थे। सुधीर भी खुलकर बातचीत में हिस्सा ले रहा था। उसके चेहरे पर वही सौम्यता और भोलापन था जो इस उम्र के किशोरों में होता है। श्रीकांत को लगा जैसे वह सुधीर का कोई और ही रूप देख रहा है।

अगले दिन वह कक्षा में खड़े होकर शर्मा सर से बोला, ''सर, मुझे मॉनीटर बने लगभग तीन माह होने को हैं। अब जिम्मेदारी मैं सुधीर को सौंपना चाहता हूँ।''

''ठीक है, आज से सुधीर मॉनीटर होगा।'' शर्मा जी का निर्णय सुनकर सभी लड़के तालियाँ बजाने लगे। सुधीर सकुचाया–सा आँखें झुकाए बैठा था। बीच–बीच में वह कृतज्ञता भरी नजर श्रीकांत पर भी डाल रहा था, मानो कह रहा हो, ''मुझे इस ऊँचाई तक पहुँचाने में तुम्हारा ही हाथ रहा है।'' श्रीकांत भी उसकी मौन भाषा बखूबी समझ रहा था।

शब्दार्थ :– **कृतज्ञता** – किए हुए उपकार को मानने का भाव, एहसानमंदी, **हतप्रभ**–निस्तेज, कांतिहीन, आश्चर्यचकित, **कयामत**–महाप्रलय, आफत, **सोहबत**–संगति, संसर्ग, **कतराना**–किसी वस्तु या व्यक्ति को बचाकर किनारे से निकल जाना, **शरारती**–नटखट, पाजी, **प्रायश्चित**–पश्चाताप, **अक्खड़ता** – किसी का कहना न माननेवाला, उग्र, उद्धत, **बखूबी** – भली भाँति, अच्छी तरह से, पूर्ण रूप से पूर्णतया।

अभ्यास

पाठ से

1. श्रीकांत को कक्षा का मॉनीटर क्यों बनाया गया ?
2. श्रीकांत को मॉनीटर बनाए जाने पर सुधीर की क्या प्रतिक्रिया थी ?
3. श्रीकांत को कक्षा के साथी सुधीर से किस प्रकार के व्यवहार की अपेक्षा थी ?
4. सुधीर मन–ही–मन श्रीकांत से ईर्ष्या क्यों करता था ?
5. किस घटना के बाद सबने सुधीर से बात करना कम कर दिया था ?
6. सुधीर के बारे में छात्रों और शिक्षकों की क्या मान्यताएं थीं ?
7. सुधीर ऐसा कौन–सा काम करता था जिससे श्रीकांत को मॉनीटर का काम सम्हालने में परेशानी होती थी ?
8. सुमेश की बात सुनने के बाद श्रीकांत सुधीर की गिरावट के लिए किसको उत्तरदायी मानता है और क्यों ?

9. सुधीर पर विश्वास करके श्रीकांत ने उसमें क्या परिवर्तन लाया ?
10. सुधीर के व्यवहार और व्यक्तित्व में कैसे परिवर्तन आया ?
11. सुधीर की आँखों में नमीं क्यों उतर आयी ?
12. ''श्रीकांत उसकी मौन भाषा को बखूबी समझ रहा था'' पंक्ति का भाव अपने शब्दों में स्पष्ट कीजिए।
13. सुधीर का परिवर्तित रूप गीता और सुप्रिया ने कब महसूस किया ?

पाठ से आगे

7YP47F

1. किसी कक्षा कक्ष में मॉनीटर की क्या भूमिका होती है? परस्पर विचार कर लिखिए।
2. कक्षा आठवीं में सुधीर को सजा के रूप में पूरे स्कूल के सामने स्टेज पर खड़ा रखा गया! किसी भी विद्यार्थी को इस प्रकार से सार्वजनिक तौर पर सजा देना आपको कितना उचित लगता है? साथी से बातचीत कर इसके दोनों पक्षों पर अपनी समझ लिखिए।
3. पाठ में आपको एक ही कक्षा और लगभग एक उम्र के दो किशोर बच्चों सुधीर और श्रीकान्त का व्यवहार देखने को मिलता है। कौन सा व्यवहार आपको आकर्षित करता है और क्यों ?
4. सुधीर की माँ ने बताया कि सुधीर ने चार–पाँच वर्ष पूर्व से अपना जन्मदिन मनाना छोड़ दिया था। सुधीर ने ऐसा क्यों किया होगा? साथियों से वार्तालाप कर कल्पना अथवा अनुमान से इस प्रश्न का उत्तर लिखिए।
5. कल्पना कीजिये आप अगर श्रीकांत के स्थान पर कक्षा के मॉनीटर होते और आप के किसी साथी का आपके प्रति व्यवहार सुधीर की तरह होता तो आप क्या करते? उन्हें लिखिए।

भाषा से

1. पाठ में आया है कि ''सुधीर को सर्वश्रेष्ठ अभिनेता का पुरस्कार मिला' जो गुणबोधक विशेषण है। गुणबोधक विशेषणों में प्रायः एक तुलना का भाव देखने को मिलता है जैसे– श्रेष्ठ (मूल अवस्था) श्रेष्ठतर (उत्तर अवस्था अर्थात दो विशेष्यों में तुलना भाव) श्रेष्ठतम् (उत्तम अवस्था अर्थात् सभी विशेष्यों में सबसे अच्छा) उत्तर और उत्तम अवस्थाओं के बोधक संस्कृत के 'तर' और तम् प्रत्यय हैं। इन प्रत्ययों का प्रयोग करते हुए निम्नलिखित शब्दों को तीनों गुणबोधक विशेषण स्वरूप को बदलते हुए वाक्य में प्रयोग कीजिए– उच्च, वृहत्, गुरु, प्राचीन, लघु, अधिक।

7YXZ93

2. निम्नांकित तालिका में दिए गए विशेषणों से भाववाचक संज्ञाएँ बनाइए। एक उदाहरण आपके लिए हल किया गया है :–

विशेषण	भाववाचक संज्ञा
गहरा	गहराई
बड़ा	
गुरू	
सुंदर	
मधुर	

3. आपने तत्सम, तद्भव, देशज और विदेशज शब्दों के बारे में पढ़ा है। पाठ में गुस्सैल और अक्खड़ शब्द का प्रयोग हुआ है जो देशज हैं अर्थात् वैसे शब्द, जिनका जन्म स्थानीय तौर पर हुआ है। पाठ से और अपने स्थानीय परिवेश में प्रयुक्त ऐसे पाँच शब्दों को चुनकर वाक्य में प्रयोग कीजिये जो देशज शब्द कहे जाते हैं।

4. इस पाठ में निम्नलिखित मुहावरों का प्रयोग हुआ है –

   तिरछी आँखों से घूरना, बात करने में कतराना, हाथ होना, फटी–फटी आँखों से देखना। पाठ में इन मुहावरों से बने वाक्यों को तलाश कर लिखिए। फिर इन मुहावरों का अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए।

5. 'अक्खड़' विशेषण शब्द है। इसमें 'बाज़' जोड़कर 'अक्खड़बाज़' बना है। 'बाज़' का अर्थ माहिर होने के भाव से है। आप भी किन्हीं दो अन्य शब्दों में 'बाज़' जोड़कर नए शब्द बनाइए और उनका अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए।

6. इस कहानी को संक्षेप में अपने शब्दों में लिखिए।

योग्यता विस्तार

1. इस पाठ का एक छोटी सी नाटिका में रूपांतरण कर इसे विद्यालय में प्रस्तुत कीजिए।

2. 'दंड और उपेक्षा का भाव और बच्चों पर प्रभाव'' विषय पर पहले कक्षा स्तर पर और फिर विद्यालय स्तर पर वाद–विवाद प्रतियोगिता का आयोजन कर उसमें हुई चर्चा के मुख्य बिन्दुओं को लिख कर कक्षा–कक्ष में प्रदर्शित कीजिए।

7Z7VAQ

पाठ 3

अब्राहम लिंकन का पत्र

–श्री अब्राहम लिंकन

जीवन के विविध अनुभवों की कसौटी पर खरा उतरने का गुण विद्यार्थियों को विद्यालयी शिक्षा और शिक्षक के ज़रिए प्राप्त होता है। इन्हीं सोचों को प्रथम अश्वेत अमरीकी राष्ट्रपति अब्राहम लिंकन ने अपने पुत्र के शिक्षक को अपने चर्चित पत्र में लिखा है। उनकी अपेक्षा है कि उनका पुत्र उस विद्यालयी शिक्षा के जरिए जीतने के साथ हार का बोध कर सके, किताबों की मनमोहक दुनियाँ के साथ–साथ वह प्राकृतिक सौन्दर्य का बोध भी करे, वह अपने विचारों के प्रति अडिग और विश्वस्त रहे। और अंत में लिंकन की दृढ़ आस्था है कि स्कूल उसे यह सिखाए कि नकल कर के पास होने से बेहतर है फेल हो जाना। लिंकन का यह पत्र शिक्षा के सन्दर्भ में किसी राजनेता की समझ का एक ऐतिहासिक दस्तावेज है।

प्रिय गुरु जी,

मैं अपने पुत्र को शिक्षा के लिए आपके हाथों सौंप रहा हूँ। आपसे मेरी अपेक्षा यह है कि इसे ऐसी शिक्षा दें जिससे यह सच्चा इंसान बन सके।

सभी व्यक्ति न्यायप्रिय नहीं होते, और न ही सब सच बोलते हैं। यह तो मेरा बच्चा कभी–न–कभी सीख ही लेगा। पर उसे यह अवश्य सिखाएँ कि अगर दुनिया में बदमाश लोग होते हैं, तो अच्छे नेक इंसान भी होते हैं। अगर स्वार्थी राजनीतिज्ञ हैं, तो जनता के हित में काम करने वाले देशप्रेमी भी हैं। उसे यह भी सिखाएँ कि अगर दुश्मन होते हैं, तो दोस्त भी होते हैं। मुझे पता है कि इसमें समय लगेगा। परंतु हो सके तो उसे यह जरूर सिखाएँ कि मेहनत से कमाया एक पैसा भी, हराम में मिली नोटों की गड्डी से कहीं अधिक मूल्यवान होता है।

उसे हारना सिखाएँ और जीत में खुश होना भी सिखाएँ। हो सके तो उसे राग–द्वेष से दूर रखें और उसे अपनी मुसीबतों को हँसकर टालना सिखाएँ। वह जल्दी ही यह सब सीखे कि बदमाशों को आसानी से काबू में किया जा सकता है।

अगर संभव हो तो उसे किताबों की मनमोहक दुनिया में अवश्य ले जाएँ, साथ–साथ उसे प्रकृति की सुन्दरता, नीले आसमान में उड़ते आज़ाद पक्षी, सुनहरी धूप में गुनगुनाती मधुमक्खियाँ और पहाड़ के ढलानों पर खिलखिलाते जंगली फूलों की हँसी को भी निहारने दें। स्कूल में उसे सिखाएँ कि नकल करके पास होने से फेल होना बेहतर है।

चाहे सभी लोग उसे गलत कहें, परंतु वह अपने विचारों में पक्का विश्वास रखे और उन पर अडिग रहे। वह भले लोगों के साथ नेक व्यवहार करे और बदमाशों को करारा सबक सिखाए।

जब सब लोग भेड़ों की तरह एक ही रास्ते पर चल रहे हों, तो उसमें भीड़ से अलग होकर अपना रास्ता बनाने की हिम्मत हो।

उसे सिखाएँ कि वह हरेक बात को धैर्यपूर्वक सुने, फिर उसे सत्य की कसौटी पर कसे और केवल अच्छाई को ही ग्रहण करे।

अगर हो सके तो उसे दुख में भी हँसने की सीख दें।

उसे समझाएँ कि अगर रोना भी पड़े, तो उसमें कोई शर्म की बात नहीं है। वह आलोचकों को नज़रअंदाज करे और चाटुकारों से सावधान रहे। वह अपने शरीर की ताकत के बूते पर भरपूर कमाई करे, परन्तु अपनी आत्मा और अपने ईमान को कभी न बेचे। उसमें शक्ति हो कि चिल्लाती भीड़ के सामने भी खड़ा होकर, अपने सत्य के लिए जूझता रहे। आप उसे हमेशा ऐसी सीख दें कि मानव जाति पर उसकी असीम श्रद्धा बनी रहे।

मैंने अपने पत्र में बहुत कुछ लिखा है। देखें, इसमें से क्या करना संभव है।

आपका शुभेच्छु

अब्राहम लिंकन

शब्दार्थ :– **चाटुकार**–खुशामद करनेवाला, झूठी प्रशंसा करनेवाला, चापलूस, **अडिग**–जो हिले डुले नहीं, निश्चल, स्थिर, **प्रकृति**–स्वभाव, असलियत–यथार्थ, **धैर्य**–उतावला न होने का भाव, सब्र, **असीम**–सीमारहित अपरिमित।

अभ्यास

पाठ से

1. अब्राहम लिंकन कौन थे ? उन्होंने किसे पत्र लिखा ?
2. अब्राहम लिंकन ने अपने पत्र में किस तरह के व्यक्तियों के बारे में लिखा है?
3. किताबों की मनमोहक दुनिया के साथ–साथ प्रकृति की सुन्दरता को निहारने की सलाह लिंकन ने क्यों दी है?
4. अमरीकी राष्ट्रपति की स्कूल से क्या अपेक्षाएँ हैं और क्यों ?
5. अमरीकी राष्ट्रपति शिक्षक के माध्यम से अपने पुत्र को क्या–क्या सिखलाना चाहते थे?
6. प्रकृति की सुंदरता का चित्रण अब्राहम लिंकन ने किस प्रकार किया है ?
7. "नकल करके पास होने की बजाय फेल होना बेहतर है" अब्राहम लिंकन ने ऐसा क्यों कहा है? क्या आप इस कथन से सहमत हैं ?

8. मेहनत से कमाया एक पैसा भी हराम में मिली नोटों की गड्डी से कहीं अधिक मूल्यवान होता है। आशय स्पष्ट कीजिए।
9. लिंकन अपने बेटे को निम्नलिखित बातें सिखलाने के लिए गुरु जी पर ज़ोर क्यों दे रहे थे।
   क. बदमाशों को करारा जवाब देना सिखाने के लिए
   ख. भीड़ से अलग होकर रास्ता बनाने की हिम्मत के लिए
   ग. अपनी आत्मा और अपने ईमान को कभी न बेचने के लिए
   घ. चाटुकारों से सावधान रहने के लिए

पाठ से आगे

8BUZSX

1. पत्र में लिंकन ने गुरु जी से अपनी अपेक्षाएँ बताई हैं। आप की भी अपने गुरु जी से अनेक अपेक्षाएँ होंगी। उन्हें साथियों से बातचीत कर लिखिए और कक्षा में सुनाइए।
2. अपने आस पास बहुत से लोगों को आप सामान्य बातचीत में कहते सुनते हैं कि 'वह एक नेक या सच्चा इंसान है' आप अपने अनुमान, अनुभव और समझ से ऐसे लोगों की खासियत को लिखिए।
3. अब्राहम लिंकन मानते थे कि शिक्षक छात्रों को आदर्श नागरिक बना सकता है। आपके विचार से शिक्षक के अलावा और कौन से लोग हो सकते हैं जो एक छात्र को आदर्श नागरिक बन पाने में सहयोग कर सकते हैं और कैसे? विचार कर लिखिए।
4. पाठ में लिकंन ने जिन गुणों की चर्चा की है उसमें से जो गुण आपको अच्छे लगते हैं उनको शामिल करते हुए अपने मित्र को एक पत्र लिखिए। पत्र में यह भी बताइए कि वे गुण आपको अच्छे क्यों लगते हैं ?

भाषा से

8C4VUK

1. विराम चिह्न का प्रयोग :–
   सभी व्यक्ति न्यायप्रिय नहीं होते, और न ही सब सच बोलते हैं। यह तो मेरा बच्चा कभी–न–कभी सीख ही लेगा।
   ऊपर के वाक्यों में तीन तरह के अलग–अलग विराम चिह्नों का प्रयोग हुआ है–
   1. (,) अल्प विराम (Comma)– अल्प विराम का उपयोग दो वाक्य खंडो के बीच किया जाता है। पढ़ते हुए अल्प समय के लिए रुकना)
   2. (।) पूर्ण विराम, (Fullstop) –पूर्ण विराम का उपयोग वाक्य के अंत में करते हैं (पढ़ते समय वाक्य के खत्म या पूर्ण होने पर थोड़े समय के लिए रुकना।)
   3. (–) योजक चिह्न, (Hyphen) – दो शब्दों को जोड़ने के लिए।

विशेष :– आपकी पाठ्यपुस्तक के अन्य अध्यायों में कई और प्रकार के विराम चिह्नों का उल्लेख और प्रयोग हुआ है। उन्हें पहचानिए और शिक्षक की सहायता से वाक्यों में उनका प्रयोग कीजिये।

2. पाठ में इन वाक्यों को पढ़ें –

1. **किताबों** की मनमोहक दुनियाँ 2. **उड़ते** आज़ाद पक्षी 3. गुनगुनाती **मधुमक्खियाँ** 4. **बदमाशों** को आसानी से काबू में करना 5. **भेड़ों** की तरह एक ही रास्ते पर चलते रहना 6. अपने पुत्र को शिक्षा के लिए आपके **हाथों** में सौंपना। इन वाक्यों में जहाँ एक ओर किताबों, मधुमक्खियाँ, बदमाशों, भेड़ों, हाथों का प्रयोग हुआ है जिन्हें हम बहुवचन कहते हैं, वहीं दूसरी ओर अपने पुत्र, आज़ाद पक्षी, अपने पत्र का प्रयोग हुआ है जिन्हें एक वचन कहते हैं।

अर्थात् संज्ञा शब्द के जिस रूप से यह ज्ञात अथवा बोध हो कि वह एक के लिए प्रयुक्त हुआ है उन्हें एकवचन तथा एक से अधिक या अनेक के लिए प्रयुक्त हुआ हो उसे बहुवचन कहते हैं। **पुस्तक के अन्य पाठों से इसी तरह के वाक्यों का चुनाव करें, जो वचन के भेद को स्पष्ट करती हैं।**

3. इन शब्दों को शुद्ध रूप में लिखिए –

न्यायप्रीय, अडीग, दुस्मन, मूसिबत, धुप, नीहारने।

4. 'राजनीति' शब्द में 'ज्ञ' प्रत्यय लगाकर 'राजनीतिज्ञ' शब्द बना है। इसका अर्थ है 'राजनीति जाननेवाला'।

नीचे दिए हुए शब्दों में 'ज्ञ' प्रत्यय लगाकर नए शब्द बनाइए, उनके अर्थ लिखिए और वाक्यों में प्रयोग कीजिए– गणित, शास्त्र, धर्म, मर्म, अल्प।

5. जातिवाचक संज्ञाओं से भाववाचक संज्ञाएँ बनाई जाती हैं। जैसे–मनुष्य से मनुष्यता। निम्नलिखित जातिवाचक संज्ञाओं से भाववाचक संज्ञाएँ बनाइए–

पशु, देवता, गुरु, मित्र।

योग्यता विस्तार

8CDRH8

1. नेहरु जी ने अपनी पुत्री इंदिरा गाँधी को कई पत्र 'पुत्री के नाम पिता के पत्र" शीर्षक से लिखा है। उन्हें खोजकर पढ़िए और अपने साथियों के साथ उसके विषय वस्तुओं पर चर्चा कीजिए।

2. "परीक्षा में नकल करने की प्रवृति'' इस विषय पर कक्षा और विद्यालय स्तर पर वाद–विवाद प्रतियोगिता का आयोजन कीजिये और उसमें हुई संपूर्ण चर्चा को लिख कर कक्षा में प्रदर्शित कीजिए।

8CHMXV

पाठ 4

पचराही

—लेखक मंडल

जुन्ना जुग म छत्तीसगढ़ ल दक्षिण कोसल के नाव ले जाने जाय । ये बात के प्रमाण जुन्ना पोथी म मिलथे। छत्तीसगढ़ के इतिहास लिखइया मन घलो इही बात ल मानथें। छत्तीसगढ़ के भुइयाँ म जुन्ना सभ्यता अउ संस्कृति के कतको प्रमाण लुकाय हें। आज इतिहासकार अउ पुरातन सभ्यता के जानकार मन अइसन महत्तम के जघा—जमीन ल खनवा—खनवा के प्रमाण मन ल बाहिर निकालत हें। पचराही घलो अइसने प्रमाण वाले जघा आय,जिहाँ के खोदइ म मिले जिनिस मन छत्तीसगढ़ के इतिहास,सभ्यता अउ संस्कृति ल गजब जुन्ना सिद्ध करत हें।

छत्तीसगढ़ के धरती ह कला—संस्कृति बर जगजाहिर हे। इहाँ कतको ठउर म तइहा जुग के मंदिर,किला,महल खड़े हवँय। कतकोन मंदिर मन जस—के—तस हें त कतको ह खँड़हर रूप म।

राजिम, शिवरीनारायण,सिरपुर,मल्हार,ताला,रतनपुर,डीपाडीह,भोरमदेव, घटियारी,बारसूर,दंतेवाड़ा हमर कला—संस्कृति के अगासदिया आँय,जेकर अँजोर दुनिया म बगरत हे। पुरातत्व अउ कला—संस्कृति के नवा ठउर कबीरधाम जिला म 'पचराही' म मिले हे। पुरातत्व जगत म एकर गजब सोर उड़त हे।

पचराही,छत्तीसगढ़ के कबीरधाम जिला मुख्यालय ले भंडार बाजू म लगभग 45 कि.मी. दुरिहा हाँप नँदिया के तीर म मैकल पर्वत के कोरा म बसे हे। पचराही ह नानकुन गाँव आय। सियान मन कहिथें के इहाँ ले पाँच राह माने रस्ता रतनपुर,मंडला,सहसपुर,भोरमदेव (चौरागढ़), अउ लँजिका (लाँजी) बर निकले हें। तेकर सेती एकर नाँव पचराही परे हे। कतको के अइसन घलो कहना हे,के इहाँ कंकाली मंदिर रहिस हे,जेन ह देवी के रूप आय त इहाँ पचरा गीत गाए जाय,तेकर सेती एकर नाव पचराही धराय हे। पचराही के नाव चाहे कोनो अधार म धराय होय, फेर ए ह तइहा जुग म बैपार के बड़ भारी केन्द्र रहिस हे। आज इहाँ के खँड़हर ले मिले तइहा जुग के जिनिस मन अपन कहानी सँऊहें कहत हें।

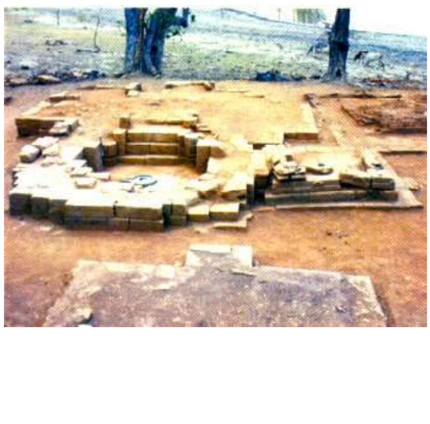

नगर बसाहट के खँड़हर के संग इहाँ वैष्णव,शाक्त,अउ जैन धरम ले जुड़े देवी–देवता के मूर्ति अउ मंदिर के जानकारी मिले हे, जेकर निर्माण 9वीं ईस्वी ले 13वीं ईस्वी सदी तक के काल म अनुमानित हे। ऐतिहासिक साहित्य म ए क्षेत्र ल पश्चिम–दक्षिण कोसल के नाव ले जाने जात रिहिस। प्रदेश बने के बाद इहाँ कुछ ऐतिहासिक ठउर म खोदइ के काम शुरू होइस। पुरातत्व खोदइ के बुता ल शासन ह महत्व दिस,जेकर ले नवा प्रदेश के पुरातात्विक अउ सांस्कृतिक तिथिक्रम के नवा झलक मिलना शुरू होगे हे।

संचालनालय,संस्कृति एवं पुरातत्व,डहर ले पचराही म बरस 2007ले खोदइ के काम सरलग चलत हे। खोदइ ले प्रागैतिहासिक काल ले मुगल काल तक के अवशेष मिले हे। पचराही स्थापत्य अउ शिल्प–कला के बहुत बड़े केन्द्र रहिस हे,जउन ल राजनीतिक स्थायित्व अउ धार्मिक समरसता के प्रतीक माने जा सकत हे।

पाछू साल के खोदइ ले दू जलीय प्राणी के जीवाश्म मिले हे, जेमा ले एक जीवाश्म 'मौलुस्का' (घोंघा) परिवार के आय अउ दूसर ह 'पाइला' परिवार के आय। वैज्ञानिक मन के मुताबिक मौलुस्का जीवाश्म के काल लगभग तेरह करोड़ बरस हे। भारत म पहिली बेर खोदइ ले ये जलीय प्राणी के जीवाश्म पचराही म मिले हे। एकर संगे – संग पचराही म आदिमानव के रहवास घलो रहे हे,जिंहा ले उत्तर पाषाण काल अउ मेसोलिथिक काल के बारीक औजार मिले हे। हाँप नँदिया के तीर,गाँव बकेला ले गजब अकन जुन्ना पथरा के औजार मिले हे, जेन ह छत्तीसगढ़ के सबले बड़का जुन्ना पथरा के औजार बनाय के जघा साबित होय हे।

गजब दिन के पाछू सोमवंशी काल म पचराही फेर अबाद होइस। इही बेरा म कंकालिन नाव के ठउर म सुरक्षा के हिसाब ले दू ठन परकोटा घेर के मंदिर के निर्माण करे गिस। इहाँ खोदइ ले ईंटा के बने मंदिर मिले हे। संग म सोमवंशी काल के पार्वती अउ कार्तिक के पट्ट (मूर्ति) घलो मिले हे।

खोदइ के पहिली ये टीला म सोमवंशी काल के दुवार – तोरन अउ कतकोन मूर्ति रखाय रहिस हे,जेन ह अब खैरागढ़ संग्रहालय म रखाय हे।

सोमवंशी काल के पाछू पचराही ह कल्चुरी काल म घलो अबाद रहिस,इहाँ ले पहिली बेर कल्चुरी राजा प्रतापमल्ल देव के सोन के सिक्का (मुद्रा) मिले हे। दू ठन सोन के सिक्का (मुद्रा) रतनदेव के हे। जाजल्लदेव अउ पृथ्वीदेव के घलो चाँदी के सिक्का मिले हें। कल्चुरी काल के पाछू पचराही उपर फणिनागवंशी राजा मन अपन कब्जा जमा लिन अउ ये ठउर म मंदिर अउ महल बनवाइन। इहाँ ले पहिली बेर फणिनागवंशी राजा कन्हरदेव के सोन के सिक्का मिले हे,संगे–संग दूसर अउ फणिनागवंशी राजा जइसे–श्रीधरदेव,जसराजदेव के घलो चाँदी के सिक्का मिले हे। एकर पाछू मुगल काल के समय तक पचराही बड़ महत्तम के बैपारिक ठिहा रहे होही, काबर के इहाँ ले मुगल काल के एक दर्जन सिक्का मिले हे।

पचराही ह 11वीं–12वीं ईस्वी म शिल्प अउ वास्तुकला के बड़ महत्तम वाले सांस्कृतिक केन्द्र अउ बड़ बैपारिक ठउर रहिस हे। मंदिर,मूर्ति के छोंड़े इहाँ आम अउ खास मनखे के बसाहट के अवशेष मिले हे। सुरक्षा दीवार के भीतरी खास मनखे के रहे के ठउर के संग इहाँ ले सोन–चाँदी अउ तामा के सिक्का मिले हे, जबके परकोटा के बाहिर आम नागरिक राहत रहिन होहीं, जिहाँ ले कुम्हार अउ लोहार मन के उपयोग के जिनिस के अवशेष अब्बड़ अकन मिले हे। इँहेच्च ले लइका मन के खेलौना, माटी के माला अउ रोज–रोज बउरे के जिनिस, जइसे लोहा,तामा के औजार अउ गाहना– गूठा मिले हे।

पचराही परिक्षेत्र के **क्रमांक 4 म** पंचायतन शैली के संगे–संग राजपुरुष,उमा–महेश्वर के बड़ सुग्घर मूर्ति मिले हे।

पचराही क्षेत्र **क्रमांक 5 म** तीन परकोटा हे,जउन ह खाल्हे के पखना के उपर लगभग 100 मीटर लंबा, 50 मीटर चाकर ईंटा के बने परदा आय। महल म उपर जाय बर बने सीढ़िया के अवशेष आजो देखब म आत हे।

पचराही म अभी तक 6 ठन मंदिर के अवशेष मिले हे,जिहाँ ले सुग्घर– सुग्घर कलात्मक मूर्ति मिलत हें।

बकेला– हाँप नँदिया के ओ पार बकेला गाँव के टीला म जैन मूर्ति के शिल्प–खंड देखे जा सकत हे, जेमा धर्मनाथ,शांतिनाथ अउ पार्श्वनाथ के खंडित मूर्ति माढ़े हे। तीरेच म बावा डोंगरी नाव के ठउर म जैन मंदिर के दुवार साखा रखाय हे,जेखर मँझोत म महावीर स्वामी के मूर्ति हे।

पचराही हमर छत्तीसगढ़ के पुरातत्व के गौरव आय। आज एकर सोर दुनिया भर म उड़त हे। सरलग खोदइ ले अउ कतको जुन्ना जिनिस मिलही,अइसे लगथे।

छत्तीसगढ़ी शब्द मन के हिन्दी अर्थ

जगजाहिर	=	विश्वप्रसिद्ध	तइहाजुग	=	प्राचीनकाल
खँड़हर	=	खंडहर	अगासदिया	=	आकाश दीप
बरगत हे	=	फैल रहा है	पुरातत्व	=	प्राचीन अवशेष
भंडार	=	उत्तर दिशा	कोरा	=	गोद
साक्त	=	शक्ति के उपासक	वैष्णव	=	विष्णु उपासक
ठउर	=	स्थान,ठिकाना	स्थापत्य	=	भवन निर्माण की कला

शिल्पकला	=	मूर्ति बनाने की कला	स्थायित्व	=	ठहराव
समरसता	=	समानता,समभाव	जीवाश्म	=	हजारों वर्षों से मिट्टी में दबे प्राणियों अथवा वनस्पतियों के अंश
मुताबिक	=	अनुसार			
मौलुस्का	=	घोंघा की प्रजाति			
परकोटा	=	चहारदीवारी	पाइला	=	सीप
पट्ट	=	पत्थर पर	वैपारिक	=	व्यापारिक
आम	=	सामान्य जन	महत्तम	=	महत्व
पंचायतन	=	मंदिर निर्माण की एक शैली	ठिहा	=	केन्द्र,नियत स्थान
			खास	=	विशिष्ट
मंडप	=	मंदिर का अग्र भाग	कलात्मक	=	कला से परिपूर्ण
मँझोत	=	मध्य,केंद्र			

अभ्यास

पाठ से

1. पचराही के नाँव पड़े के कारण बतावव।
2. पचराही म मिले अवशेष मन के संबंध कोन–कोन धरम ले हे?
3. पचराही म मिले जीवाश्म के बारे में बतावव।
4. कोन–कोन ठउर ल छत्तीसगढ़ के कला–संस्कृति के अगासदिया केहे गे हे?
5. पचराही के खोदई ले मिले जिनिस मन के सूची बनावव।

पाठ से आगे

1. पचराही तीर भोरमदेव मंदिर हे ओकर ऊपर एक नानकुन निबंध लिखव।
2. छत्तीसगढ़ में पुरातात्विक स्थान मन के सूची बनावव अउ गुरूजी से ओकर बारे में चर्चा करव।
3. जुन्ना जिनिस मन ले हमन का बात के पता लगा सकथन? ये जिनिस मन ले हमन अपन ग्यान ल कइसे बढ़ा सकबो एला बिचार के लिखव।

8D6F26

भाषा से

1. खाल्हे म लिखाए सब्द मन ल पढ़व अउ ऊँखर हिन्दी समानार्थी सब्द बतावव–नानकुन, पहिली, पाछू, उपर, सरलग।

2. ए सब्द मन ल पढ़व बैपारिक–केन्द्र, नवा–परदेस, गजब–दिन, चाकर–ईंटा, जुन्ना–जिनिस।

   उप्पर लिखाए सब्द मन जोड़ी अस दिखत हें, मने ओमन दू सबद ले बने हे। एक सब्द एमा दूसर सब्द के बिसेसता ल बतावत हे। अइसन सब्द मन जेन दूसर सब्द के बिसेसता बताथें बिसेसन (विशेषण) कहे जाथे। छत्तीसगढ़ी के अइसने सब्द मन ल खोज के (10 सब्द) लिखव।

3. पचराही ह कबीरधाम जिला के **भंडार** म हे

   छत्तीसगढ़ म लोहा अउ कोइला के **भंडार** हे।

   8CHIZI

   उप्पर लिखाय वाक्य म भंडार सब्द दुनो वाक्य म हे फेर ओकर मतलब दुनो म अलग–अलग हे। पहिली भंडार के मतलब हे **दिशा**, अउ दूसर भंडार के मतलब हवय **खजाना**। छत्तीसगढ़ी अउ हिन्दी के अइसने सब्द ल खोज के लिखव।

योग्यता विस्तार

1. अपन तीर–तखार के जुन्ना अउ ऐतिहासिक महत्व के कोनो जघा के जानकारी पता करके ओकर बारे म लिखव।

2. पाठ म आए ए सब्द मन के बारे में इतिहास पढ़इया मन ले पूछ के एकर बिबरन लिखव–
   - दुवार साखा (द्वार–शाखा)
   - दुवार –तोरन
   - पंचायतन शैली

   8DFB3T

3. छत्तीसगढ़ म पचराही जइसनेच एक ठउर म नवा खोदई होहे। जेन ह नँदिया के बीचो बीच टापू असन जगहा में हावे, ओकर नाँव पता करके बरनन करव।

पाठ 5

इब्राहीम गार्दी

– श्री वृंदावन लाल वर्मा

इतिहास के सन्दर्भ से साहित्य को सरलता के साथ प्रस्तुत करने वाले प्रसिद्ध साहित्यकार श्री वृंदावन लाल वर्मा की यह कहानी अपने सन्दर्भ में व्यापक और मानवीय जीवन मूल्यों को लेकर बेहद प्रासंगिक है। मराठा सेनापति इब्राहीम गार्दी घायल अवस्था में शत्रुओं के कैद में रहने के बाद भी अपने प्राणों का भय छोड़कर उन मूल्यों और मान्यताओं पर प्रश्न खड़ा करता है जो किसी भी मज़हब और ज़बान को संकीर्णता के दायरे में बाँध कर देखने के आदी हैं। शरीर के टुकड़े – टुकड़े होते रहे पर इब्राहीम का यह बेखौफ जवाब "तौबा करें वे लोग जो कैदियों, घायलों, निहत्थों का कत्ल करते हैं'' ये उसकी इंसानी जज़्बे को दर्शाता है।

सन् 1761 में पानीपत के युद्ध में अहमदशाह अब्दाली से मराठे हार गए। मराठों का सेनापति इब्राहीम गार्दी बंदी हुआ। वह अंत तक लड़ता रहा और घायल हो जाने के कारण पकड़ लिया गया। उस युद्ध में अवध का नवाब शुजाउद्दौला अहमदशाह अब्दाली की ओर से लड़ा था। घायल इब्राहीम गार्दी को शुजाउद्दौला के टीले में, जो अफगान शाह अब्दाली की छावनी के भीतर ही था, पकड़कर रख लिया गया। अब्दाली को इब्राहीम के नाम से घृणा थी। इब्राहीम के पकड़े जाने और शुजाउद्दौला के टीले में होने का समाचार उसको मिल चुका था। इसलिए उसने इब्राहीम को अपने सामने पेश किए जाने के लिए शुजाउद्दौला के पास दूत भेजा।

शुजाउद्दौला इब्राहीम गार्दी की उपस्थिति से इंकार न कर सका।

उसने अनुरोध किया, ''इब्राहीम काफी घायल हो गया है, अच्छा हो जाने पर पेश कर दूँगा।''

दूत ने अपने शाह का आग्रह प्रकट किया, ''उसको हर हालत में इसी पल जाना होगा।''

शुजाउद्दौला का प्रतिवाद क्षीण पड़ गया। फिर भी उसने कहा, ''इब्राहीम मराठों के दस हजार सिपाहियों का सेनापति था। इस समय वह घायल पड़ा हुआ है। कम–से–कम इस वक्त तो उसे नहीं बुलाना चाहिए।''

दूत नहीं माना। उसको अहमदशाह अब्दाली का स्पष्ट आदेश था। शुजाउद्दौला को उस आदेश का पालन करना पड़ा।

अहमदशाह के सामने इब्राहीम गार्दी लाया गया।

अहमदशाह ने पूछा, ''तुम मराठों की दस हजार पलटनों के जनरल थे?''

उसने उत्तर दिया, ''हाँ, था।''

''पहले तुम फ्रांसीसियों के नौकर थे?''

''जी हाँ।''

''फिर हैदराबाद के निज़ाम के यहाँ नौकर हुए?''

''सही है।''

''तुमने निज़ाम की नौकरी क्यों छोड़ दी?''

''क्योंकि निज़ाम के रवैये को मैंने अपने उसूल के खिलाफ पाया।''

''तुमने फिरंगी ज़बान भी पढ़ी है?''

''जी हाँ।''

''मुसलमान होकर फिरंगी ज़बान पढ़ी ? फिर मराठों की नौकरी की? खैर, अब तक जो कुछ तुमने किया, उस पर तुमको तौबा करनी चाहिए। तुमको शर्म आनी चाहिए।'' घाव की परवाह न करते हुए इब्राहीम बोला, ''तौबा और शर्म! आप क्या कहते हैं, अफगान शाह? आपके देश में अपने मुल्क से मुहब्बत करने और उस पर जान देनेवालों को क्या तौबा करनी पड़ती है? और क्या उसके लिए सर नीचा करना पड़ता है?''

''जानते हो तुम इस वक्त किसके सामने हो और किससे बात कर रहे हो ?'' अहमदशाह ने कठोर वाणी में कहा।

''जानता हूँ। और न भी जानता होता तो जान जाता। पर यह यकीन है कि आप खुदा के फरिश्ते नहीं हैं।''

''इतनी बड़ी फतह के बाद मैं गुस्से को अपने पास नहीं आने देना चाहता। मुझे ताज्जुब है, मुसलमान होकर तुमने अपनी जिंदगी को इस तरह बिगाड़ा।''

''तब आप यह जानते ही नहीं हैं कि मुसलमान कहते किसको हैं। जो अपने मुल्क के साथ गद्दारी करे, जो अपने मुल्क को बरबाद करनेवाले परदेशियों का साथ दे, वह मुसलमान नहीं।''

''मुझको मालूम हुआ है कि तुम फिरंगियों के कायल रहे हो। उनकी शागिर्दी में ही तुमने यह सब सीखा है। क्यों ? क्या तुम नमाज़ पढ़ते हो?''

''हमेशा, पाँचों वक्त।''

अहमदशाह के चेहरे पर व्यंग्य भरी मुस्कुराहट आई और आँखों में क्रूरता। बोला, ''फिरंगी या मराठी ज़बान में नमाज़ पढ़ते होगे।''

इब्राहीम ने घावों की पीड़ा दबाते हुए कहा, ''खुदा अरबी, फारसी या पश्तो ज़बान को ही समझता है क्या? वह मराठी या फ्रांसीसी नहीं जानता? क्या खुदा राम नहीं है और क्या राम और रहीम अलग–अलग हैं?''

अहमदशाह का चेहरा क्रोध से तमतमा उठा। बोला, ''क्या कुफ्र बकता है? तौबा करो, नहीं तो टुकड़े–टुकड़े कर दिए जाओगे।''

''मेरे इस तन के टुकड़े हो जाने से रूह के टुकड़े तो होंगे नहीं।'' इब्राहीम ने शान्त किन्तु दृढ़ स्वर में कहा।

घायल इब्राहीम के ठंडे स्वर से अहमदशाह की क्रूरता कुछ कम हुई। एक क्षण सोचने के बाद बोला, ''अच्छा, हम तुमको तौबा करने के लिए वक्त देते हैं। तौबा कर लो तो हम तुमको छोड़ देंगे। अपनी फौज में नौकरी भी देंगे। तुम फिरंगी तरीके पर कुछ दस्ते तैयार करना।''

कराह को दबाते हुए इब्राहीम के ओठों पर झीनी हँसी आई। अहमदशाह की उस खिलवाड़ को इब्राहीम समाप्त करना चाहता था। उसने कहा, ''अगर छूट जाऊँ तो पूना में ही फिर पलटनें तैयार करूँ और फिर इसी पानीपत के मैदान में उन अरमानों को निकालूँ जिनको निकाल न पाया और जो मेरे सीने में धधक रहे हैं।''

''अब समझ में आ गया तुम असल में बुतपरस्त हो।''

''जरूर हूँ, लेकिन मैं ऐसे बुत को पूजता हूँ जो दिल में बसा हुआ है और ख्याल में मीठा है। जिन बुतों को बहुत–से लोग पूजते हैं, और आप भी, मैं उनको नहीं पूजता।''

''हम भी? खबरदार।''

''हाँ, आप भी। हर तंबू के सामने मरे हुए सिपाहियों के सरों के ढेर के इर्द–गिर्द जो आपके पठान और रुहेले सिपाही नाच–नाचकर जश्न मना रहे हैं, वह सब क्या है? क्या वह बुतपरस्ती नहीं?''

''हूँ, तुम बदज़बान भी हो। तुम्हारा भी वही हाल किया जाएगा, जो तुम्हारे सदाशिवराव भाऊ का हुआ है।''

चकित इब्राहीम के मुँह से निकल पड़ा, ''क्यों, उनका क्या हुआ?''

उत्तर मिला, ''मार दिया गया, सर काट लिया गया।''

''उफ़'', घायल इब्राहीम ने दोनों हाथों से सर थामकर कहा।

अब्दाली को उसकी पीड़ा रुची। बोला, ''तुम लोगों का खूबसूरत छोकरा विश्वास राव भी मारा गया।''

इब्राहीम की बुझती हुई आँखों के सामने और भी अँधेरा छा गया। उसने कुपित स्वर में कहा, ''विश्वास राव! मेरे मुल्क का ताज़, मेरे सिपाहियों के हौसलों का ताज़। उफ़!''

इब्राहीम गिर पड़ा।

अहमदशाह उसके तड़पने पर प्रसन्न था। उसकी निर्ममता ने सोचा, ''शहीदी को जीत लिया।''

इब्राहीम ज़रा–सा उठकर भरभराते हुए स्वर में बोला, ''पानी।''

अब्दाली कड़का, ''पहले तौबा कर।''

''तौबा करें वे लोग जो कैदियों, घायलों, निहत्थों का कत्ल करते हैं।''

अब्दाली से नहीं सहा गया। इब्राहीम भी नहीं सह पा रहा था।

अब्दाली ने उसके टुकड़े–टुकड़े करके वध करने की आज्ञा दी।

एक अंग कटने पर इब्राहीम की चीख में से निकला, ''मेरे ईमान पर पहली नियाज़।'' दूसरे पर क्षीण स्वर में निकला, ''हम हिंदू–मुसलमानों की मिट्टी से ऐसे सूरमा पैदा होंगे, जो वहशियों और ज़ालिमों का नामोनिशान मिटा देंगे।''

और फिर अंत में मराठों के सेनापति इब्राहीम खाँ गार्दी के मुँह से केवल एक शब्द निकला, 'अल्लाह'।

शब्दार्थ :– **बुतपरस्त–** मूर्तिपूजक, **शागिर्दी**–शिष्यत्व, **कुफ्र**–इस्लाम मत से भिन्न या अन्य मत, नास्तिक, **तौबा करना**–पश्चाताप, प्रयाश्चित, **ताज्जुब**–आश्चर्य, विस्मय, **फिरंगी**–अंग्रेज, **जबान**–भाषा, **इर्दगिर्द**–आसपास, **नियाज**–इच्छा, कांक्षा, प्रयोजन, जरूरत, **बदजबान**–बुरा बोलनेवाला, कटूभाषी, **निर्मम**–ममता का अभाव, हृदयहीन, **अमानत**–धरोहर, **जालिम**–जो बहुत ही अन्यायपूर्ण या निर्दयता का व्यवहार करता हो जुल्म करनेवाला, अत्याचारी।

अभ्यास

पाठ से

1. इब्राहीम गार्दी कौन था? उसने किस युद्ध में भाग लिया था?
2. अहमदशाह अब्दाली इब्राहीम से घृणा क्यों करता था?
3. पानीपत का युद्ध कब हुआ था और किस–किस के बीच हुआ था?
4. शुजाउद्दौला इब्राहीम को अब्दाली के समक्ष उसी समय क्यों नहीं पेश करना चाहता था?
5. किसके मारे जाने पर इब्राहीम गार्दी दुखी हुआ ?
6. इब्राहिम गार्दी के नजरिए में मुसलमान कौन है ?
7. अपने जख्मों की पीड़ा को दबाते हुए इब्राहिम ने अब्दाली को क्या उत्तर दिया ?
8. अब्दाली ने इब्राहीम गार्दी को क्या सज़ा दी ?
9. कहानी से वाक्य चुनकर लिखिए जिनसे इस्लाम धर्म की विशेषताएँ प्रकट होती हों।
10. यदि अपनी जान बचाने के लिए इब्राहीम तौबा कर लेता तो आप उसके संबंध में क्या राय बनाते?
11. इब्राहीम गार्दी के गुणों को शीर्षकों के रुप में लिखिए।
12. किसने कहा? किससे कहा?
    क. ''इस समय वह घायल पड़ा है?''
    ख. ''मुसलमान होकर फ़िरंगी जबान पढ़ी। फ़िर मराठों की नौकरी की।''
    ग. ''जो अपने मुल्क को बरबाद करनेवाले परदेशियों का साथ दे वह मुसलमान नहीं।''
    घ. ''मेरे इस तन के टुकड़े हो जाने से रूह के टुकड़े तो होंगे नहीं।''
    ङ. ''हम हिंदू–मुसलमानों की मिट्टी से ऐसे सूरमा पैदा होंगे, जो वहशियों और ज़ालिमों का नामोनिशान मिटा देंगे।''

पाठ से आगे

8DY374

1. इस पाठ में इस्लाम धर्म का उल्लेख है। आप, सभी धर्मों के उन पहलुओं को आपस में चर्चा कर लिखिए जो सभी में समान रूप से पाए जाते हैं।

2. मराठों के सेनापति इब्राहीम के जीवन के वे कौन–कौन से पहलू हैं जो उन्हें धर्म की सभी सीमाओं से ऊपर उठाकर एक नेक इंसान के रूप में प्रतिष्ठित करते हैं? चर्चा कर लिखिए।
3. धर्म / मज़हब / पंथ का वास्तविक स्वरूप कभी भी हमारी राष्ट्रीयता में बाधक नहीं है। इस विषय पर आपस में विचार कर इसके पक्ष और विपक्ष में तर्कों को लिखिए।
4. इस पाठ में इस्लाम धर्म के दो नज़रिये आपको पढ़ने और समझने को मिलते हैं, वे क्या है? दोनों में से कौन सा नज़रिया महत्वपूर्ण जान पड़ता है और क्यों? मित्रों से चर्चा कर लिखिए।

भाषा से

1. पाठ से लिए गए निम्नलिखित समानार्थी शब्दों के परस्पर जोड़े बनाइए –

विदेशी या गोरा	पेश	फौजी	पड़ाव	नफ़रत
हाज़िर करना	पलटन	छावनी	घृणा	कमज़ोर
शरीर	मूर्ति	फिरंगी	क्षीण	हत्या
बुत	आज्ञा	जश्न	अरमान	कत्ल
आदेश	तन	इच्छा	उत्सव	

2. पाठ में बहुत से विदेशज शब्दों के प्रयोग हुए हैं। इनका हिंदी में समान अर्थ देने वाले शब्दों को लिखिए–तौबा, मुल्क, फ़तह, यकीन, ज़बान, शागिर्दी, शर्म, वक्त, अरमान, बुतपरस्त, बदज़बान, वहशी, ज़ालिम।
3. एक विचार को पूर्ण रूप से प्रकट करने वाला शब्द–समूह वाक्य कहलाता है। इसके तीन पद हैं। उद्देश्य, विधेय और क्रिया। जैसे – अहमदशाह के सामने इब्राहीम गार्दी लाया गया। पूर्व के पाठों में भी वाक्य के बारे में चर्चा हुई है, जहाँ वाक्यों की संरचना के आधार पर वाक्यों के भेद बताए गए हैं –

   सरल वाक्य – जिस वाक्य में एक ही उद्देश्य (कर्ता) और एक ही सहायक क्रिया हो, वह साधारण वाक्य है जैसे –इब्राहीम गार्दी मराठों का सेनापति था।

   मिश्र वाक्य किसी विषय पर पूर्ण विचार प्रकट करने के लिए कई साधारण वाक्यों को मिलाकर एक वाक्य की रचना करनी पड़ती है। इन वाक्यों में एक मुख्य या प्रधान उपवाक्य और एक अथवा अधिक आश्रित उपवाक्य होते हैं, जो मुख्य उपवाक्य की पुष्टि, समर्थन, स्पष्टता या विस्तार के लिए आते हैं। जैसे 'तब आप जानते ही नहीं हैं, कि मुसलमान कहते किसको हैं। जो अपने मुल्क के साथ गद्दारी करे जो अपने मुल्क को बर्बाद करने वाले परदेशियों का साथ दे, वह मुसलमान नहीं।'

8E7Y8R

संयुक्त वाक्य में दो से अधिक साधारण वाक्य 'पर, किन्तु, और, या' इत्यादि से जुड़े होते हैं। जैसे–अहमदशाह के चेहरे पर व्यंग्य भरी मुस्कुराहट आई और आँखों में क्रूरता। **पाठ में आए इसी तरह के सरल, मिश्र व संयुक्त वाक्यों की पहचान कीजिए।**

4. पाठ में हम देखते हैं कि अब्दाली और इब्राहीम के बीच के बातचीत में काफ़ी सवाल हैं–
   - तुमने निज़ाम की नौकरी क्यों छोड़ दी ?
   - जानते हो इस वक्त तुम किसके सामने हो और किससे बात कर रहे हो ?
   - तुमने फ़िरंगी ज़बान भी पढ़ी है ?
   - क्या खुदा राम नहीं है और क्या राम और रहीम अलग–अलग हैं ?

   उपर्युक्त वाक्यों को पढ़ने से स्पष्ट होता है कि प्रश्न वाचक वाक्य हम कैसे बनाते हैं। (जिस वाक्य में कोई प्रश्न पूछा गया हो अथवा प्रश्न पूछने का भाव हो तथा अंत में प्रश्न वाचक चिह्न (?) का प्रयोग हो।) इन वाक्यों में क्या, कब, क्यों कहाँ, कब आदि शब्दों का प्रयोग होता है।

   पाठ से प्रश्न वाचक वाक्यों को खोज कर लिखिए साथ ही कुछ साधारण वाक्यों का चुनाव कर प्रश्नवाचक वाक्यों का निर्माण कीजिए।
5. 'धर्म की कट्टरता हानिकारक है'– इस विषय पर बीस वाक्यों का एक निबंध लिखिए।
6. इस पाठ में लगे उद्धरण चिह्नों–वाले (" ") चार वाक्यों को लिखिए। यह भी लिखिए कि उक्त चिह्न कब और कहाँ लगाए जाते हैं?

योग्यता विस्तार

1. पानीपत कहाँ है? इतिहास में इस स्थान का क्या महत्व है ? इस विषय पर समूह चर्चा कर अपने–अपने विचार लिखिए और कक्षा में सुनाइए।
2. ऐतिहासिक विषय पर आधारित श्री हरि कृष्ण प्रेमी की एकांकी, राखी की लाज, और डॉ. रामकुमार वर्मा की एकांकी दीपदान जैसी रचनाएँ खोज कर पढ़िए।
3. 'राखी की लाज' शीर्षक एकांकी (रचनाकार– श्री हरिकृष्ण प्रेमी) खोजकर पढ़िए। तथा उस एकांकी में मेवाड़ की महारानी और बादशाह हुमायूँ के धर्म संबंधी विचारों पर कक्षा में चर्चा कीजिए।

8EGUAE

8EQQC2

पाठ 6

जो मैं नहीं बन सका

– डॉ. ज्ञान चतुर्वेदी

एक किशोर मन में उम्मीदों की असीम उड़ान होती है। वह अपने परिवेश में जो कुछ होते हुए देखता है बिना किसी विशेष तर्क के उसकी ओर आकर्षित होता है, उसे अधिक जानना, समझना और सहेजना चाहता है, उन कार्यों या घटनाओं के अनुभव प्रक्रिया से गुज़रना चाहता है या कहें कि उसकी अनुभूति प्राप्त करना चाहता है। यह पाठ 'जो मैं बन नहीं सका' इन्हीं तरह की अनुभूतियों से गुज़रने की ललक और उससे बनती समझ को रखती हुई एक व्यंग्य रचना है। लेखक ने अपने किशोर जीवन की कई घटनाओं का उल्लेख किया है हास्य तो अवश्य पैदा होता है पर उन पेशों की विवशताओं या दायरों का संकेत करते हुए जिससे उन पेशों के प्रति अपने लगाव के टूटने का सत्य भी बयान करते चलता है।

मैं आज एक डॉक्टर हूँ तथा लेखक भी, परंतु बचपन में मैं न तो डॉक्टर बनना चाहता था, न ही लेखक। बचपन में मैं न जाने क्या–क्या बनना चाहता था। आज मैं आपको बचपन की उन अजीब तथा मज़ेदार इच्छाओं के विषय में बताऊँगा।

मुझे जहाँ तक याद आता है, सबसे पहले जिस व्यक्ति से मैं बुरी तरह प्रभावित हुआ था, वह एक पेंटर था। हमारे गाँव की एकमात्र फट्टा टॉकीज़ नई–नई खुली थी और लंबी ज़ुल्फोंवाले गाँव के नौजवान गेटकीपर बन गए थे। मैं तब कक्षा पाँच का विद्यार्थी था। मैंने अपने पिद्दी जीवन की पहली टॉकीज़ देखी थी और मैं उसका दीवाना हो गया था। मैं स्कूल से भागकर टॉकीज़ पर घंटों खड़ा रहता और नई फिल्म के बोर्ड बनते देखता रहता। तब मैं गेटकीपर के अलावा जिस हस्ती पर कुर्बान था वह फिल्म का बोर्ड बनाने वाला पेंटर था। फिल्म हर दो–तीन दिन में बदल जाती थी, सो पेंटर लगभग प्रतिदिन वहाँ बैठा पोस्टर बनाता रहता था। मैं उसकी किस्मत पर रश्क करता और सोचता कि मैं भी बस जीवन भर बोर्ड बनाऊँगा। क्या मस्त जीवन है! बोर्ड बनाओ और दिन भर टॉकीज़ पर रहो। परंतु बाद में मैंने उसी पेंटर को टॉकीज़ के मैनेजर के सामने दस रुपए एडवांस के लिए गिड़गिड़ाते देखा, तो उस दिन से मेरा भ्रम उसके विषय में टूट गया। मैंने तय किया कि मैं पेंटर नहीं बनूँगा। तब तक यूँ भी मेरी नज़र गेटकीपरी के भव्य धंधे पर पड़ चुकी थी।

मुझे लगता कि ज़िंदगी तो बस गेटकीपर की है, शेष मनुष्य तो पशुओं–सा जीवन जी रहे हैं। गेटकीपर की भी क्या शान है! तीनों शो मुफ्त फिल्म देख रहे हैं। मुझे यह बात किसी ईश्वरीय वरदान की भाँति लगती थी कि कोई मनुष्य तीनों शो में रोज़ फिल्म देखे। मैंने तय कर

लिया कि मैं जीवन में गेटकीपर बनकर ही रहूँगा। इधर मेरी पढ़ाई चौपट हो रही थी, उधर मैं फटेहाल–सा बनकर स्थानीय लक्ष्मी टॉकीज़ के मैनेजर से मिल रहा था। उस बेचारे ने मुझे अनाथ समझकर, शामवाले शो के लिए गेटकीपर रख लिया। दूसरे ही दिन जिस आदमी का पहला टिकट मुझे फाड़ने का अवसर मिला, वे और कोई नहीं स्वयं मेरे पूज्य पिता जी थे। उन दिनों पिताओं के बीच, अपने बच्चों को पीटने का जबरदस्त रिवाज़ था। पिता जी ने मुझे मारा, मैनेजर को मारा, दो गेटकीपरों को मारा और मारते–मारते मुझे घर लाए। टॉकीज़ का मैनेजर मेरे पिता जी से क्षमा माँगता रहा कि उसे पता नहीं था कि यह सरकारी अस्पताल के डॉक्टर साहब का लड़का था।

इसी चक्कर में मैं छठी की छमाही परीक्षा में फेल हो गया, जिसके उपलक्ष्य में मेरी और पिटाई हुई। इस प्रकार गेटकीपरी का भूत मेरे सर से उतरा।

मैंने अब पढ़ाई में मन लगाया। धीरे–धीरे मुझे लगने लगा कि मुझे हेडमास्टर बनना चाहिए। दुनिया का सबसे रुआबदार धंधा यही लगने लगा मुझे। अधिक काम भी नहीं। बस, सुबह–सुबह प्रार्थना के समय मूँछ लगाकर बच्चों के सामने खड़े हो जाओ, प्रार्थना के बाद दस–बारह बच्चों को तबीयत से झापड़ रसीद करो और अपने कमरे में बैठ जाओ। बीच–बीच में कमरे से निकलकर पुनः इस–उस क्लास में घुसकर बच्चों पर आघात हमले करो और शाम की घण्टी बजते ही छाता उठाकर, रास्ते के बच्चों को मारते हुए घर चले जाओ। मैंने तय कर लिया कि ज़िन्दगी में हेडमास्टर ही बनना है। यही सोचकर मैं नकली मूँछों की तलाश में बाज़ार घूमने लगा और पिटाई की प्रैक्टिस अपने छोटे भाइयों पर करने लगा। परंतु इसी बीच एक बार ज़िला शिक्षा अधिकारी ने अपने दौरे पर हम लोगों के सामने ही हेडमास्टर साहब को ऐसा फटकारा कि मेरा सारा उत्साह भंग हो गया।

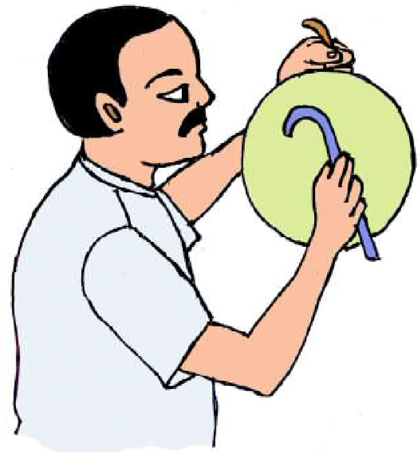

मैंने अब हेडमास्टर बनने की इच्छा त्यागी और स्कूल की घंटी बजानेवाला चपरासी बनने की ठानी। मैंने सोचा कि अब तक मैं बेकार ही भटकता रहा। अरे, जिंदगी तो इसकी है। जब चाहा घंटी बजाकर स्कूल की छुट्टी करा दी। बाकी टाइम बैठकर बीड़ी या सिगरेट पीते रहे। मुझे लगता कि इस धंधे में बीड़ी पीने से कोई नहीं रोकेगा, वरना तो एक बार मैं छिपकर पिता जी की सिगरेट पी रहा था, तो उन्होंने पकड़ लिया था और मारपीट पर उतर आए थे। तब मेरी समझ में नहीं आया था कि जो चीज़ पिता जी इतने शौक से पीते थे, उसे हमें मना क्यों करते थे। (वह तो बाद में पिता जी को दिल का दौरा पड़ा तब सिगरेट की हानियाँ समझ में आईं।) खैर, तो मैं इतने लाभों को देखते हुए घंटी

बजानेवाला चपरासी होना चाहता था। परंतु एक दिन मैंने देखा कि घंटीवाले को नौकरी से निकाल दिया गया क्योंकि उसकी नौकरी बीस वर्ष के बाद भी कच्ची थी और उसकी जगह एक नया आदमी आ गया जो हेडमास्टर साहब के घर मुफ्त में पानी भरा करता था। बड़ा रोया वह, पर किसी ने न सुनी उसकी। मेरा एक और सपना टूटा।

मुझे तब लगने लगा कि यदि मैं पहलवान होता, तो ऐसे अन्याय करनेवालों की चटनी बना देता। परंतु मैं बहुत ही दुबला–पतला था उन दिनों। हम पिकनिक पर जाते तो मैं बनियान या कमीज़ पहनकर ही नदी में नहाने के लिए उतर जाता क्योंकि मेरी सींकिया काठी को देखकर मित्र हँसते थे। फिर भी मैंने शरीर बनाने की तरफ कोई ध्यान न दिया होता यदि तभी मेरे दादा जी गाँव से न आए होते। वे अँग्रेजों के समय के अड़ियल, रिटायर्ड पुलिस ऑफिसर थे। उनके कहने से मैंने सुबह–सुबह चने खाकर दौड़ने की ठानी। अफवाह यह थी कि ऐसा करने से भी व्यक्तित्व पहलवान हो जाता है। मैं दो दिन तो ठीक–ठाक दौड़ लिया। तीसरे दिन एक मरियल–सा, परंतु फुर्तीला कुत्ता मेरे पीछे दौड़ने लगा। उसने मुझसे प्रेरणा ली या उसके दादा जी भी पुलिस में जासूसी कुत्ता रहे थे, कह नहीं सकता। मैं कुत्ते से बचने के लिए उस दिन बहुत दौड़ा और शायद और दौड़ता रहता यदि सड़क से सटा हुआ वह गड्ढा न होता। कुत्ता कुछ मजाकिया भी था। वह गड्ढे के किनारे तक आकर मुँह बनाकर भौं–भौं करके हँसता रहा और वापस चला गया। मैं राणा साँगा की तरह यहाँ–वहाँ से घायल हो गया। लँगड़ाते हुए घर लौटने में मैंने तय किया कि पहलवानी में शरीर की तोड़फोड़ के कई अवसर रहते हैं। मैं तोड़फोड़ के खिलाफ था। मैंने पहलवान बनने का इरादा त्याग दिया।

इसी बीच गाँव में मेला लगा और उसमें एक जादूगर के खेल के बड़े चर्चे होने लगे। मैंने पहलवानी की याद में घावों पर मलहम का लेप लगाया और जादूगर का खेल देखने तंबू में घुस गया। वाह, क्या खेल था! मैंने तड़ाक से तय कर डाला कि मुझे जीवन में जादूगर ही बनना है।

बढ़िया चमकीली शेरवानी पहनकर, रंगीन छींटदार साफा लगाए वह जादूगर जादू की छड़ी पानी के गिलास पर घुमाकर चुर्रेट बोलता और पानी की चाय बन जाती। उसने चुर्रेट बोल–बोलकर कागज के नोट बनाए, लड़के को बकरा बनाया, लड़की को हवा में उड़ाया, खाली हाथ में हवा से लड्डू पैदा किया और खाली डिब्बे में से कबूतर निकाले। मैं अभिभूत हो गया। यह हुई न बात। मैं उस दिन चुर्रेट बोलता हुआ घर वापस आया। स्कूल में हेडमास्टर साहब का कमरा खाली पाकर मैंने उनकी मेज़ से चमकीली काली छड़ी उठा ली, जिसकी मार द्वारा वे बिना चुर्रेट बोले ही हम लोगों को मुर्गा बनाया करते थे। मैं छड़ी लेकर सुबह–सुबह जादूगर के तंबू पर जा पहुँचा। सोचा था कि उनसे प्रार्थना करूँगा कि मुझे भी जादू सिखा दें। जादू सीखकर मैं हेडमास्टर साहब को बकरा बनाना चाहता था। मैंने तंबू में झाँककर देखा। जादूगर अपने लड़के को डाँट रहा था कि पैसे की इस कदर तंगी है और तू लड्डू खरीदकर पैसे फूँक आया। मैले–कुचैले कपड़ों में टूटी खाट पर पड़े उस जादूगर को रुपयों के लिए रोते देखकर मैं दंग रह गया। जो शख्स कागज़ से रुपए तथा हवा से मिठाई बना लेता हो, उसकी यह दुर्दशा! मुझे वास्तविकता के इस कठोर संसार ने गहरा धक्का पहुँचाया और मेरा यह सपना भी टूटा।

इसके बाद जैसे–तैसे मैं बड़ा हुआ, तो मैंने जीवन को बहुत पास से देखा। इसके असर से मैंने कविताएँ तथा कहानियाँ लिखनी शुरू कर दीं। मैंने तय किया कि मैं लेखक बनूँगा। परन्तु आज भी जब मुझे याद आता है कि मैं बचपन में इन सबके अलावा बस ड्राइवर, हलवाई, दर्ज़ी, सड़क कूटनेवाले इंजिन का इंचार्ज, थानेदार, नौटंकी का डांसर, सर्कस का जोकर, आइसक्रीम बेचनेवाला आदि–आदि सब कुछ एक साथ बनना चाहता था तो बड़ी याद आती है अपनी किशोर उम्र की। क्या दिन थे वे भी।

शब्दार्थः– **पिद्दी**–छोटा तुच्छ, **रश्क**–किसी दूसरे को अच्छी दशा में देखकर होनेवाली जलन या कुढ़न, डाह, **कुर्बान**–बलि, निछावर, **फटेहाल**–विपन्न, **चिथड़ा**–चिथड़ा, **रूआबदार**–रौबीला, **अड़ियल**–हठी, रुकनेवाला, **तंबू**–कपड़े, टाट, कैनवास, आदि का बना हुआ वह बड़ा घर जो खंभों और खूँटों पर तना रहता है और जिसे एक स्थान से उठाकर दूसरे स्थान तक आसानी से ले जाया जा सकता है, **अभिभूत**–गहरे रूप में प्रभावित, वशीभूत।

अभ्यास

पाठ से

1. 'जो मैं नहीं बन सका' शीर्षक पाठ में लेखक की इच्छा क्या–क्या बनने की थी ?
2. पेंटर को 10 रुपए एडवांस के लिए गिड़गिड़ाते हुए देख कर लेखक के बालमन में क्या भाव उत्पन्न हुए?

3. सिनेमाघर का गेटकीपर बनने को लेकर लेखक के मन में किस प्रकार के भाव थे और क्या परिणाम हुआ ?
4. लेखक कक्षा 6वीं की अर्द्ध वार्षिक परीक्षा में फेल हो गया। उसके फेल होने के क्या कारण आपको लगते हैं ?
5. लेखक सबसे पहले किससे प्रभावित हुआ ?
6. पेंटर को देखकर लेखक के मन में किस तरह का भाव उत्पन्न हुआ ?
7. घंटी बजानेवाले को नौकरी से क्यों निकाल दिया गया ?
8. लेखक के जादूगर बनने का सपना कैसे टूट गया ?
9. प्रस्तुत पाठ में वर्णित जादूगर के दो करतब लिखिए।
10. निम्नलिखित बातें किस पद के लिए कही गई हैं–
    क. जो शख्स कागज से रुपये तथा हवा से मिठाई बना लेता हो, उसकी यह दुर्दशा।
    ख. मैं राणा साँगा की तरह यहाँ–वहाँ से घायल हो गया।
    ग. इस धंधे में बीड़ी पीने से कोई नहीं रोकेगा।
    घ. जिस आदमी का पहला टिकट मुझे फाड़ने का अवसर मिला, वे और कोई नहीं मेरे पूज्य पिता जी थे।

पाठ से आगे

8EZLDP

1. पाठ में एक स्थान पर लेखक कहते हैं कि मास्टर जी बिना चुररेट बोले ही हम लोगों को मुर्गा बनाया करते थे। आपको भी कभी शरारत करने पर सजा मिली होगी। साथियों से चर्चा कर अपने–अपने अनुभवों को लिखिए ?
2. जादू बच्चों को बहुत आकर्षित करता है और आपने कभी देखा भी होगा। जादू और जादूगर के बारे में आप अपनी समझ अनुभवों और अभिभावकों से बातचीत कर लिखिए।
3. धूम्रपान स्वास्थ्य के लिए सदैव हानिकारक है कैसे ? इसके दुष्प्रभावों के बारे में कक्षा में चर्चा कर एक विस्तृत आलेख तैयार कीजिए,।
4. छमाही परीक्षा में लेखक फेल होता है और आगे चलकर डॉक्टर बनता है। आप फेल होने को कैसे समझते हैं? क्या आपको लगता है कि किसी कक्षा में फेल हुए विद्यार्थी अपने जीवन में सफल नहीं हो सकते? इस विषय पर कक्षा में वाद–विवाद प्रतियोगिता आयोजित कर इस विषय के पक्ष और प्रतिपक्ष के विचारों को लिखकर कक्षा में प्रदर्शित कीजिए।
5. आप बस ड्राइवर, हलवाई, दर्जी, थानेदार, सर्कस का जोकर, आइसक्रीम बेचनेवाला और शिक्षक में से क्या बनना चाहेंगे? तर्कपूर्ण उत्तर दीजिए।

भाषा से

1. पाठ में विभक्ति युक्त शब्द व्यवस्थित रूप में लिखे गए हैं, जैसे – राम ने ,श्याम को, किताबों में, उसने, मुझमें, हममें से, उसके द्वारा आदि ।
2. यदि विभक्ति चिह्न संज्ञा शब्द के साथ आते हैं तो उन्हें संज्ञा शब्द से अलग लिखते हैं, जैसे – लेखक ने, व्यक्ति से, मैनेजर से, गेटकीपर का।
   - सर्वनाम शब्दों के साथ विभक्ति चिह्न को मिलाकर लिखा जाता है, जैसे – उसने, मुझमें, मैंने, आपने।
   - यदि सर्वनाम शब्दों के बाद दो विभक्ति चिह्न आते हैं तो पहला मिलाकर और दूसरा अलग कर प्रयुक्त होता है जैसे मेरे द्वारा, हममें से, आपमें से, उसके लिए आदि। पाठ में आए उपर्युक्त विभक्ति चिह्नों के आधार पर तीनों प्रकार के वाक्य प्रयोग को छाँटकर लिखिए।

8RDUU9

3. निम्नलिखित वाक्यों को ध्यान से पढ़िए –
   (अ) जिन्दगी बस उस पेंटर की है।
   (ब) जिन्दगी तो बस गेटकीपर की ही है।
   (स) मेरा यह भी सपना टूट गया।
   उपर्युक्त उदाहरण के रेखांकित शब्द अव्यय कहे जाते हैं। ये शब्द अपनी बात पर जोर देने के लिए किए जाते हैं। ऐसे शब्द जिनमें लिंग, वचन, कारक आदि के कारण कोई परिवर्तन नहीं होता, उन्हें अव्यय या अविकारी शब्द कहा जाता है। ये शब्द सदैव अपरिवर्तित रहते हैं। पाठ में प्रयुक्त ऐसे अव्यय युक्त वाक्यों को पहचान कर लिखिए।
4. डाक्टरों, पहलवानों, बच्चे, घंटे, बेटे, लड़कों, लड़कियाँ, जातियाँ, रास्तों आदि बहुवचन शब्द हैं। **अर्थात शब्द के जिस रूप से एक से अधिक पदार्थों या व्यक्तियों का बोध होता है वहाँ बहुवचन होता है।** प्रस्तुत पाठ में से ऐसे शब्दों को चुनकर लिखिए जिनका प्रयोग बहुवचन में हुआ है और इसके नियम पर शिक्षक से बात कीजिए तथा निम्नलिखित शब्दों को बहुवचन में बदलिए –
   व्यक्ति, मैं, गाँव, नौजवान, मेरा, धंधा।
5. निम्नलिखित मुहावरों का पाठ में प्रयोग हुआ है–
   चौपट होना, चटनी बनाना, सींकिया काठी, घावों पर मलहम लेप करना, पैसा फेंकना, झापड़ रसीद करना, सपना टूटना (मुहावरे भाषा को सुदृढ़, गतिशील और रुचिकर बनाते हैं। मोटे तौर पर हम कह सकते हैं कि जिस सुगठित शब्द–समूह से लक्षणाजन्य और कभी–कभी व्यंजनाजन्य कुछ विशिष्ट अर्थ निकलते हैं, उसे मुहावरा कहते हैं। कई बार यह व्यंग्यात्मक भी होते हैं।) पाठ में प्रयुक्त अन्य मुहावरो को ढूँढ़कर लिखिए और स्वयं से नए वाक्य निर्माण कर उनका प्रयोग कीजिए।

6. निम्नलिखित वाक्यों में रिक्त स्थानों की पूर्ति कोष्ठक में दिए गए शब्दों से उचित शब्द छाँटकर कीजिए–

   क. मेरे गाँव में ––––––– लगा है। (मेला, मैला)

   ख. जादूगर ––––––– स्वभाव का व्यक्ति था। (शांति, शांत)

   ग. मोहन का अपने पड़ोसी के साथ ––––––– है। (बेर, बैर)

   घ. हर व्यक्ति ––––––– में जी रहा है। (चिता, चिंता)

   ङ. आशा के ––––––– आ गए हैं। (पिता जी, माता जी)

7. नीचे दिए गए संज्ञा शब्दों में से जातिवाचक और भाववाचक संज्ञाएँ छाँटकर अलग–अलग लिखिए।

   पहलवान–पहलवानी, जासूस–जासूसी, नौकर–नौकरी, जादूगर–जादूगरी, पढ़ना–पढ़ाई, उत्साह–उत्साही, व्यक्ति–व्यक्तित्व।

8. इस पाठ में एक वाक्य है– "मैं कुत्ते से बचने के लिए उस दिन बहुत दौड़ा **और** शायद **और** दौड़ता रहता यदि रास्ते से सटा हुआ वह गड्ढा न होता।" इस वाक्य में 'और' शब्द का दो बार प्रयोग हुआ है। इनके अर्थ अलग–अलग हैं। दोनों के अर्थ लिखिए और अलग–अलग अर्थों में इनका प्रयोग कीजिए।

योग्यता विस्तार

8RHQVH

1. पाठ में बहुत सारे पेशे या वृति का वर्णन किया गया है। आपके मन में भी कुछ न कुछ बनने के विचार आते होंगे। आप क्या बनना चाहते हैं और क्यों ? अपने विचार लिखकर कक्षा में सुनाइए।

2. व्यंग्य विद्या क्या होती है? वह साहित्य की अन्य विद्याओं से कैसे भिन्न और मजेदार होती है? शिक्षक व सहपाठियों से इस विषय पर बातचीत कर लिखिए और पुस्तकालय से व्यंग्य रचनाओं को खोज कर पढ़िए तथा कक्षा में सुनाइए।

3. लेखक के पिता और हेडमास्टर साहब के व्यवहार में क्या समानता आपको देखने को मिलती है। आप अपने हेडमास्टर से क्या अपेक्षा रखते हैं? साथियों से बातचीत कर लिख कर कक्षा में प्रस्तुत कीजिए।

4. यदि आपको किसी विद्यालय का हेडमास्टर बना दिया जाए, तो आप विद्यालय में क्या–क्या सुधार करेंगे? इस बारे में संक्षेप में अपने विचार लिखिए।

पाठ 7

दीदी की डायरी

– संकलित

डायरी का सामान्य सा अर्थ अपने दैनिक क्रियाकलापों को डायरी में अंकित करना है। डायरी के पढ़ने से उक्त व्यक्ति की सोच–समझ, रुचियों, मनोवृत्तियों उसके परिवेश और सन्दर्भ का पता चल पाता है। साहित्यकारों और इतिहास प्रसिद्ध व्यक्तित्व की डायरियाँ अपने उल्लेखनीय विषयवस्तु के कारण इतिहास की महत्वपूर्ण स्रोत और जानकारी के आधार बने हैं। प्रस्तुत पाठ में डायरी, साहित्य की अन्य विधाओं की तरह एक विधा है। डायरी के विषयवस्तु पाठक के लिए कैसे महत्व रखते हैं? इसकी समझ को रखना इस पर चर्चा करना और विद्यार्थियों में डायरी लेखन के प्रति चाहत पैदा करना जैसे विविध उद्देश्य अपेक्षित हैं।

गुलाब के फूल–सी नन्हीं संजू। है तो अभी छोटी, पर है बड़ी सयानी। कक्षा आठ में पढ़ती है। स्वभाव से हँसमुख है। खूब हँसती–हँसाती है। चुटकुले सुनाए तो हँसी के फव्वारे छूटने लग जाते हैं।

संजू को किताबें पढ़ने का शौक है–कहानी, कविता, कॉमिक्स आदि। यह शौक उसे माँ की देखा–देखी लगा है। संजू चाहे कक्षा में अच्छे नंबर लाए या जन्मदिन मनाए, उसे उपहार मिलता है पुस्तक का। फलतः उसके घर में छोटा–सा पुस्तकालय बन गया है। स्कूल में भी उसे चटपटी पुस्तक की तलाश रहती है।

अभी पिछले दिनों संजू ने गांधी साहित्य पढ़ा। बापू के '**सत्य के प्रयोग**' पुस्तक उसे बहुत पसंद आई। बापू ने इन प्रयोगों को अपनी डायरी में लिखा था। संजू ने सोचा, वह भी डायरी लिखेगी। माँ ने भी उसका हौसला बढ़ाया। पिता जी को पता चला तो बहुत प्रसन्न हुए। उन्होंने उसे एक सुंदर डायरी ला दी।

अब संजू मुश्किल में पड़ गई। वह कैसे शुरू करे ? तभी उसे याद आया, उसकी दीदी भी तो डायरी लिखती हैं। उसने दीदी को अपनी इच्छा बताई। दीदी ने हौसला बढ़ाते हुए कहा–

''यह तो कोई कठिन बात नहीं। बस, रात को मन लगाकर बैठ जाओ। दिनभर की सारी घटनाएँ याद करो और वैसी–की–वैसी लिख दो। इसे प्रतिदिन लिखते रहना जरूरी है।'' संजू ने हठ करते हुए कहा–''दीदी, आपकी डायरी दिखा दो ना। थोड़ा–सा पढ़कर लौटा दूँगी।'' दीदी पहले तो हिचकिचाई, फिर बात मान ली। संजू ने दीदी की डायरी के जो पृष्ठ पढ़े, वे नीचे दिए जा रहे हैं।

1 जनवरी, 08

कॉलेज में कक्षा के सामने ठक्–ठक् होती रही। कारीगर पत्थर तराश रहे थे। एक छोटी–सी छेनी से वे पत्थर में फूल–पत्तियाँ उकेर रहे थे।

2 जनवरी, 08

आज सुबह शीला के घर गई । वह स्नानघर में थी। अकेली बैठी–बैठी क्या करती ? पत्रिका का पुराना रंगीन पृष्ठ नजर आया। उसी को उलटने–पलटने लगी। इसमें एक चुटकुला बहुत मजेदार था। हँसते–हँसते लोट–पोट हो गई। अभी डायरी लिखते समय भी हँसी नहीं रुक रही है। फिर से पढ़ पाऊँ इसलिए लिख लेती हूँ इसे–

खरीददार–(मालिक से) इस भैंस की तो एक आँख खराब है, फिर इस भैंस के सात हजार क्यों माँग रहे हो?

मालिक–भैंस से दूध लेना है या कशीदाकारी करवानी है।

माँ को कल रात से मलेरिया है। मैं तो रातभर उनके पास बैठी रही। खाना भैया ने बनाया। आलू मटर की सब्जी बनाई। गरम–गरम रोटियाँ सेंक लीं। मैंने ज्यों ही पहला कौर मुँह में डाला तो फीका लगा। नमक तो था ही नहीं। माँ ने पूछा, ''सब्जी कैसी बनी?'' मैंने कहा, ''बहुत स्वादिष्ट है।'' इधर भैया का बुरा हाल। आँखें नीची। पर इससे क्या ? नमक नहीं था तो कोई बात नहीं, बाद में डाल लिया। सोच रही थी–अगर भैया दो बार नमक डाल देते तो?

3 जनवरी, 08

पिकनिक का दिन रहा आज का। जहाँ हम गए, वह स्थान बहुत सुंदर था। हरे–हरे वृक्षों से घिरा हुआ, पानी से लबालब भरा एक सरोवर। शांत वातावरण। पक्षियों की चहचहाहट। वहाँ पहुँचकर हम छोटी–छोटी टोलियों में बँट गए। मैं तो साईदा, नीलू, विमला और संजू के साथ रही।

पहले तो वहाँ हम चारों ओर घूमते रहे। झूलों पर झूले। फिर सरोवर पर गए तो मछलियाँ देखते रहे। डूबती–उतराती, रंग–बिरंगी तथा छोटी मछलियाँ। तभी बहन जी ने बुलावा भेजा।

अब सब मैदान में आ इकट्ठे हुए। नरम–नरम घास पर बैठ गए। गुनगुनी धूप थी। बारी–बारी से हमने गाना गाया। ढोलक बजी तो नाच–गाने में रम गए सब। मंजू, जो कक्षा में चुपचाप बैठी रहती थी, आज खूब नाची। मैंने भी जादू के खेल दिखाए। खेल में जिसने जो फल चाहा, उसे उसी फल की खुशबू सुँघा दी। जो मिठाई माँगी वही चखा दी। कितना आनंद आया, लिख न सकूँगी। मेरे जादू के करिश्मे को देख अंजू तो मचल ही गई। बोली–''एक–दो जादू तो मुझे भी सिखा दो, दीदी। मैं भी विज्ञान के ऐसे दूसरे खेल सीखूँगी।'' मन करता है पिकनिक के दिन बार–बार आएँ।

संजू ने डायरी के दो–तीन पन्ने उलट दिए।

8 जनवरी, 08

आज रविवार था। कहीं आने–जाने की इच्छा तो थी नहीं। माँ ने चाट बनाई थी। जमकर नाश्ता किया। चाय की चुस्कियाँ लीं और फिर सुबह–सुबह ही पढ़ने बैठ गई। सोचा वह पुस्तक ही पढ़ डालूँ जो कल पुस्तकालय से लाई थी। नाम तो बड़ा अजीब था– तोतो चान। एक जापानी लड़की की कहानी है। बड़ी मजेदार। जिस स्कूल में वह पढ़ती थी वह रेल के छह डिब्बों में चलता था। जो जहाँ चाहे बैठे। जो चाहे पढ़े। शिक्षक का कोई डर नहीं। पूरी आजादी। तोतो चान एक मनमौजी लड़की थी जिसे अपनी शरारत के कारण कई स्कूल बदलने पड़े। वह यहाँ रेल के डिब्बेवाले स्कूल में जम गई। उसका जीवन बदल गया। मुझे यह पुस्तक बहुत अच्छी लगी। सोचती हूँ– क्या हमें भी पढ़ने की ऐसी आजादी मिल सकती है।

9 जनवरी, 08

आज का पूरा दिन उदासी में बीता। माँ ने मुझे बार–बार टोका। उदासी का कारण जानना चाहा। पर मैं कुछ बोल न पाई। क्या बताऊँ, वह मेरी सहेली नीलू है न, कल से पढ़ने नहीं जाएगी। एक महीने बाद यह गाँव ही छूट जाएगा, उससे। उम्र तो मेरी जितनी ही है, पर घरवाले उसके हाथ पीले करके ही दम लेंगे। मुझे मिली तो गले लगकर रोने लगी। कहती थी–"बहिन, पढ़ने का बेहद मन है। पर, क्या करूँ, कोई मेरी बात सुनता ही नहीं।"

नीलू कक्षा में अव्वल आती थी। खेलने–कूदने में भी किसी से कम न थी। एक ही प्रश्न रह–रहकर मेरे मन में उठ रहा है। क्या लड़कियों को पढ़ने का पूरा–पूरा अवसर नहीं मिलना चाहिए? दुनिया भर की लड़कियाँ आज क्या–क्या करतब दिखा रही हैं। हम हैं कि चौके–चूल्हे के चक्कर से किसी तरह उबर नहीं पातीं। मुझे तो नीलू पर भी गुस्सा आता है। आखिर कब तक अपनी इच्छाओं का गला दबाती रहेगी? मैं तो यह स्थिति कदापि.........!

10 जनवरी, 08

स्कूल जाने के लिए समय पर घर से निकली। तपाक से छींक हुई। रिक्शेवाले ने छींका था। दादी माँ ने आवाज लगाई–"बिटिया, आज स्कूल न जाओ। सामने की छींक है।" मेरा मन भी मैला हो गया था। एक पल सोचा, रिक्शा लौटा दूँ। तभी याद आया, आज तो हमारी कक्षा को अभिनय करना था जिसकी मैं प्रमुख पात्र थी, उससे तो मेरा अत्यंत लगाव है। "जो होगा सो हो जाएगा" हिम्मत करके चल ही दी। अभिनय में मैंने भी भाग लिया।

हमारा अभिनय सभी ने सराहा। खूब तालियाँ बजाईं। मैं तो व्यर्थ ही छींक से डर गई। उल्टे, मुझे पुरस्कार मिला; शाबाशी अलग। आगे से मैं शकुन–अपशकुनों के फेर में पड़नेवाली नहीं।

11 जनवरी, 08

आज कुछ अच्छा नहीं लग रहा है। न पढ़ाई में मजा आया, न खेल में। कोई डाँट–डपट भी नहीं हुई। कभी–कभी सोचती हूँ, सब लोग लड़कियों को ही क्यों डाँटते हैं?

दीदी की डायरी से संजू को आधार मिल गया। उसने भी कल से डायरी लिखने का संकल्प ले लिया।

शब्दार्थ :– **कॉमिक्स** – कार्टून वाली कहानी की किताब, **हौसला** – किसी काम को करने की आनंदपूर्ण इच्छा, उत्कंठा, लालसा, **हिचकिचाहट**– आगा–पीछा सोचना, संकोच, **तराशना**– काट–छाँट, बनावट, रचना प्रकार, **कशीदाकारी**– कढ़ाई करने की क्रिया, **अत्यंत**–बहुत अधिक, बेहद, अतिशय, हद से ज्यादा, **अव्वल**–उत्तम, श्रेष्ठ।

अभ्यास

पाठ से

1. दीदी की डायरी संजू ने क्यों पढ़ी ?
2. संजू की दीदी किस चुटकुले को पढ़कर लोट–पोट हो गई थीं ?
3. संजू की दीदी ने पिकनिक में क्या–क्या करतब दिखाए ?
4. संजू की दीदी के मन में लड़कियों की शिक्षा के विषय में क्या विचार आए ?
5. संजू ने साहित्य की कौन सी पुस्तक पढ़ी और वह पुस्तक उसे क्यों पसंद आई?
6. रिक्शावाले की छींक का संजू पर क्या असर हुआ ?
7. नन्ही संजू को अपनी सहेली पर गुस्सा क्यों आया ?
8. संजू को तोतोचान के व्यक्तित्व के कौन–कौन से पहलू मजेदार लगे और वह मन में क्या सोचती है?
9. संजू के पूरे दिन उदासी में बीतने के क्या कारण थे?

पाठ से आगे

1. आपके माँ–पापा और शिक्षक आपको बहुत से कार्यों के लिए प्रोत्साहित करते हैं, जिसके कारण आपके जीवन में परिवर्तन होता है। उन अनुभवों को कक्षा में परस्पर चर्चा कर लिखिए ?
2. हमारे समाज में लड़कियों को पढ़ने और उच्च कक्षाओं तक शिक्षा को जारी रखते हुए आगे बढ़ने का कितना अवसर मिल पता है। समूह में चर्चा कर उत्तर लिखिए।
3. क्या हमें शकुन–अपशकुन जैसी मान्यताओं पर विश्वास करना चाहिए? इन मान्यताओं को स्वीकार करने के कारणों पर साथियों व अभिभावकों से चर्चा कर अपनी समझ को लिखिए।
4. आप अपने विद्यालय और तोतोचान के विद्यालय में क्या फर्क महसूस करते हैं? अपने अनुभव को संक्षेप में लिखिए।

8S6HZ7

5. डायरी के बारे में आपने सुना होगा, इसमें हम क्या–क्या लिखते हैं साथियों से बातचीत कर लिखिए साथ ही इसमें लिखी गई सामग्री क्या लेखन के अन्य तरीकों से भिन्न होती है? इस पर शिक्षक के सहयोग से चर्चा कर अपनी समझ को नोट कर कक्षा में सुनाइए।

6. लड़कियों को पढ़ने की आज़ादी न होने पर क्या हानि होगी ?

7. डायरी लिखने के क्या लाभ हो सकते हैं ?

भाषा से

1. पाठ में हँसाना, बढ़ाना, खेलाना, सेकवाना आदि क्रिया पद प्रयुक्त हुए हैं। जिन्हें हम प्रेरणार्थक क्रिया कहते हैं अर्थात वह क्रिया जिससे यह सूचित होता है कि कार्य किसी की प्रेरणा से या किसी दूसरे के द्वारा कराई जा रही है – जैसे गिर (ना) गिराना गिरवाना, चल (ना) चलाना चलवाना, चढ़(ना) चढ़ाना चढ़वाना आदि

8SFE1U

   - अधिकतर धातुओं से दो–दो प्रेरणार्थक क्रिया बनती हैं, पहली प्रेरणार्थक में 'आ' और दूसरी में 'वा' जुड़ता है। आप खेलना, बोलना, खाना, रोना देना जैसे क्रिया पदों से प्रेरणार्थक क्रिया बनाइए।

2. प्रतिदिन, दिनोदिन, यथासंभव, यथासमय जैसे शब्द का प्रयोग पाठ में हुआ है, जो सामासिक पद हैं। समास के भेद की दृष्टि से ये उदाहरण अव्ययी भाव समास के हैं। इस समास में पहला पद (पूर्व पद) प्रधान होता है और पूरा पद अव्यय होता है। इस समस्त पद का रूप किसी भी लिंग, वचन आदि के कारण नहीं बदलता है। अव्ययीभाव समास में समस्त पद 'अव्यय' बन जाता है, उसका रूप कभी नहीं बदलता है। इसके साथ विभक्ति चिह्न भी नहीं लगता।

   पाठ में प्रयुक्त अव्ययी भाव समास के पाँच उदाहरण दीजिए।

3. पाठ में डूबती–उतराती, नाच–गाना, जाने–अनजाने, खेलने–कूदने, चौके–चूल्हे आदि इस तरह के योजक चिह्नों से जुड़े युग्म शब्द आए हैं, जो द्वन्द्व समास के उदाहरण हैं। विग्रह करने पर इनका अर्थ क्रम से डूबना और उतराना, नाचना और गाना है। इन शब्द युग्मों में दोनों ही पद प्रधान होते है, कोई भी गौण नहीं होता। इन्हें द्वन्द्व समास कहते हैं। पुस्तक से इस समास के दस उदाहरणों को ढूँढ़कर लिखिए और उनका समास विग्रह कीजिए।

4. इस पाठ में एक वाक्य आया है– कॉलेज में कक्षा के सामने ठक्–ठक् होती रही। ठक्–ठक् ध्वन्यात्मक शब्द है। किसी वस्तु पर जब हम दूसरी वस्तु से प्रहार करते हैं तो 'ठक्' जैसी आवाज़ होती है। इसी तरह की आवाज करने वाले शब्दों को 'ध्वन्यात्मक शब्द' कहते हैं।

   आप भी चार अन्य ध्वन्यात्मक शब्दों का अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए।

5. रामदयाल ने एक वाक्य लिखा – ''मैं प्रतिरोज़ श्रुतिलेख लिखता हूँ।" इस वाक्य में क्या अशुद्धि है?'' उसका कारण लिखिए और वाक्य शुद्ध करके लिखिए।

6. **नीचे लिखे वाक्यों को पढ़िए–**

   क. मैं तो **रातभर** उनके पास बैठी रही।

   ख. मुझे आपसे **इतना–भर** कहना है।

7. इन दोनों वाक्यों में **'भर'** शब्द का प्रयोग हुआ है। यह निपात सूचक शब्द है। पूर्व के पाठ में आपने इस विषय में पढ़ा है। दिए गए दोनों वाक्यों में इसका अर्थ अलग–अलग है। इनके अर्थों पर विचार कीजिए और लिखिए।

योग्यता विस्तार

1. आप अपने साथियों के साथ पिकनिक पर गए होंगे। पिकनिक पर जाने की योजना बनाने से लेकर पिकनिक से प्राप्त आनन्द, खुशी साथियों के सहयोग और समन्वय आदि से प्राप्त अनुभव को डायरी में लिखने का प्रयास कीजिए।
2. अपने विद्यालय में कक्षा नवीं के साथियों से हिंदी की पाठ्यपुस्तक मांगकर "अपूर्व अनुभव" शीर्षक संस्मरण को पढ़कर आपस में चर्चा कीजिए कि पढ़ने में आपको क्या मजेदार लगा।
3. बापू ने 'सत्य के प्रयोग' नामक पुस्तक के कुछ अंश डायरी के रूप में लिखे हैं। इस पुस्तक को खोजकर पढ़िए।
4. कक्षा में एक–एक दिन का क्रियाकलाप हर विद्यार्थी सुनाए।
5. साहित्यकारों और राजनेताओं ने खूब सारी डायरियाँ लिखी हैं, उन सभी के नामों की सूची अपने शिक्षकों और साथियों के सहयोग से बनाइए।

8SPA3H

पाठ 8

एक साँस आजादी के

–डॉ. जीवन यदु

जिनगी म आजादी के बड़ महत्तम हे। मनखे भर नइ,भलुक सबो परानी आजादी के हवा म साँस लेवइ ल पसंद करथें। गुलामी के बरा–सोंहारी ले आजादी के सुक्खा रोटी ह जादा गुरतुर लगथे। ये छत्तीसगढ़ी कविता म कवि अइसनेच किसिम के भाव ल परगट करे हे।

जीयत–जागत मनखे बर जे धरम बरोबर होथे।
एक साँस आजादी के, सौ जनम बरोबर होथे।

जेकर चेथी म, जूड़ा कस माड़े रथे गुलामी,
जेन जोहारे बइरी मन ल, घोलंड के लामालामी,
नाँव ले जादा, जग म ओकर होथे ग बदनामी,
अइसन मनखे के जिनगी बेसरम बरोबर होथे।

लहू के नदिया तउँर निकलथे, बीर ह जतके बेरा,
सुरुज निकलथे मेंट के करिया बादरवाला घेरा,
उजियारी ले तभे उसलथे अँधियारी के डेरा,
सबे परानी बर आजादी करम बरोबर होथे।

जेला नइ हे आजादी के एकोकनी चिन्हारी,
पर के कोठा के बइला मन चरथे ओकर बारी,
आजादी के बासी आगू बिरथा सोनहा थारी,
सोन के पिंजरा म आजादी भरम बरोबर होथे।

माढ़े पानी ह नइ गावय खलबल–खलबल गाना,
बिना नहर उपजाय न बाँधा खेत म एको दाना,
अपन गोड़ के बँधना छोरय ओला मिलय ठिकाना,
आजादी ह सब बिकास के मरम बरोबर होथे।

छत्तीसगढ़ी शब्द मन के हिन्दी अर्थ

जुड़ा	=	बैलगाड़ी का जुआ	जोहारे	=	प्रणाम करे
उसलथे	=	उठ जाते हैं	चिन्हारी	=	पहचान
चेथी	=	गरदन के पीछे का भाग	घोलंड के	=	लोट करके
एकोकनी	=	तनिक भी	कोठा	=	गौशाला
सोनहा	=	सुनहरा	माढ़े	=	रखा हुआ
गोड़	=	पैर			

अभ्यास

पाठ से

1. आजादी के एक साँस काकर बरोबर होथे?
2. अँधियारी के डेरा कब उसलथे?
3. ''माढ़े पानी ह नइ गावय खलबल–खलबल गाना'' कवि के अइसे कहे के मतलब का हे?
4. ''लहू के तरिया ल तउँर'' के कोन निकलथे।
5. संसार म कोन मनखे के बदनामी होथे?
6. कवि ह आजादी ल जम्मो विकास के जर काबर कहे हे?

पाठ से आगे

8T826S

1. आजादी ह सब मनखे बर करम बरोबर आय ऐ बात ल फरियारे बर कक्षा में दू दल बनाके चर्चा करव।
2. आजादी हमन ल अगर आज तक नइ मिले होतिस त हमर दसा कइसे रहितिस ए बात के कल्पना करके लिखव।
3. घर म तुमला आजादी मिलही त तुमन का–का करहू चर्चा करव।
4. आजादी के लड़ई म कतको झन ल फाँसी हो गिस। कतको झन ल जेल म बाँध दे गिस खोज के लिखव कतका झन के नाँव ल तुमन जान पाएव जेन मन ल अंग्रेज मन फाँसी अउ जेल के सजा दीस। अइसे तालिका बना के लिखव –

फाँसी के सजा पाइन	जेल के सजा पाइन
1.	1. ....
2.	2. ....
3.	3. ....

भाषा से

1. ये पाठ म कई ठन मुहावरा मन बहुत नवा ढ़ंग ले अपन बात रखत दिखथे। जब कवि बहुत समर्थ होथे त अपन भाषा ले अपन नवाँ मुहावरा गढ़ लेथे। जीवन यदु छत्तीसगढ़ी के अइसनेहे कवि आयँ। ऊँखर भाषा के प्रयोग ल देखव–

   8TGX8F

   - बइरी मन ल घोलंड के लामालामी जोहारना
   - लहू के नदिया तउँर के निकलना
   - उजियारी ले अँधियारी के डेरा उसेलना
   - पर के कोठा के बइला
   - माढ़े पानी खलबल –खलबल गाना नइ गावय
   - अपन गोड़ के बंधना छोरना।

   मुहावरा मन जेन लिखाए हे ओखर ले दूसर अर्थ ल बताथें । अब उप्पर लिखाय परयोग मन के सही अर्थ आरो करके लिखव। एमा अपन गुरुजी या अउ कखरो मदत ले जा सकथे।
2. छत्तीसगढ़ी के 'होथे' शब्द के खड़ी बोली म अर्थ हे– 'होता है।' एकर 'भूतकाल' अउ 'भविष्यत्' काल के रूप लिखव।
3. 'जेकर चेथी म जूड़ा **कस** माड़े रथे गुलामी।' मा दिए 'कस' शब्द ल जोड़ के तीन ठन वाक्य लिखव।

8TQTA3

योग्यता विस्तार

1. छत्तीसगढ़ म आजादी के आंदोलन उप्पर एक लेख लिखव।
2. छत्तीसगढ़ के स्वतंत्रता संग्राम सेनानी मन के चित्र सकेल के ओकर छोटे–छोटे जीवन परिचय लिखव जेमा– नाम, गाँव/शहर, माता पिता, शिक्षा ल शामिल करव।
3. छत्तीसगढ़ के कवि मन के देस भक्ति गीत के संग्रह करके कक्षा म सुनावव।

8TZPBQ

पाठ 9

साहस के पैर

– श्री जयशंकर अवस्थी

हमारी शारीरिक संरचना व रंग आदि प्रकृति की अनुपम देन है, हर शारीरिक बनावट की अपनी पहचान है, अपनी खासियत है। हमारी शारीरिक बनावट हमारे भावों की अभिव्यक्ति और सृजनात्मक क्षमता में आड़े नहीं आतीं, बल्कि हमें अपने कार्यों के प्रति और अधिक उत्साही बनाती हैं। इस पाठ का प्रतिनिधि चरित्र 'अचल' असावधानी के चलते रेल दुर्घटना का शिकार हो जाता है पर अपनी प्रतिबद्ध पहल से वह कक्षा को एक नयी दृष्टि, एक नया सबक देने में सफल होता है।

घंटी अभी नहीं बजी थी। कक्षा में चिल्ल–पों मची थी। लेकिन जैसे ही अचल ने प्रवेश किया, एक सन्नाटा–सा खिंच गया।

वह आगे बढ़ा। तभी एक मोटा, नाटे कद का लड़का उठा और लपककर ब्लैकबोर्ड के सामने जा खड़ा हुआ। होंठो पर मुस्कान लिए उसने कहना शुरू किया, ''दोस्तो, भूगोल के मास्टर जी आते हैं तो अपने साथ नक्शा लाते हैं। नक्शे से हमें पता चलता है कि भारत कैसा है, दुनिया कैसी है। मगर इतिहास के मास्टर जी बेचारे क्या करें? अब इस साल हमारे कोर्स में तैमूर लंग वाला अध्याय है। मुझे चिंता थी कि आखिर हम कैसे जानेंगे कि तैमूर लंग कैसा था, कैसे उठता–बैठता था, कैसे चलता था। लेकिन भगवान की दया से––––––'' और कक्षा ठहाकों, तालियों और सीटियों से गूँजने लगी।

अचल को लगा किसी ने उसके दिल को मुट्ठी में दबोचकर मसल दिया है। वह जहाँ था, वहीं खड़ा रह गया। कक्षा में शोरगुल मचा था। एक आवाज़ आई, ''अपना भाषण तो तुमने अधूरा ही छोड़ दिया, बॉस।''

लेकिन तभी घंटी बज गई और मास्टर जी आ गए। शोरगुल थम गया। सब अपनी–अपनी जगह पर जा बैठे।

मास्टर जी ने हाजरी ली। फिर उन्होंने पुकारा, ''अचल श्रीवास्तव!''

अचल चौंका; उसने खड़े होने के लिए बैसाखियाँ संभालीं। मास्टर जी कुर्सी से उठते हुए बोले, ''बैठो बेटे, बैठे रहो। यह सब कैसे हो गया? तुम्हारा पैर............'' पास आकर उन्होंने पूछा।

अचल बैसाखियों के सहारे खड़ा हो गया था। उसने जवाब देने की कोशिश की लेकिन गले में जैसे कुछ अटक गया। आँखें भर आईं।

''ओह............खैर, छोड़ो बेटे इस बात को।'' मास्टर जी द्रवित हो उठे। उन्होंने अचल की पीठ थपथपाई और वापस अपनी जगह पर आकर बोले– ''देखो, तुम लोगों का यह नया दोस्त कितने बड़े दुर्भाग्य का शिकार हुआ है। अच्छा हो कि तुम लोग इसके साथ सहानुभूति रखो।''

लेकिन मास्टर जी के इस उपदेश का कोई असर नहीं हुआ था। पीरियड खत्म होने पर ज्यों ही मास्टर जी कक्षा से निकले, धमाचौकड़ी फिर शुरू हो गई। नाटे कद का वह मोटा–सा लड़का फिर उठकर भाषण देने के अंदाज में ब्लैकबोर्ड के पास जा खड़ा हुआ था।

घंटाघर में बारह बज गए। पिता जी के खर्राटे गूँज रहे थे। माँ भी सो चुकी थीं, लेकिन अचल की आँखों में नींद नहीं थी। तभी उसका मन साल भर पहले की एक घटना में उलझ गया।

पिता जी का तबादला हो गया था। कितना खुश था अचल उस दिन। रास्ते में एक बड़े स्टेशन पर गाड़ी रुकी थी। अचल पानी लेने उतरा था। नल पर काफी भीड़ थी। जब अचल का नंबर आया तो गाड़ी ने सीटी दे दी। पिता जी घबराकर चिल्लाए, ''रहने दो अचल, अगले स्टेशन पर ले लेंगे।'' वह दौड़ा। गाड़ी रेंगने लगी थी। घबराहट में उसका हाथ डिब्बे के हैंडिल पर जमा नहीं, पैर फिसला और स्टेशन पर कुहराम मच गया।

उसके बाद क्या हुआ, अचल को याद नहीं। होश आया तो वह अस्पताल के बेड पर पड़ा था। सिरहाने माँ बैठी सिसक रही थीं। पिता जी गुमसुम खड़े थे। वह कुछ समझ नहीं पाया। फिर जब उसे पता चला कि वह एक पैर गवाँ चुका है, तो वह तड़प उठा था। सारा अस्पताल उसे चक्कर खाता–सा लगा था।

और फिर वह दिन भी आया जब अचल बैसाखियों के सहारे चलता नए स्कूल में प्रवेश लेने गया। पिता जी भी साथ थे। कितनी ही आँखें उस पर गड़ गई थीं। लड़के उसे इस तरह से देखने लगे थे जैसे वह कोई जानवर हो। गुस्से और मजबूरी से काँप उठा था वह। और अब कल उसे फिर स्कूल जाना था। फिर वही तीर जैसी फब्तियाँ, जहरीले ठहाके झेलने थे। उसे लग रहा था कि उसकी हिम्मत जवाब देती जा रही है। फिर क्या करे वह?

आखिर क्यों हँसते हैं लड़के उस पर? जरूर उन्हें कोई मज़ा मिलता होगा इससे। वह चिढ़ता है, रोता है तो वे समझते होंगे कि उन्होंने उसे दबा लिया, हरा दिया। लेकिन अगर वह चिढ़े नहीं, रोए नहीं तो? अगर वह उन्हें जता दे कि वह अपने लँगड़ेपन की कोई परवाह नहीं करता, तो उनका सारा मज़ा ही किरकिरा हो जाएगा– बल्कि क्यों न वह खुद ही अपने आप पर हँसे? अपने लँगड़ेपन पर हँसने का क्यों निमंत्रण दे उन्हें? तब वे समझ जाएँगे कि लँगड़ेपन की खिल्ली उड़ाकर उसे चिढ़ाने, सताने की कोशिश करना बेकार है; वह तो खुद ही अपनी टाँग को हँसने की चीज समझता है। उसके मुरझाए होंठों पर मुस्कान खिल उठी। फिर पता नहीं, वह कब सो गया।

वही कल वाला माहौल था। अचल अभी–अभी कक्षा के दरवाजे पर पहुँचा ही था कि कक्षा सीटियों, ठहाकों और डेस्कों की थपथपाहटों से गूँजने लगी थी, ''बा अदब! बा मुलाहिज़ा! होशियार! शहंशाह तैमूर लंग तशरीफ ला रहे हैं।'' वह मोटा, नाटा लड़का अपनी जगह पर खड़ा होकर चिल्लाया।

अचल ठिठका। कल वाली कायरता उसके अंदर सिर उठाने लगी थी। तुरंत उसने दाँत भींच लिए, फिर उसने अपने बिखरते साहस को सँजोया और मुस्कराने लगा और कक्षा के अंदर आ गया।

''अरे वाह, यह तो मुस्करा रहा है।'' एक हँसी भरी आवाज़ उभरी। ''क्यों बे! तुझे तैमूर लंग नाम पसंद आया क्या?'' मोटा लड़का बोला। कक्षा ठहाकों से गूँज उठी। अचल की हिम्मत फिर एक बार टूटने लगी। उसने बड़ी मुश्किल से अपना दिल मज़बूत किया, खुलकर मुस्कराया और बोला, ''बहुत।''

उसने देखा, कई लड़कों की आँखें आश्चर्य से फैल गई हैं। कक्षा का शोरगुल अचानक धीमा पड़ गया है। वह मोटा लड़का भी हक्का–बक्का रह गया था। वह खिसियानी–सी हँसी हँसकर बोला, ''दोस्तो! सुना? यह कहता है कि इसे 'तैमूर लंग' नाम पसंद है, बल्कि बहुत पसंद है। क्यों न इसे हम–– ।''

अचल ने उसे बात पूरी करने का मौका ही नहीं दिया। बैसाखियाँ टेकता हुआ उसके पास पहुँचा और मुस्कराकर बोला; ''नाम में आखिर रखा ही क्या है ज़नाब! तैमूर लंग कहो या अचल, रहूँगा तो वही जो हूँ। है ना?''

सारी कक्षा सन्न रह गई। अचल का उत्साह दो गुना हो गया। वह कहता रहा, ''अब देखो न, मेरा नाम है अचल। नाम के अनुसार तो मुझे अडिग, अचल रहना चाहिए। पर जरा ये बैसाखियाँ हटा दो, फिर देखो तुरंत 'सचल' न हो जाऊँ तो कहना।'' कहते–कहते वह खिलखिलाकर हँस पड़ा।

उसके कहने का अंदाज़ ऐसा था कि कई लड़के हँस पड़े। मोटा लड़का भी हँस पड़ा, पर अब किसी की हँसी में वह पहले वाला तीखापन नहीं रह गया था।

तभी घंटी बज उठी। वह अपनी सीट की तरफ बढ़ गया। बगल में बैठे लड़के ने हैरत से उसे देखा और वह पूछ बैठा, ''क्यों अचल, तुम्हें बुरा नहीं लगता कि हम लोग तुम्हें इतना चिढ़ाते हैं?''

अचल पहले तो चुप रहा, फिर एक गर्वीली मुस्कान के साथ बोला,''मैंने अपने ऊपर से गुजरती हुई ट्रेन को सहा है दोस्त! ये हल्के–फुल्के मज़ाक और फब्तियाँ भला क्या बिगाड़ पाएँगी मेरा।'' और अब उसे लग रहा था कि उसके पैर हाड़–मांस के नहीं, लकड़ी के नहीं, साहस के हैं और साहस के कभी न थकने वाले पाँवों के सहारे वह जीवन की बीहड़ राहों पर बढ़ता चला जा रहा है।

शब्दार्थः– **अडिग**–अटल, **शहंशाह**–सुल्तान, बादशाह, **हैरत**–विस्मय, आश्चर्य, **कोहराम**–हाहाकार, हंगामा, **बीहड़**–ऊँचा–नीचा, विषम, **हक्का बक्का**– आश्चर्य चकित हो जाना, **फब्तियां**– हँसी उड़ाना, ताने।

अभ्यास

पाठ से

1. अचल कौन था और वह किस प्रकार शारीरिक चुनौती का शिकार हो गया ?
2. अचल को ऐसा क्यों लगा कि किसी ने उसके दिल को मुट्ठी में दबोचकर मसल दिया हो ?
3. अचल को रात में नींद क्यों नहीं आई?
4. अचल ने कक्षा के साथियों द्वारा उसकी हँसी उड़ाने की प्रवृति का विरोध कैसे किया?
5. 'साहस के पैर' शीर्षक कहानी के माध्यम से कहानीकार पाठकों से क्या कहना चाहता है ?
6. कहानी का प्रधान चरित्र 'अचल' का व्यक्तित्व अपनी चुनौतियों के साथ हमें बेहद प्रभावित करता है। क्यों ?
7. किसने, किससे कहा?
   क. "बैठो बेटे! बैठे रहो। यह सब कैसे हो गया?"
   ख. "दोस्तो! भूगोल के मास्टर जी आते हैं तो अपने साथ नक्शा लाते हैं।"
   ग. "रहने दो अचल! अगले स्टेशन पर ले लेंगे।"
   घ. "बा अदब! बा मुलाहिज़ा! होशियार! शहंशाह तैमूर लंग तशरीफ ला रहे हैं।"
   ङ "क्यों बे, तुझे तैमूर लंग नाम पसंद आया क्या?"

पाठ से आगे

8U9KDD

1. प्रायः देखा जाता है कि अक्सर समाज में लोग एक दूसरे की कद–काठी, रूप–रंग, चाल–ढाल आदि पर व्यंग्य अथवा उपहास करते हैं। क्या आपको इस तरह का व्यवहार उचित लगता है? समूह में चर्चा कर इसका उत्तर लिखिए।
2. समावेशी शिक्षा के अंतर्गत विद्यालय में दिव्यांग बच्चे भी सामान्य बच्चों के साथ अध्ययन करते हैं उनकी समस्याओं को ध्यान में रखते हुए आप विद्यालय में किस प्रकार के भौतिक बदलाव और संसाधन की व्यवस्था करना चाहेंगे? कक्षा में साथियों और शिक्षक से चर्चा कर एक सूची तैयार कीजिए।
3. "चलती ट्रेन में चढ़ना–उतरना दुर्घटना को आमंत्रण देना है।" इस कथन पर समूह में चर्चा कीजिए एवं इससे बचने के लिए क्या–क्या सावधानियाँ अपेक्षित हैं ? लिखिए।
4. प्रायः रेलवे स्टेशन और बस अड्डों पर चेतावनी वाले स्लोगन 'दुर्घटना से देर भली' 'सावधानी हटी दुर्घटना घटी', 'सतर्क चलें सुरक्षित चलें' लिखा रहता है इन पर समूह में चर्चा कीजिए और ऐसे ही स्लोगन बनाने का प्रयास कीजिए जो लोगों का ध्यान आकर्षित करते हैं।

भाषा से

8UIGF1

1. पाठ में **तीखापन** एवं **घबराहट** शब्द आया है जो कि भाववाचक संज्ञा है। यह शब्द तीखा विशेषण में 'पन' प्रत्यय लगाने से बना है अर्थात तीखा होने का भाव। उसी तरह से घबराना क्रिया में 'आहट' प्रत्यय के योग से बना है घबराहट अर्थात घबराने का भाव इसी प्रकार इन दोनो प्रत्यय का प्रयोग करते हुए दस–दस नए शब्द बनाइए।
2. जहरीले ठहाके एवं गर्वीली मुस्कान जैसे शब्द पाठ में आए हैं, इन शब्दों में 'जहरीले' और 'गर्वीली' शब्द अपने बाद आनेवाले (ठहाके, मुस्कान) शब्द की विशेषता बता रहे हैं। अतः ये पद विशेषण हुए और जिनकी विशेषता बताई जा रही है वे विशेष्य कहे जाते हैं। आप भी विशेषण और विशेष्य के पाँच उदाहरण ढूँढ़ कर लिखिए।
3. प्रस्तुत पाठ में 'चल' धातु में 'अ' उपसर्ग लगाकर 'अचल' शब्द का प्रयोग हुआ है। जिसमें 'अ' का अर्थ नहीं या मनाही के भाव है जैसे अचल का अर्थ जो चल नहीं सकता, स्थिर, ठहरा हुआ। 'अ' उपसर्ग युक्त शब्दों जैसे (अप्रिय, अप्राप्य, अहित, अघोष, अनाथ, अरुचि, अलभ्य, असह्य) आदि के विलोम शब्द लिखिए।
4. प्रस्तुत पाठ में 'घंटाघर' शब्द का प्रयोग हुआ है। यह शब्द 'घंटा' और 'घर' दो शब्दों के मिलने से बना है। इसका अर्थ है 'घंटा का घर'। 'का' विभक्ति हटाकर यह शब्द बना है। विभक्ति चिह्न हटाकर जो सामासिक शब्द बनाए जाते हैं, वे तत्पुरुष समास कहलाते हैं। अब आप निम्नलिखित सामासिक शब्दों का विग्रह कर समास का नाम लिखिए–
   रसोईघर, राजपुत्र, राजभवन, देशसेवा, राजदरबार, विद्यासागर।
5. नीचे कुछ शब्द और उनके पर्यायवाची शब्द दिए गए हैं। इनकी सही जोड़ियाँ मिलाकर लिखिए।
   मोटा, नाटा, गरीब, बादशाह, ठिगना, स्थूल, नक्शा, पग, शहंशाह, फिक्र, मानचित्र, पैर, अचल, साहस, अडिग, हिम्मत, चिंता, निर्धन।
6. इस कहानी को संक्षेप में अपने शब्दों में लिखिए।

योग्यता विस्तार

96HPVK

1. उन दिव्यांग लोगों के बारे में जानकारियाँ एकत्र कर लिखिए जिनकी शारीरिक कमियाँ उनके सफलता के मार्ग में अवरोधक नहीं बन सकीं वरन् वे अपनी दृढ़ इच्छाशक्ति और आत्मबल से कामयाबी हासिल करने में सफल रहे।
2. अपने शिक्षक और साथियों के सहयोग से इस विषय पर वार्ता आयोजन कीजिए कि हमारा दिव्यांगजनों के साथ व्यवहार कैसा होना चाहिये? समानानुभूतिपूर्ण अथवा सहानुभूतिपूर्ण और क्यों?
3. पैरा ओलम्पिक खेल किसे कहते हैं और वे क्यों महत्वपूर्ण हैं? भारत की उपलब्धि इस खेल में विश्व स्तर पर किस प्रकार की है इसका पता अपने साथियों और अभिभावकों से चर्चा कर कीजिए।

पाठ 10

प्रवास

– श्री सालिम अली

976KX8

जहाँ कहीं भी पक्षियों के अध्ययन और अवलोकन की बात चले डॉ. सालिम की चर्चा न हो, यह संभव ही नहीं है। डॉ. सालिम एक विश्व प्रसिद्ध भारतीय पक्षी विज्ञानी थे। सालिम अली को भारत के 'बर्डमैन' के रूप में जाना जाता है। वे भारत के ऐसे पहले व्यक्ति थे, जिन्होंने भारत भर में व्यवस्थित रूप से पक्षी सर्वेक्षण का आयोजन किया और पक्षियों पर लिखी उनकी किताबों ने भारत में पक्षी–विज्ञान के विकास में काफी मदद की है। एक दस वर्ष के बालक की 'बया' पक्षी के प्रति साधारण सी जिज्ञासा ने ही बालक सालिम को पक्षी शास्त्री बना दिया। पक्षियों के सर्वेक्षण में 65 साल गुजार देने वाले इस शख्सियत को परिंदों का चलता फिरता विश्वकोष कहा जाता था। इस पाठ में स्वाभाविक रूप से प्रवासी पक्षियों के जीवन, उनके प्रवास की चुनौतियों और रोमांच को सहज रूप में प्रस्तुत किया गया है।

पक्षी विज्ञान से संबंधित जितनी विचित्र बातें हैं उनमें सबसे ज़्यादा अजीब है पक्षियों का एक देश से उड़कर दूसरे देश को जाना और फिर लौटना अर्थात् कुछ समय के लिए उनका प्रवास। यह अजीब बात अब भी रहस्य बनी हुई है। साल में दो बार, बसंत और पतझड़ में, लाखों चिड़ियाँ किसी सुनिश्चित स्थान पर पहुँचने के लिए लंबी यात्रा के लिए प्रस्थान करती हैं, कभी–कभी वे महाद्वीप और महासागर तक पार करती हैं।

ऐसा क्या है जो उन्हें इस यात्रा के लिए मज़बूर करता है? क्यों वे ऐसी खतरनाक यात्राओं के खतरे मोल लेना चाहती हैं और कैसे उन्हें पता लगता है कि किस रास्ते से होकर जाना चाहिए? इन बुनियादी सवालों का अभी तक कोई संतोषजनक उत्तर नहीं प्राप्त हो सका है। हालाँकि सावधानी से किए गए कुछ प्रयोगों और प्रवासी चिड़ियों की घेराबंदी के परिणामस्वरूप अब हमको पहले की अपेक्षा काफ़ी अधिक तथ्य ज्ञात हो चुके हैं।

चिड़ियों के इस प्रवास की खास बात यह है कि इन दोनों स्थानों के बीच उनका आवागमन बिल्कुल नियमित होता है। उनकी यात्राओं की भविष्यवाणी तक की जा सकती है जिसमें एक हफ़्ते या उससे कम का ही आगा–पीछा हो सकता है। चिड़ियाँ लौटकर उन्हीं क्षेत्रों, प्रायः उसी बाग अथवा खेत में आ जाती हैं। ये ही उनके गर्मी और जाड़े के निवास होते हैं और उनके बीच, हो सकता है, कई हज़ार मील तक का फ़ासला हो।

पहला सवाल जो दिमाग में आता है, वह यह कि कुछ प्रजातियों की ही चिड़ियाँ प्रवास के लिए क्यों जाती हैं; अन्य क्यों नहीं जातीं? जवाब हो सकता है कि उन प्रजातियों के लिए उनका जीना इस प्रवास पर ही निर्भर करता है, अन्य प्रजातियों के लिए नहीं। कुछ प्रजातियों के लिए

जीने की यह शर्त नितांत अनिवार्य न होकर सिर्फ़ मान्य होती है क्योंकि उनके कुछ सदस्य तो प्रवास पर जाते हैं और शेष वहीं बने रहते हैं। इनकी आबादी का एक भाग ही प्रतिवर्ष प्रवास पर जाता है और अन्य वहीं बने रहते हैं।

यह बात तो समझ में आती है कि कुछ चिड़ियाँ सख़्त जाड़े से घबराकर अपेक्षाकृत कम ठंडे स्थानों की ओर उड़ जाती हैं और जैसे ही गर्मी शुरू होने लगती है, लौटकर अपने देश आ जाती हैं। वे अपने देश जब आती हैं, उस समय वहाँ पेड़ों पर नई–नई कोपलें, कलियाँ और फूल निकले होते हैं और परिवार के पोषण के लिए तमाम तरह के कीड़े–मकोड़े उपलब्ध होते हैं गर्मी ख़त्म होते–होते बच्चे बड़े होकर आत्मनिर्भर हो जाते हैं और पतझड़ के बाद पहली सर्दी के पड़ते ही चिड़ियाँ प्रवास पर चल देने को तैयार हो जाती हैं। उदाहरणार्थ, रोजी पेस्टर, जो मध्य एशिया में अंडे देती हैं, भारत से मई में चली जाती हैं और अगस्त में फिर लौटकर आ जाती हैं। कुछ चिड़ियाँ ज़्यादा समय भी लेती हैं, वे मार्च में आ जाती हैं और सितंबर में लौटती हैं।

यहाँ तक तो ऐसा लगता है कि इन कठिन प्रवास यात्राओं का निश्चित महत्व है और शायद जो चिड़ियाँ प्रवास पर जाती हैं उनके लिए कुछ हद तक यह आवश्यक भी है लेकिन उलझन में डालनेवाली बात यह है कि कुछ चिड़ियाँ प्रवास पर पूर्व से पश्चिम या पश्चिम से पूर्व को लगभग उसी अक्षांश पर, लगभग उसी प्रकार के जलवायुवाले प्रदेशों में अंडे देने के लिए जाती हैं। इसके अलावा कुछ ऐसी भी चिड़ियाँ हैं जो प्रवास के नाम पर सिर्फ़ कुछ मील दूर ही जाती हैं और इसी स्थिति में यह समझ पाना मुश्किल हो जाता है कि इस प्रकार के स्थानीय प्रवास क्यों इतने आवश्यक होते हैं और उनके लिए किस प्रकार लाभप्रद हो सकते हैं। उदाहरण

के लिए मुंबई में पीलक और पतरिंगे मानसून के दौरान शहरी इलाका छोड़कर थोड़ी दूर दक्षिण के पठार या मध्य भारत की ओर चले जाते हैं और सितंबर के शुरू में ज़रूर लौट आते हैं। इस संबंध में हम सिर्फ़ इतना ही मानते हैं कि स्थानीय प्रवास के लिए, थोड़ी दूर के लिए, बड़ी संख्या में चिड़ियों का घेरा करके इनके आवागमन के बारे में सही आँकड़े न इकट्ठा कर लें, कोई सही जानकारी हो भी नहीं सकती।

अपनी इस लंबी यात्रा पर प्रस्थान करने से पहले प्रवासी चिड़ियाँ इसके लिए बाकायदा तैयारी करती हैं। वे खाना अधिक मात्रा में खाती हैं ताकि चर्बी की एक तह–सी बैठ जाए जो उनकी यात्रा में उनके शरीर को ताकत प्रदान करती रहे। कुछ चिड़ियाँ अभ्यास करना और झुंड बनाकर उड़ना सीखना शुरू कर देती हैं। प्रयोगों से पता चलता है कि सूरज निकलने और डूबने से चिड़ियों को प्रस्थान के समय का संकेत मिलता है। लंबी यात्रा में सूरज ही उन्हें कुतुबनुमा का काम देता है। अब यह विश्वास किया जाने लगा है कि चिड़ियाँ सूर्य के कोण के अनुसार ही मार्ग निर्धारित करती हैं। धुंध और कोहरा पड़ने से जब सूरज छिप जाता है तो संभव है कि चिड़ियाँ थोड़ी देर के लिए अपने रास्ते में इधर–उधर हो जाएँ पर जैसे ही कोहरा छँटने के बाद दिखाई पड़ना शुरू होता है, वे फिर अपने रास्ते पर आ जाती हैं। रास्ते में कोई निशान अगर मिले तो उसका भी ध्यान रखती जाती हैं, पर दिन में उनका पथप्रदर्शन मुख्य रूप से सूरज और रात में तारे ही करते हैं। चिड़ियाँ अक्सर छह सौ से एक हज़ार तीन सौ मीटर की ऊँचाई पर उड़ती हैं। ऐसे में छोटे निशान तो अक्सर दिखाई ही नहीं पड़ते। पर ये निशान कितने कम महत्त्व के होते हैं, इसका सबसे बड़ा सबूत यह है कि कई प्रजातियों में चिड़िया का बच्चा जब पहल पहले पहल प्रवासयात्रा पर चलता है, प्रायः अपने माँ–बाप से बिल्कुल अलग और उनसे पहले ही चल देता है। इसलिए हम यह मानने के लिए मज़बूर हैं कि जिस बोध के द्वारा वे सूरज के अनुसार रास्ता खोजती हैं, उसका विश्लेषण तो संभव नहीं है, अतः इसे सहजवृत्ति ही मानना चाहिए।

कुछ प्रजातियाँ ऐसी होती हैं जिनकी चिड़ियाँ अकेले ही प्रवास यात्रा पर चलती हैं; हालाँकि अधिकांश चिड़ियाँ छोटे या बड़े दलों में ही चलती हैं। अनेक छोटी चिड़ियाँ वैसे तो सब काम दिन में करती हैं पर प्रवास में रात को ही उड़ना पसंद करती हैं, शायद इसलिए कि रात को आक्रामकों से कम ख़तरा रहता है। छोटी चिड़ियाँ लगभग तीस किलोमीटर प्रति घंटा के हिसाब से उड़ती हैं और प्रवासी चिड़ियाँ एक दिन में औसतन आठ घंटे उड़ती हैं, इसलिए प्रवास यात्रा का एक खंड दो सौ पचास किलोमीटर से कम होना चाहिए। बड़ी चिड़ियाँ प्रायः अस्सी किलोमीटर प्रति घंटे के हिसाब से उड़ सकती हैं और इसलिए वे एक दिन में काफ़ी अधिक फ़ासला तय कर सकती हैं। समुद्रों को पार करने में चिड़ियों को लगातार काफ़ी समय तक उड़ना पड़ता है और ऐसे में बहुत से दल छत्तीस घंटे तक लगातार, बिना रुके उड़ते हैं। अक्सर दल बुरे मौसम आँधी, अंधड़ आदि में फँस जाते हैं, विशेष रूप से, जब वे ज़मीन पर उड़ रहे होते हैं। ऐसे में बहुत सी चिड़ियाँ मर जाती हैं। सारांश यह कि प्रवास यात्रा हमेशा कठिन और थकाऊ तो होती ही है, साथ ही ख़तरनाक भी होती है।

अधिकांश प्रवासी चिड़ियाँ अपना जाड़ा काटने के लिए भारत आती हैं, पर यहाँ वे प्रजनन नहीं करतीं। बहुत सी चिड़ियाँ, जो पूर्वी यूरोप में या उत्तरी और मध्य एशिया या हिमालय की

पर्वत श्रेणियों में रहती हैं, जाड़े के दिनों में भारत में आ जाती हैं। इस प्रकार, प्रवास पर जानेवाली चिड़ियों में प्रायः वे ही होती हैं जो समुद्री किनारों, नदियों और झीलों के इर्दगिर्द जुटनेवाली बत्तखें और जल में विहार करने वाली होती हैं।

प्रवासी चिड़ियों के बारे में निश्चित जानकारी इकट्‌ठी करने के बारे में इस शताब्दी के प्रारंभ से ही संसार भर में जो तरीका अधिकाधिक प्रयोग होता आया है, वह है– उनकी टाँगों में एल्यूमिनियम के छल्ले पहना देना। चिड़ियों को पकड़कर, छल्ला पहनाया जाता है, रजिस्टर में लिखा जाता है और फिर छोड़ दिया जाता है। ये छल्ले उपयुक्त नापों के बने होते हैं। उन छल्लों पर क्रम संख्या और छल्ला पहनानेवाले का पता दिया रहता है, जिसका अर्थ होता है कि जिसको भी वह चिड़िया, किसी भी स्थिति में मिले, वह उसे इसकी सूचना दे दे।

मुंबई की नेचुरल हिस्ट्री सोसाइटी इस संबंध में एक योजना चला रही है, जिसके अनुसार विभिन्न प्रवासी प्रजातियों की चिड़ियों के छल्ले पहनाने का काम भारत के विभिन्न भागों में बड़े पैमाने पर किया जा रहा है और पिछले पाँच वर्षों में उसको बहुत से ऐसे तथ्य और आँकड़े प्राप्त हुए हैं जो पहले बिल्कुल अज्ञात थे। कई जंगली बत्तखें चार हज़ार आठ सौ किलोमीटर दूर साइबेरिया में पाई गई हैं। विभिन्न प्रजातियों के दूर दूर पहुँचने और पाए जाने से संबंधित बहुत–सी उपयोगी जानकारी इकट्‌ठी होती जा रही है। छल्लों पर लिखा है, 'नेचुरल हिस्ट्री सोसायटी, मुंबई को सूचना दें, और साथ ही क्रम संख्या भी दी जाती है। पाठकों से निवेदन है कि वे इस बात को अधिकसेअधिक लोगों को बताएँ जिससे उनको मालूम हो कि अगर किसी को कोई छल्लेवाली चिड़िया मरी मिले तो उन्हें क्या करना चाहिए। इस प्रकार, जो भी सूचना एकत्र होती है, बहुमूल्य होती है और कभी भी व्यर्थ नहीं जाती। भारत में बहुत सी ऐसी चिड़ियाँ भी मिलती हैं जिनके पाँवों में विदेशों के छल्ले होते हैं। इस प्रकार प्राप्त सभी छल्ले, चाहे वे स्वदेशी हों या विदेशी, सोसायटी को भेज दिए जाने चाहिए और अगर किसी प्रकार से छल्ला भेजना संभव न हो तो छल्ले का सही नंबर, जिन परिस्थितियों में मिला, तारीख और पाने का स्थान लिखकर भेज दिया जाए। भारत में चिड़ियों के आवागमन के बारे में समुचित जानकारी इसी प्रकार के सामूहिक प्रयत्नों द्वारा इकट्‌ठी की जा सकती है।

शब्दार्थः– **रहस्य**–राज, भेद, कुतुबनुमा–दिशासूचक यंत्र, **सहजवृति**–स्वाभाविक, **फासला**–दूरी, अंतर, आवागमन–आना जाना, **नितांत**–बिलकुल, **अतिशय**–बहुत अधिक, **कोंपल**–कल्ला, कनखा, वृक्ष आदि की कोमल मुलायम नई पत्ती, **कोहरा**–कुहरा, कुहासा, धुंध, **संतोषजनक**–पर्याप्त, तृप्तिदायक।

(**टीप–अक्षांश**–भूगोल पर उत्तरी और दक्षणी ध्रुव से होती हुई एक रेखा मान कर उसके 360 भाग किए गए हैं। इन 360 अंशों पर से होती हुई पूर्व पश्चिम भूमध्यरेखा के समानांतर मानी गई है जिनको अक्षांश कहते हैं। अक्षांश की गिनती विषुवत या भूमध्यरेखा से की जाती है।)

अभ्यास

पाठ से

1. प्रवासी चिड़ियाँ किन्हें कहते हैं? वे यात्राएँ क्यों करती हैं ?
2. चिड़ियों के प्रवास से संबंधित सबसे विशिष्ट बात क्या है ?
3. मुंबई के पीलक और पतरिंगे प्रवास के लिए कब और कहाँ जाते हैं ?
4. चिड़ियाँ अपने प्रवास के लिए क्या–क्या तैयारियाँ करती हैं ?
5. चिड़ियों को यात्रा के दौरान किन बातों का खतरा रहता है ?
6. प्रवासी पक्षियों के बारे में जानकारी इकट्ठा करने के लिए किन तरीकों को अपनाया जाता है ?
7. प्रवासी चिड़ियाँ रात में ही यात्रा क्यों करती हैं ?
8. कुतुबनुमा का क्या अर्थ है ? यह पक्षियों की यात्रा में कैसे सहयोग करती है?
9. पक्षियों की प्रवास यात्रा हमेशा कठिन और थकाऊ होती है ! क्यों ?

पाठ से आगे

97FGYV

1. 'प्रवास' शब्द का प्रयोग पाठ में हुआ है जिसका सामान्य सा अर्थ है परदेश की यात्रा अथवा सफर। आप अपनी प्रवास या यात्रा के लिए कौन–कौन सी तैयारी करते हैं ? एक सूची बनाइए।
2. बहुत सारी यात्राएँ कठिन और थकाऊ होती है, आप सब ने भी इसका अनुभव अपनी–अपनी यात्राओं में किया होगा। इसके अतिरिक्त यात्रा में और कौन से रोमांच मिलते हैं। लिखिए।
3. आप अपने परिवेश में तमाम तरह के पक्षियों को देखते होंगे, उनकी विविधता पर साथियों से चर्चा कर लिखिए।
4. विभिन्न तरह के पक्षियों की संख्या लगातार कम क्यों होती जा रही है। इसके कारण क्या–क्या हो सकते हैं ? इस विषय पर शिक्षक से बातचीत कर एक आलेख तैयार कीजिए।
5. बहुत से लोग कई कानूनी प्रतिबंधों के बाद भी दुर्लभ पक्षियों का शिकार करते हैं। इस प्रवृति पर रोक लगाने के लिए जन–जागृति के कौन–कौन से तरीके हो सकते है? साथियों से चर्चा कर लिखिए ?

भाषा से

97PD1I

1. अजीब बात, बुनियादी सवाल, लम्बी यात्रा, ठंडे स्थान, सख्त जाड़े, प्रवासी चिड़ियाँ, जो विशेष्य – विशेषण प्रयोग के उदाहरण हैं। पाठ में इस प्रकार के वाक्यों का बहुतायत से प्रयोग हुआ है। पाठ से और भी ऐसे विशेष्य–विशेषण के प्रयोग को खोज कर लिखिए।

2. पाठ में विशेषण प्रयोग के एक दूसरे स्वरूप को भी देखिए जैसे कोई संतोषजनक उत्तर, जो दिमाग, उन प्रजातियों, उनका जीना, उस समय। यहाँ **कोई, जो, उन, उनका** आदि शब्द सर्वनाम हैं जिनका विशेषण के रूप में प्रयोग हुआ है, जिन्हें सार्वनामिक विशेषण कहते हैं अर्थात् जो सर्वनाम शब्द, संज्ञा के साथ उसके संकेत या निर्देश के रूप में आता है वह विशेषण बन जाता है। पाठ में से ऐसे और भी सार्वनामिक विशेषण के उदाहरण चुनकर स्वतंत्र रूप से वाक्य में प्रयोग कीजिए।

3. पूर्व के अध्यायों में आपने वाक्य संचरना के बारे में पढ़ा है। पाठ से लिए गए निम्नलिखित उदाहरण को पढ़िए – "यहाँ तक तो ऐसा लगता है कि इन कठिन प्रवास यात्राओं का निश्चित महत्व है और शायद जो चिड़िया प्रवास पर जाती है उसके लिए कुछ हद तक आवश्यक भी है लेकिन उलझन में डालने वाली बात यह है कि कुछ चिड़ियाँ प्रवास पर पूर्व से पश्चिम या पश्चिम से पूर्व को लगभग उसी अक्षांश पर, लगभग उसी प्रकार के जलवायु वाले प्रदेशों में अंडे देने के लिए जाती हैं।" यह पूरा अनुच्छेद एक वाक्य का है, इस वाक्य को अलग–अलग सरल वाक्य (जिस वाक्य में केवल एक ही क्रिया हो) में तोड़कर लिखिए।

4. "इन बुनियादी सवालों का अभी तक संतोषजनक उत्तर नहीं मिला।" इस वाक्य में 'संतोषजनक' शब्द को समझिए। 'संतोष' शब्द में 'जनक' जोड़कर यह शब्द बना है। 'जनक' का अर्थ होता है, 'पिता या जन्म देने वाला।' 'संतोषजनक' का अर्थ हुआ 'संतोष देने वाला।'

   आप भी 'जनक' जोड़कर दो शब्द बनाइए और उनका अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए।

5. 'प्रवास' शब्द 'वास' में 'प्र' उपसर्ग जोड़ने से बना है। इसका अर्थ है – कुछ समय के लिए किसी दूसरे स्थान पर रहना। नीचे 'प्र' उपसर्ग युक्त कुछ और शब्द दिए गए हैं, इनके मूल शब्द पहचानिए और अर्थ समझिए। फिर इन शब्दों का वाक्यों में प्रयोग कीजिए।

प्रदेश	प्रगति	प्रचलित	प्रहार	प्रख्यात
प्रशिक्षण	प्रमुख	प्रसिद्ध	प्रकोप	प्रस्थान

6. नीचे कुछ शब्द व उनके विलोम शब्द दिए गए हैं। इनकी जोड़ियाँ बनाकर लिखिए –

प्रस्थान	उत्थान	कनिष्ठ	अनिवार्य	ज्येष्ठ
पतन	अनर्थ	आगमन	कठिन	सरल
अर्थ	शहरी	देहाती	वैकल्पिक	

7. अमात्रिक वर्णों से बना एक शब्द है 'अनवरत' (अ न व र त)। इसका अर्थ है 'लगातार'। आप इन वर्णों से जितने अधिक शब्द बना सकते हैं, बनाकर लिखिए ।

जैसे– अ– अजय, असीम, अविनाश, अविद्या।

योग्यता विस्तार

1. मान लीजिए कि आपको छल्लेवाली चिड़िया का पता चल जाता है। इसकी सूचना 'नेचुरल हिस्ट्री सोसायटी, मुंबई' को देना है। आप किस प्रकार पत्र लिखेगें।

97Y936

2. परिंदों के पुरोधा डॉ. सालिम अली की जीवनी खोज कर पढ़िए और उनके जो प्रसंग आपको प्रिय लगे हैं उन्हें कक्षा में सुनाइए।
3. नेचुरल हिस्ट्री सोसायटी के उद्देश्य और कार्यों की जानकारी शिक्षक के सहयोग से प्राप्त कर समूह चर्चा कीजिए।
4. किसी भी कार्य की सफलता सामूहिक प्रयत्न पर निर्भर करती है। आप सभी किसी भी ऐसे कार्य का उदाहरण दीजिये जिससे सामूहिक प्रयत्न की सफलता को आप देखते हैं।
5. आपने पक्षियों के प्रवास के बारे में पढ़ा। इसी प्रकार जानवर भी प्रवास पर जाते हैं। कुछ ऐसे ही जानवरों के नाम और उनके प्रवास से संबंधित जानकारियाँ इकट्ठी कीजिए।
6. 'कुतुबनुमा' एक यंत्र है जिससे दिशा का ज्ञान होता है। अपने विज्ञान शिक्षक से पूछिए कि इससे दिशाओं का पता कैसे चलता है।

98854T

पाठ 11

हमारा छत्तीसगढ़

— श्री लखनलाल गुप्ता

छत्तीसगढ़ राज्य की अपनी ऐतिहासिक और सांस्कृतिक पहचान की ओजमयी गौरव गाथा रही है। भारतीय भू–भाग की यह धरती अपनी प्राकृतिक संपदा, विविध पंथों की धार्मिक सद्भावना, प्रकृति के नयनाभिराम छटाओं, सुंदर सरल भोली–भाली जीवन शैली के लिए अपनी विशिष्ट पहचान रखती है। किसानों के मेहनतकश जीवन का प्रतीक 'धान का कटोरा' के रूप में प्रसिद्ध यह राज्य जिन विविधताओं से पूरित और सुशोभित हो रहा है, उसे कवि ने अपनी कविता में सरस रूप में प्रस्तुत किया है।

उच्च गिरि कानन से संयुक्त, भव्य भारत का अनुपम अंश।
जहाँ था करता शासन सुभग, वीर गर्वित गोंडों का वंश।।

नर्मदा, महानदी, शिवनाथ आदि सरिताएँ पूत ललाम।
प्रवाहित होतीं, कलकल नाद, हमारा छत्तिसगढ़ अभिराम।।

रत्नपुर करता गौरव प्रकट, सुयश गाता प्राचीन मलार।
नित्य उन्नति–अवनति का दृश्य, देखता दलहा खड़ा उदार।।

तीर्थथल राजिम परम पुनीत, और शिवरीनारायण धन्य।
कह रहे महानदी तट सतत, यहाँ की धर्म कथाएँ रम्य।।

प्रकृति का क्रीड़ास्थल कमनीय, यहाँ है वन–संपदा अपार।
भूमि में भरा हुआ है विपुल, कोयले–लोहे का भंडार।।

यहाँ का है सुंदर साहित्य, हुए हैं बड़े–बड़े विद्वान।
कीर्ति है जिनकी व्याप्त विशेष, आज भी हैं पाते सम्मान।।

कौन कहता यह पिछड़ा हुआ? अग्रसर है उन्नति की ओर ।
कटोरा यही धान का कलित, चाहते सभी कृपादृग कोर।।

नहीं यह कभी किसी से न्यून, अन्न दे करता है उपकार।
उर्वरा इसकी पावन भूमि, अन्न उपजाती विविध प्रकार।।

ईश से विनय यही करबद्ध, प्रगति पथ पर होवे गतिमान।
हमारा छत्तीसगढ़ सुख धाम, करें सादर इसका गुणगान।।

शब्दार्थः– **नाद**–आवाज, घोष, **सुयश**–सुकीर्ति, सुनाम, **अग्रसर**–आगे बढ़ना, अगुवा, **कृपादुग**–दया दृष्टि, **अनुपम**–उपमा रहित, बेजोड़, **सुभग**– सुंदर, मनोहर, **अवनति** – कमी, न्यूनता, घाटा, ह्रास, **अभिराम**–आनंददायक, मनोहर, सुखद, सुंदर, प्रिय, रम्य, **कानन** – वन, जंगल, **कलित**– सुसज्जित, शोभित।

अभ्यास

पाठ से

1. किन–किन नदियों के कलकल नाद से छत्तीसगढ़ अभिराम बनता है ?
2. कविता के सन्दर्भ में यह राज्य किस प्रकार उन्नति की ओर अग्रसर है ?
3. कवि का ईश्वर से करबद्ध विनय क्या और क्यों है ?
4. हमारा छत्तीसगढ़ किन–किन संपदाओं से परिपूर्ण है ?
5. कविता की पंक्ति 'कृपादृग कोर' के द्वारा कवि किन भावों को व्यक्त करना चाहता है ?
6. भव्य भारत का अनुपम अंश कवि ने किसे और क्यों कहा है ?
7. छत्तीसगढ़ की यह भूमि, हम पर किस प्रकार उपकार करती है?
8. महानदी का तट क्यों प्रसिद्ध है?
9. कवि ने ईश्वर से क्या प्रार्थना की है?
10. कवि ने छत्तीसगढ़ को प्रकृति का कमनीय क्रीड़ा स्थल क्यों कहा है?

पाठ से आगे

1. आप छत्तीसगढ़ के जिस भू–भाग में निवास करते हैं उसके प्राकृतिक सौन्दर्य को गद्य या पद्य में लिखिए।
2. राज्य के सभी पंथों के प्रमुख तीर्थ स्थल कौन–कौन से हैं? उनमें से आप ने और आपके साथियों ने कुछ को देखा भी होगा, उन पर अपने साथियों के साथ चर्चा कर उस स्थल की विशेषताओं को लिखिए।
3. आपके निवास क्षेत्र के प्रसिद्ध साहित्यकारों और उनकी रचनाओं पर शिक्षक और साथियों से चर्चा कर उनकी प्रसिद्ध रचनाओं पर अपनी समझ से 10 पंक्ति का आलेख तैयार कीजिए।
4. ''धान का कटोरा' के रूप में कवि छत्तीसगढ़ की महिमा का वर्णन करते हैं। राज्य की इस प्रसिद्धि को लेकर हमारी स्थानीय भाषा में बहुत सारी कविताएँ गीत आदि हैं उन्हें ढूँढ़ कर लिखिए कक्षा–कक्ष में सुनाइए।

98H16G

भाषा से

1. **पावन भूमि, भव्य भारत, सुंदर साहित्य,** जैसे पदों का प्रयोग कविता में हुआ है। यहाँ भूमि, भारत, साहित्य, विशेष्य है और पावन, भव्य, सुंदर, आदि शब्द विशेषण हैं। अर्थात वाक्य में जो शब्द संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताए उसे विशेषण और जिसकी विशेषता बताई जाए उसे विशेष्य कहते है। पाठ से विशेषण और विशेष्य का चुनाव कर अर्थ सहित लिखिए।

98QW84

2. भोले–भाले, ओर–छोर, काम–धाम, अनाप–शनाप जैसे शब्दों के प्रयोग शब्द सहचर कहलाते हैं। इस पाठ से एवं अपने परिवेश में प्रयुक्त होनेवाले शब्द सहचरों को चुन कर वाक्य में प्रयोग कीजिए।
3. कविता में 'कमनीय' शब्द का प्रयोग हुआ है। जो 'कामिनी' शब्द में 'ईय' प्रत्यय के योग से बना है। वे शब्दांश जो शब्द के अन्त में जुड़कर शब्द के अर्थ में परिवर्तन अथवा विशेषता उत्पन्न करे, प्रत्यय कहलाते हैं। आप दिए गए शब्दों में 'ईय' प्रत्यय का प्रयोग कर लिखिए – पठन, दर्शन, भारत, गमन, श्रवण, वर्णन।
4. इस कविता में से अनुप्रास अलंकार के दो उदाहरण लिखिए ।
5. प्यारा, न्यारा, दुलारा, इन शब्दों की सहायता से चार पंक्तियों की कविता की रचना कीजिए। कविता की पहली पंक्ति इस प्रकार भी हो सकती है–
   हम छत्तीसगढ़ के, छत्तीसगढ़ हमारा है,
   ———————————————
   ———————————————
   ———————————————

योग्यता विस्तार

98ZS9R

1. छत्तीसगढ़ राज्य एक प्रगतिशील राज्य है? इस विषय पर विद्यालय में वाद–विवाद प्रतियोगिता का आयोजन कर उसमें हुई चर्चा के प्रमुख बिन्दुओं को लिखिए।
2. छत्तीसगढ़ राज्य के प्रमुख साहित्यकारों के जीवन और उनकी रचनाओं के बारे में अपने शिक्षकों तथा अभिभावकों से सूचना प्राप्त कर सूची बनाइए।
3. छत्तीसगढ़ के प्रमुख सांस्कृतिक स्थल कौन–कौन से हैं राज्य के मानचित्र में उन्हें ढूँढ़ते हुए चिह्नित कर कक्षा में प्रदर्शित कीजिए।
4. 'छत्तीसगढ़ के वैशिष्ट्य' विषय पर कक्षा में अपनी योग्यता विचार व्यक्त कीजिए।
5. शिवरीनारायण, रतनपुर और राजिम के संबंध में जानकारी एकत्र कर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।
6. इस वर्ग पहेली में छत्तीसगढ़ की प्रसिद्ध नदियों, नगर, पर्वत, जल प्रपात के कुछ नाम दिए गए हैं। इन्हें खोजिए –

म	×	×	म	शि	×
द	हा	जि	×	व	चि
ल	रा	न	र्ग	ना	त्र
हा	×	दु	दी	थ	को
भै	र	म	ग	ढ़	ट
×	र	त	न	पु	र

इन्हें भी पढ़िए

छत्तीसगढ़–दर्शन

अपना प्रदेश देखो, कितना विशेष देखो,
आओ–आओ घूमो यहाँ, खुशियों से झूमो यहाँ।

''रायपुर'' की क्या सानी?, अपनी है राजधानी,
ऊँचे–ऊँचे हैं मकान, यहाँ की निराली शान।।

"कोरबा" की बिजली, हम सब को मिली
"देवभोग" का है मान, हीरे की जहाँ खदान,

लोहे की ढलाई देखो, देखो जी "भिलाई" देखो।
गूँजे जहाँ सुर–ताल, "खैरागढ़" बेमिसाल।।

"राजीव लोचन" यहाँ, रम जाए मन जहाँ,
तीरथ में अग्रगण्य, देखो–देखो "चम्पारण्य"।

गूँजे जहाँ सत्यनाम "गिरौदपुरी" है धाम,
कबिरा की सुनो बानी, "दामाखेड़ा" की जुबानी।।

महानदी धार देखो, "सिरपुर" "मल्हार" देखो,
"डोंगरगढ़" बमलाई देखो, "रतनपुर महामाई" देखो।

देवी "बेमेतरा" वाली, देखो–देखो भद्रकाली,
मंदिर एकमेव देखो, देखो "भोरमदेव" देखो।

देखो ऊँचा "मैनपाट", बड़े ही कठिन घाट,
तिब्बती मकान देखो, कितनी है शान देखो।

"बस्तर" के वन देखो, वहाँ भोलापन देखो,
ऊँचे–ऊँचे, झाड़ देखो, नदी और पहाड़ देखो।।

झरने हैं झर–झर, गुफा है "कुटुंबसर",
"तीरथगढ़" प्रपात देखो, "दंतेश्वरी" मात देखो।

अपना प्रदेश है ये, कितना विशेष है ये,
सबका दुलारा है ये, सच बड़ा प्यारा है ये।।

– दिनेश गौतम

999NBE

पाठ 12

अपन चीज के पीरा

–संकलित

ढिल्ला चरइया–बेंवारस गरुवा मन खेत–खार, बारी–बखरी के बिंदरा–बिनास कर देथें। कोनो–कोनो गोसइयाँ मन जानबुझ के अपन गाय–गरु ल रात म छेल्ला चरे बर ढिल देथें। जेकर नुकसान होथे, उही एकर दुख–पीरा ल जानथे। अइसन नइ करना चाही । ये कहानी म इही संदेस दे गेहे।

परसराम के जस नाम तस काम । जेन मेर नहीं, तेन मेर लाठी अँटियाथे अउ बात–बात म अँगरा उगलथे। सोज गोठियाय ल तो जानय नहीं,जुच्छा अटेलही मारथे। परसराम जेन लहो लेथे तेन तो लेथे,ओकर ले जादा लहो लेथे ओकर गाय 'गोदवरी।' परसराम करा कोरी भर गाय हे। फेर गोदवरी के अलगे मिजाज हे। ढिल्ला चर–चर के खूब मोटाय हे। लाली रंग,बड़े–बड़े सींग, हुमेले बर आघू। छिल–छिल दिखथे ओखर सरीर। काठा भर के काचर, कसेली भर दूध देथे। एकरे भरोसा परसराम के गोसइन दसरी ह मार अंग भर गहना ओरमाय हे। बड़ खुस हे परसराम अउ दसरी। खुस नइ हे त ऊँकर बेटा रमेसर। रोज–रोज के बद्दी ले हलाकान रहिथे। ददा–दाई संग बातिक–बाता घलो हो जाथे। फेर नइ सुधरने वाला हे परसराम।

आज फेर बड़े बिहनिया ले रुपउ ह बद्दी दे बर आय हे। ओकर कछार–बारी के भाँटा–मिरचा के फेर सत्यानास कर दे हे गोदवरी ह। फूले–फरे के दिन म चर दे हे। रुपउच ह नहीं,तीर–तकार के जम्मो खेत–खार वाले गोदवरी के मारे हलाकान हें। गोदवरी कोजनी कइसे मनखे कस अपन मुड़ के भार राचर ल उसाल देथे अउ घुसर जाथे बारी–बखरी म। कोनो गम नइ पाय। अउ थोरको ककरो आरो पाथे,तहाँ ले पूछी उठाके पल्ला भागथे। कोनो ओकर पार नइ पाय। पल्ला भाग के कोठा म घुसर जाथे। बद्दी देवइया ल परसराम उल्टा गारी देवत कहिथे–"तोर बारी म गाय ह चरत रहिस त पकड़ के लाने हस का ? बड़ा आय हस बद्दी देवइया। मंघारे ल देहूँ लउठी म,भाग जा।" रुपउ मने–मन म संकलप लेथे,एक न एक दिन पकड़ के देखाहूँ तोर गाय ल।

बारी जाते साठ रुपउ भिड़गे गाय पकड़े के जतन म। धरिस कुदारी,लानिस झउहा–रापा। जेन मेर ले गाय बारी म बुलके बर पइधे रहय,तेने मेर गढ़हरा खने बर भिड़गे । बासी–पेज खाय ल छोड़ दिस । ओला तो परसराम के बात लगे रहय। बने गढ़हरा खन के ओला डारा–पाना म तोप दिस,तभे घर गिस। एती संझा बेरा गोदवरी बरदी ले लहुटिस त परसराम गोदवरी ल दुहिस–बाँधिस अउ सोवा परती म गाय के गेरवा ल छटका दिस। चलिस गोदवरी अपन ठीहा म। लगथे गोदवरी असन गाय के चाल–चलन ल देखके सियनहा मन हाना पारे होहीं–'पइधे गाय कछारे जाय।' रुँधना ले बुलकत गोदवरी गढ़हरा म झपागे। भकरस ले बाजिस। गोदवरी बाँय ऽऽऽ कहिके नरिअइस। रुपउ कुँदरा के बाहिर कउड़ा मेर बइठे आगी तापत रहय। रुपउ जान डरिस, अब कहाँ जाही ? एक मन डर्राय कहूँ गाय के गोड़ टूट जाही त उल्टा मोर करलइ हो जाही। मर जाही त गउ हत्या लगही। आधा बल, आधा डर करत आके रुपउ देखथे त गोदवरी गढ़हरा म अँवरी–भँवरी बियाकुल घूमत रहय।

मुँहझुलझुल बिहनिया परसराम खोर के कपाट ल खोलथे त गोदवरी नइ रहय। परसराम कहिथे–''आज गोदवरी कइसे नइ अइस ओ,रमेसर के दाई ?''दसरी ह कहिथे–''को जनी हो। मोर मन तो भुस–भुस जाथे। कहुँ रुपउ ह बाँध–छाँद तो नइ दिस होही।'' परसराम कहिथे–''का ला? गोदवरी ल ? ओकर दस पुरखा आ जही तभो गोदवरी ल नइ बाँध सकय।''

एती बारी के गढ़हरा म अभरे गोदवरी बछरु के मया म बाँय–बाँय नरियावय। बाहिर–बट्टा अवइया–जवइया,नहवइया कतकोन मनखे रुपउ के बारी म सकलागें। समेलाल ह कहिथे–''वाह रुपउ ! आज अच्छा फाँदा खेले। आज गरब उतरही परसराम के। कहाँ जाही ? गाय ल खोजत–खोजत सवाँगे आही।'' ठउँका ओतके बेर तेंदूसार के लाठी धरे परसराम आगे। देखथे,गाय गढ़हरा म गिरे परे हे। परसराम ल देखके गोदवरी बाँय–बाँय नरियाय लागिस। रुपउ कहिथे–''कइसे परसराम कतका दिन ले ककरो लइका के मुँह म पैरा ल गोंजबे। मोर गाय ल कब पकड़े हस कहिके अँटियावस, अब बता।'' परसराम के मन म आगी धधकय,फेर का करे, चुपेचाप रहय। छक्का–पँजा बंद। मूड़ी ल नवाय रहय। समेलाल कहिथे–''गाँव भर के खेत–खार,बारी–बेला के बहुत बिंदरा–बिनास करे हस तैंहा,अउ तोर गाय ह। अब काय कहिथस बोल। अभो गरजबे ? गाँव म रहना हे त बने रह। खेती–खार के चरइ अउ उपर ले अँटियइ नइ बने।''

कोनो बतइन त दसरी अउ रमेसर घलो बारी म आ गें। रमेसर मने–मन भारी खुश होत रहय। चलो आज चोर पकड़इस। ददच आय त अनियाँव के पाट थोरे दाबबे। अनियाँव 'त' अनियाँव होथे। एक झन सियान कहिथे–''इही मेर नियाँव होना चाही। परसराम गजब अँटेलही बघारथे। मसमोटी मारथे। आज आइस ऊँटवा पहाड़ तरी। ये ला डाँड़े ल परही। एकर भरभस टूटना चाही।'' ततके म दसरी जेन पहिली फुनुन–फुनुन करे,गारी बखाना दे,तेन हाथ जोर के कहिथे–''ददा हो, गलती होगे। बछरू भूख के मारे नरियावत हे। गाय ल निकाल देव। जेन नियाँव करहू, पाछू करत रहू।'' समयलाल कहिथे–''नहीं नियाँव तो अभी होही भउजी। तुँहर धरे के न बाँधे के।''परसराम

उपरछावा कहिथे–''हव ददा, जेन डाँड़ बाँधहू,मैं कसूरवार हँव, देहूँ।''चार झन सुनता होके परसराम ल दू सौ रुपिया डाँड़िन अउ बरजिन–''आज ले काकरो खेत–खार ल चराबे झन,गाय ल ढिलबे झन,समझे।'' दसरी तुरते दू सौ रुपिया लान के पटाइस। गोदवरी ल निकालिन अउ घर आ गें।

एक दू अठोरिया काहीं नइ जनइस। परसराम गाय ल बाँध के राखे। रमेसर सोंचिस– चलो अच्छा हे,ददा के बेवहार बदलिस। पर के खेत–खार चराय ले पेट नइ भरय,उल्टा सराप लगथे। एती ढिल्ला चरे–चरे टकराहा गोदवरी अब दुबराय लागिस। घर के चारा ओला ओलहाय नहीं। गाय के पकती–पकती झके लागिस। दूध घलो सुखाय लगिस। दसरी घलो दुबराय लागिस। चोर ह चोरी ल छोड़ दिही त ओला कल नइ परय, तइसे परसराम के हाल। सोवा परती गोदवरी करा जाय अउ ओकर गेरवा ल छटकाय के उदिम करे। ओ एक छिन सोचे –नहीं अपजस लेना ठीक नइ हे। गेरवा छोरे बर ओकर हाथ ह ठोटके। दूसर छिन सोंचे–चरन दे न, रोज–रोज थोरे पकड़ाही । ठोटकत–ठोटकत एक दिन ओकर हाथ ले फेर गेरवा छूटगे। गोदवरी फेर ढिल्ला। फेर बद्‌दी,रमेसर ल बड़ा दुख होय। एक दिन रमेसर के अपन दाई–ददा संग बनेच झगरा होगे। परसराम कहि दिस–''हरिचंद बने म पेट नइ भरे बेटा।'' रमेसर कहिथे–''नहीं ददा ! सबला अपन चीज के पीरा हे। कोनो तोर बारी–बेला,खेत–खार ल चराही त तोला नइ बियापही ? तोला नइ पिराही का ?'' ''वाह रे! मोर धर्मात्मा बेटा'' कहिके परसराम हाँस दिस। परसराम के हाँसी रमेसर के हिरदे म बँभूर काँटा कस गड़गे।

अठुरिया पाछू गाँव म मड़इ होइस । रतिहा दइहान म नाचा होत रहिस। जेवन करके सब झन नाचा देखे ल चल दिन। दसरी ह अपन टूरी ल भेज के पहिली ले आघू म पोता बिछवा दे रहिस। लइका ल धरके उहू पहुँचगे नाचा देखे ल। परछी म सोये रमेसर टुकुर–टुकुर कोजनी का ला देखत रहय परसराम कहिथे–''नाचा देखे ल नइ जास रमेसर ?'' रमेसर कहिथे–''अच्छा नइ लगे ददा,नइ जाँव।'' ''ले नइ जास त तँय घर ल राख। मैं जात हँव। एकात गम्मत देख के आहूँ।'' अइसे कहिके परसराम बंडी पहिरत निकलिस। कोठा डहर गिस अउ गोदवरी के गेरवा ल छटका दिस। गोदवरी निकलगे अपन बूता म अउ परसराम नाचा डहर निकलगे। रमेसर मन म सोचथे, आज तो कुछ उदिम करेच ल परही। अपन जिनिस के का पीरा होथे, ये तो ददा ल सिखोयेच ल परही।

रमेसर उठिस अउ कोठा म जाके सब्बो गाय–गरुवा ल ढिल के अपने बारी म ओइला दिस। भाँटा,मिरचा फूलत–फरत रहय,सेमी के नार घऊदे रहय,तेमा झोफ्फा–झोफ्फा सेमी झूलत रहय। तीर म धनिया घलो महमहात रहय। जम्मो गरुवा अभर गें घर–बारी म। उमान कस चारा चरे लगिन। जम्मो जानवर मिलके बारी ल खुरखुँद कर दिन। रात पछलती रमेसर उठके सबो जानवर ल कोठा म ओइलाके बाँध दिस अउ आके सुतगे।

नाचा देखत दसरी ल नींद आय लागिस तहाँ उठ के आगिस। थोरिकेच पाछू परसराम घलो आगे। लइका मन नाचा देखते रहिन। बिहनिया परसराम उठके बारी डहर गिस,त बारी ल देखके

अकबकागे। दसरी ल बारी म लेग के देखाथे। खुरखुँद बारी ल देख दसरी ह रोय लागिस। अउ रो–रोके सरापे–बखाने लागिस –''काकर गरुवा आय तेन सरी भाँटा मिरचा, सेमी ल चर के बारी के बिंदरा–बिनास कर दिस। ओकर डेहरी म दिया झन बरतिस। ओला खोजे पसिया झन मिलतिस।'' परसराम घलो बेकलम–बेकलम गारी बके लागिस।

एती रमेसर खटिया ले उठिस अउ बारी डहर जाके दाई ल कहिथे–''काकर डेहरी के दिया ल बुझावत हस दाई ? तैं सरापत–बखानत हस दाई त तोरे डेहरी के दिया बुताही,तोरे गाय–गरुवा ह बारी ल चरे हे अउ मैं चराय हँव। आज तुँहरे गाय–गरुवा ह, तुँहर बारी–बेला ल चरे हे त तुँहला कतका बियापत हे। हमर गाय दूसर के बारी–बेला ल चरथे त का ओला नइ बियापत होही ? सबके पीरा एक होथे ददा,सबके मया एक होथे दाई। अपन बरोबर सब ला जानिस अउ सब ला एके मानिस।'

रमेसर के सियानी गोठ ल सुनके ककरो बक्का नइ फूटिस। आज परसराम अउ दसरी अपराधी कस खड़े रहिन। उहू मन ला अपन करनी के ज्ञान होगे। उत्ती डहर ले उवत सुरुज के रूप आज नवाँ–नवाँ लागत रहिस।

छत्तीसगढ़ी शब्द मन के हिन्दी अर्थ

अपगुन	=	अवगुण
अटेलही मारना	=	उल्लंघन करना, अवमानना करना, किसी की न मानना
हुमेले बर	=	सींग मारने के लिए
घुसरना	=	प्रवेश करना
उचाटा मारना	=	कुलाँचे मारना
रुँधना–बाँधना	=	बाड़ लगाना
कँटही	=	कँटीली
कुँदरा	=	झोपड़ी
काचर	=	थन
ओरमाना	=	लटकाना
बातिक–बात	=	झड़प होना,बहस होना
कोठार	=	खलिहान
बेरा चढ़गे	=	सुबह से दोपहर हो गई
अंगरा	=	अंगारा
लाहो लेना	=	अति करना,उत्पात करना, मजा लेना
कोरी	=	बीस
को जनी	=	क्या पता
उसाल देथे	=	खोल देना,उठा देना
पल्ला भागना	=	सरपट दौड़ना
काँटा–कोराई	=	बाड़ लगाने की काँटेदार टहनियाँ
मसमोटी	=	मस्ती
गेरवा	=	मवेशियों को बाँधने की रस्सी
सँवागे	=	स्वयं–साक्षात
कसेली	=	दूध दूहने का बर्तन
बद्दी	=	बदी,बदनामी,आरोप
ढिल्ला	=	मुक्त,स्वतंत्र
मुँहझुलझुलहा	=	प्रातःकाल का हल्का अँधेरा

अभरे = संयोग से मिलना या फँस जाना

फुनुन–फुनुन = बड़बड़ाना

सुंता = सुलह,एकमत

छिल–छिल दिखथे = चिकना, चमकदार, सुंदर, स्वस्थ दिखती है।

राचर = लकड़ी, बाँस एवं खपच्चियों से बनाया गया विशेष प्रकार का दरवाजा, जिसे बाड़ी या खलिहान में लगाते हैं।

मुँह म पैरा गोंजना = हक मारना

बिंदरा–बिनास = तहस–नहस करना

डाँड़ = दण्ड

बेकलम–बेकलम = अश्लील–अश्लील

कउड़ा = जमीन में गढ़्ढा खोदकर बनाई गई विशेष प्रकार की अंगीठी।

अभ्यास

पाठ से

1. परसराम के सुभाव कइसे रहिस ?
2. गोदवरी ह काकर बारी म जा के चरय ?
3. रुपउ ह गोदवरी ल पकड़े खातिर का जतन करिस ?
4. रुपउ का सोंच के डर्रात रहय ?
5. गाँव वाले मन परसराम ल का डाँड़ डाँड़िन अउ ओला का चेतइन ?
6. रमेसर ह अपन दाई–ददा ले का बात बर बातिक–बाता होवय ?
7. रमेसर ह नाचा देखे बर काबर नइ गिस ?

पाठ से आगे

99IJ02

1. परसराम ह अपन गाय ल रोज रातकुन छेल्ला चरे बर ढिल देवय, ओकर ये काम ह सहीं रहिस के गलत ? अउ गलत रहिस त काबर ? अपन बिचार लिखव।
2. तुँहर घर के कोनो बड़े सियान मन ले परसराम सही कोनो अनियाँव के काम करही ओला तुमन कइसे सुधारहू लिखव।

काम	सुझाव
1.	....
2.	....

3. रमेसर के जघा तुमन होतेव त का करतेव ? कारण सहित उत्तर लिखव।
4. तुँहर घर या पास पड़ोस में कोन–कोन बात में झगरा होथे अउ झगरा के सुधार कइसे करे जा सकथे। कक्षा में आपस में बिचारव।

भाषा से

1. खाल्हे लिखाय वाक्य ल पढ़व –
   'एक–दू अठोरिया के कुछू नइ जनाइस ।'
   ये वाक्य म 'अठोरिया' के अर्थ हे–आठ दिन के समयावधि।
   खाल्हे लिखाय शब्द मन ल अपन वाक्य म प्रयोग करव –
   हप्ता–के–हप्ता, पंदराही, महिना–के–महिना, साल पुट।
2. खाल्हे लिखाय मुहावरा मन के अर्थ लिखव अउ अपन वाक्य म प्रयोग करव–
   लाठी अँटियाना, लाहो लेना, छिल–छिल दिखना, छक्का–पंजा बंद होना, मुँह म पैरा गोंजना, बात लगना, बेरा चढ़ना।
   ये पाठ म अउ गजब अकन मुहावरा के प्रयोग करे गेहे। उनला छाँट के लिखव अउ उँखर अर्थ लिखव।
3. खाल्हे लिखाय वाक्य ल पढ़व –
   'अइसन गाय के चाल–चलन ल देखके सियनहा मन हाना पारे होहीं–पइधे गाय, कछारे जाय।'
   ये वाक्य म 'पइधे गाय, कछारे जाय', ह एक ठन कहावत आय।
   चार ठन छत्तीसगढ़ी कहावत खोज के लिखव अउ अपन वाक्य म प्रयोग करव ।
4. खाल्हे लिखाय उदाहरण ल पढ़व अउ समझव–
   मनखेच ल – मनखे ल ही इहाँ 'मनखे'शब्द म 'च' प्रत्यय लगा के 'मनखेच' शब्द बनाय गेहे। इहाँ 'च' के अर्थ हे 'ही'। 'च' प्रत्यय लगाके 'मनखे' शब्द उपर जोर दे गे हे। खाल्हे लिखाय शब्द मन म 'च' प्रत्यय जोड़ के नवाँ शब्द बनावव अउ अपन वाक्य म प्रयोग करव – अलगे, काली, मोर, खेत, सबो ।
5. ए पाठ म सामिल मुहावरा मन ले कोनो तीन मुहावरा मन ल लिखके ओखर बरोबर हिन्दी मुहावरा लिखव हिन्दी म ओकर वाक्य प्रयोग करव।
6. ये पाठ के संदेस ल अपन भाषा म लिखव।

योग्यता विस्तार

1. अपनेच भलइ बर सोचइया आदमी सोचथे " दूसर के भले नुकसान हो जाए फेर मोर काम बन जातिस" अइसन भावना कतका गलत हे, कतका सही हे। एला ध्यान म रखे लिखे कोनो कहिनी कविता या कोनो महापुरुष के कथन ला खोज के लिखव।
2. परहित सरिस धरम नहि भाई पर पीड़ा सम नहिं अधमाई। ये चौपई के अर्थ खोज के लिखव। ये म अपन गुरूजी या कोनो सियान के मदद ले सकथव।

पाठ 13

विजयबेला

— श्री जगदीश चंद्र माथुर

1857 की क्रांति भारतवासियों में एक आत्मबल का संचार करता है। उन्हें यह एहसास होता है कि वे अंग्रेजी शासन के विरुद्ध आवाज उठाने में समर्थ हैं। यह आत्मबल 80 वर्ष के सेनानी बीर कुँवरसिंह जैसे योद्धाओं के कारण हो पाता है। जगदीशपुर के महाराजा कुँवर सिंह की पराक्रम कथा इस रूप में वर्णित है कि अंग्रेजों से लड़ते हुए उनके एक बांह में गोली लग गई और वे युद्ध करते रहे अंत में पीड़ा की अधिकता के कारण अपनी घायल बांह को स्वयं काट कर गंगा को भेंट चढ़ा देते हैं। यह कथन कि रैयत, मल्लाह, किसान यही वे शक्ति हैं जिसके बल पर कुँवर सिंह भोजपुर का राजा है। जन के प्रति कुंवरसिंह के नेह भाव को व्यक्त करती है। ऐतिहासिक एकांकीकार श्री जगदीश चन्द्र माथुर ने कुँवर सिंह के इन्हीं रूप छवि को एकांकी में प्रस्तुत किया है।

पात्र परिचय

कुँवर सिंहः 1857 की क्रान्ति के सेनानी। बिहार में जगदीशपुर के महाराज।

अमर सिंहः कुँवरसिंह के छोटे भाई।

हरिकिशुन सिंहः कुँवरसिंह का वफादार साथी।

नाथू सरदारः शिवापुर घाट पर मल्लाहों के सरदार।

भीमाः एक मल्लाह।

मैकूः दूसरा मल्लाह।

पुरोहित जीः कुँवर सिंह के राजपुरोहित।

विश्वनाथ सिंहः अमर सिंह का हरकारा (संदेशवाहक)

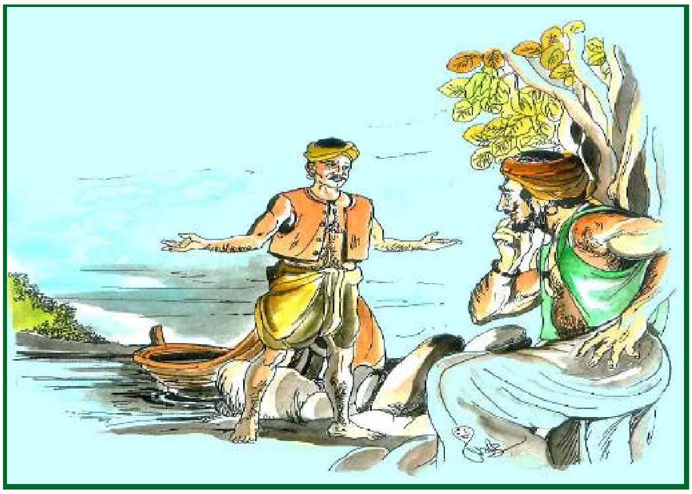

पहला दृश्य

(मल्लाहों के सरदार की झोंपड़ी के सामने गंगा से कुछ हटकर नाथू सरदार खड़ा है। भीमा मल्लाह का प्रवेश।)

भीमाः सरदार! सरदार!

सरदारः आ गए, भीमा! काम पूरा हुआ?

भीमाः बिल्कुल! देखो, ये चार नावें किनारे पर भी आ लगीं।

सरदारः कुल चालीस नावें होंगी, भीमा।

भीमाः छोटी बड़ी सब मिलाकर! पानी में से निकालते–निकालते दम फूल गया।

सरदारः न डुबाते, तो फिरंगी जनरल गोलियों से नावों को बेकार कर देता। भीमा, सिपाही लोगों के उतरने पर मल्लाहों को क्या हुक्म है?

भीमाः जैसा सरदार ने कहा था सब नावें इसी किनारे रहेंगी और रात–रात में उस पार वापस होकर फिर डुबा दी जाएँगी। अब तो करीब–करीब सभी नावें पार लग चुकीं। यह देखो न!

सरदारः हाँ, पर महाराज अभी तक नहीं आए।

भीमाः महाराज सब बंदोबस्त आप ही देखते हैं। सारी फौज को उतारकर खुद नाव पकड़ेंगे। इस उमर में और यह हिम्मत! सुना है, अस्सी बरस के हो चुके हैं।

सरदारः एक पखवारे से बराबर लड़ाई हो रही है– अतरौलिया, आजमगढ़, मगहर हर जगह कुँवर सिंह, हर जगह वह तूफान, मगर गंगा मैया ने कैसी शक्ति उस बूढ़े कुँवर सिंह के बदन में फूँक दी है। बिजली की जोत है कि पल में चकाचौंध कर दे। सावन की झड़ी है कि जो थमने का नाम ही न ले।

भीमाः एक बात कहूँ सरदार, धरती से आसमान तक बादल घुमड़ते हैं तो बिजली कड़कती है। राजा कुँवर सिंह के पीछे भोजपुर के किसानों, मल्लाहों, ग्वालों और रैयत का बल है। गरीबों का राजा कुँवर सिंह अमृत का घूँट पिए है, उसे बुढ़ापा छू नहीं सकता। सरदार, तुमने वह गीत सुना है?

सरदारः कौन सा?

भीमाः 'राजा कुँवर सिंह का राज!'

सरदारः कुँवर सिंह के गीत तो आजकल बच्चे–बच्चे की जबान पर हैं। फिर भी गीत सुनाओ–

भीमाः (गाने के स्वर में)

राजा कुँवर सिंह का राज,
कि जिसमें सिरजें सबके काज।
कि जिसमें दीन बने सरताज,
कि जिनके छूने में थी लाज,
ताज पर इठलाता है आज।
राजा कुँवर सिंह का राज।

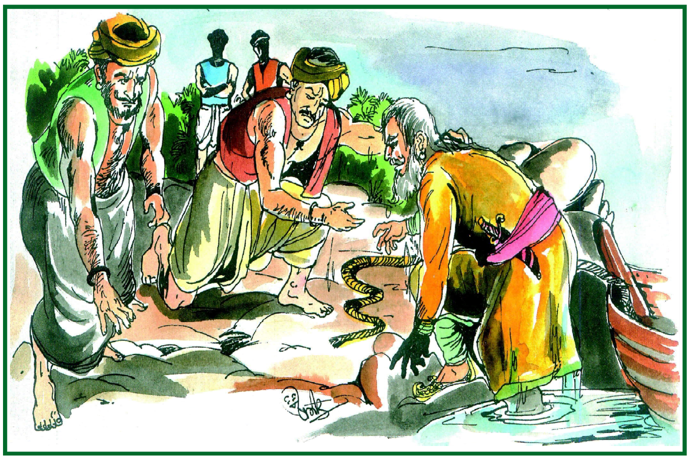

सरदारः भीमा! महाराज को अब तक आ जाना चाहिए था। शायद चलते–चलते फिरंगी की आँखों में कुछ और धूल झोंकने का इंतजाम करते हों।

भीमाः राजा कुँवर सिंह की बुद्धि की क्या तारीफ करूँ सरदार, कटार की धार–सी पैनी है। हरकिशुन को साधु बनाकर भेजा, जानते हो किसलिए?

सरदारः क्यों?

भीमाः हरकिशुन ने गाँव–गाँव में खबर उड़ा दी कि नावें तो मिल नहीं रहीं, इसलिए कुँवर अपनी फौज के साथ बलिया घाट पर हाथियों से गंगा पार करेंगे।

सरदारः फिरंगी ने सब सुना होगा।

भीमाः सब सुना और फिर हरकिशुन ने जर्नेलों के सामने भी यही बात कही। फिर क्या था? दोनों जर्नेलों ने बलिया घाट की तरफ घोड़े दौड़ा दिए। वहाँ छिपकर दाँव लगाए बैठे हैं कि कब कुँवर सिंह के हाथी गंगा पार करें और कब उन्हें ठिकाने लगाएँ।

सरदारः (हँसते हुए) खूब, और इधर शिवाघाट पर मैदान साफ हो गया और राजा कुँवर सिंह नावों पर गंगा पार करके आ पहुँचे। खूब छकाया।

(दूर से कुछ गोलियों की आवाज़)

सरदारः भीमा, कुछ सुना?

भीमाः गोलियाँ?

सरदारः भीमा, वह फिरंगी की फौज– वह देखो–

(फिर गोलियों की आवाज और स्पष्ट)

मैकूः सरदार, सरदार, वह देखिए, नाव–अकेली नाव।

सरदारः हाँ, महाराज ही हैं। (गोली की आवाज़) गोली चल रही है–– नाव पर निशाना है।

भीमाः अगर मल्लाह को गोली लगी तो– (फिर बौछार)

मैकूः और अगर महाराज को लगी।– सरदार, कुछ करना है। सिपाही लोग कुछ न कर सकेंगे इस मौके पर।

सरदारः मैं जाता हूँ –(गोलियों की आवाज़)

भीमाः किधर?

सरदारः नदी में तैरकर, साथ में रस्सी ले जाऊँगा। तुम किनारे से खींचना।

भीमाः नहीं सरदार, तुम यहीं ठहरो, तुम्हारे बिना इधर का काम बिगड़ सकता है। मैकू, यह लो रस्सा। मैं कमर से बाँधकर तैरता हूँ। जरूरत होगी, तो नाव से बाँध दूँगा और तुम लोग खींचते जाना। महाराज को बचाना है। (भीमा जाता है। गोलियों की आवाज़। फिर पानी में छपाक)

सरदारः मैकू, यह उसी गाजीपुर वाले मल्लाह की करतूत है। उसी के इशारे पर फिरंगियों की फौज बलिया से लौट पड़ी।

मैकूः हाथ तो कुछ नहीं लगा।

सरदारः अगर महाराज पहुँच जाएँ तभी तो भीमा आगे बढ़ निकला है। रस्सी इसी खूँटे से बाँध दे मैकू और तू किनारे पर जाकर मल्लाहों को रस्सी पर लगा दे।

(एकाध गोली की आवाज़ जब–तब सुनाई पड़ती है।)

मैकूः (खूँटे से रस्सी बाँधते हुए) गोलियों की बौछार कम हो गई, सरदार।

सरदारः नाव करीब आ गई है। फिरंगी की गोली कहाँ तक पहुँचेगी? मैकू, मैकू, जल्दी दौड़, भीमा इशारा कर रहा है। दौड़, ला यह रस्सी मुझे दे। उतर जा पानी में।

(मैकू का दौड़ते हुए जाना)

सरदारः मैकू, शाबाश! (रस्सी हाथ में ले लेता है।)

(घोड़े की टाप सुनाई पड़ती है।)

सरदारः कौन?

अश्वारोहीः महाराज कहाँ हैं?

सरदारः आप कौन हैं?

अश्वारोहीः जगदीशपुर से मैं आ रहा हूँ। पड़ाव पर मालूम हुआ महाराज घाट पर उतर रहे हैं। अभी उतरे नहीं?

सरदारः गंगा मैया की कृपा रही तो पल–भर में उतरे जाते हैं, देख रहे हैं वह नाव?

अश्वारोहीः क्यों?

सरदारः गोलियों की बौछार झेलते हुए आए हैं।

अश्वारोहीः गोलियाँ! तो हमारी फौज पड़ाव पर क्यों है?

सरदारः यह फौज के इस पार उतर जाने के बाद हुआ है।

अश्वारोहीः इधर ही आ रहे हैं– एक ओर हरकिशुन सिंह और दूसरी ओर––

सरदारः भीमा मल्लाह–मेरा मल्लाह। इधर आएँ सरकार, इधर।

(पानी की छप–छप। घायल कुँवर सिंह का प्रवेश। थोड़ा रुक–रुककर बोलते हैं, किन्तु स्वर में फिर भी दृढ़ता है।)

कुँवर सिंहः नाथू सरदार! तुम्हारा यह भीमा मल्लाह बहुत दिलेर है। इसी की बदौलत हम किनारे पर आ सके।

सरदारः महाराज, जो आपके कुछ काम आ सके, वह भाग्यवान है।

हरकिशुन सिंहः महाराज, आपको यहाँ कुछ देर रुकना जरूरी है।

कुँवर सिंहः खून देखकर डरते हो, हरकिशुन सिंह ?

हरकिशुन सिंहः दोनों चोटें गहरी हैं।

कुँवर सिंहः जाँघ का जख्म तो गहरा नहीं है। रक्त बंद हो गया। लेकिन बाँह को तुमने बेकार बाँधा।

हरकिशुन सिंहः दर्द ज्यादा है क्या?

कुँवर सिंहः यह हाथ बेकार हो गया हरकिशुन सिंह, हड्डी अलग हो गई है, माँस लटक रहा है। फिरंगी की गोली–।

हरकिशुन सिंहः यहाँ कोई जर्राह भी तो नहीं।

सरदारः सरकार! रात–भर यहाँ आराम करें। मैं वैद्य के लिए आदमी दौड़ाता हूँ।

कुँवर सिंहः नाथू सरदार, तुम लोग दिलेर हो, लेकिन अकल मोटी है। मैं और मेरी फौज के आदमी यहाँ रहेंगे, तो भोर होते ही गाजीपुर में फिरंगियों का स्टीमर आ पहुँचेगा।

सरदारः लेकिन आपको तकलीफ –

कुँवर सिंहः तकलीफ! नाथू सरदार, तुमने नशा किया है कभी?

सरदारः सरकार, अक्सर करते हैं।

कुँवर सिंहः मुझे भी यह एक साल से नशा है। फिरंगियों ने मुझे एक नया नशा दे दिया।

सरदारः महाराज की जीत की हर जगह जय–जयकार है।

कुँवर सिंहः जीत और हार क्या है? युद्ध भी एक हुनर है, कला है। आँख मूँदकर शत्रु से भिड़ जाना युद्ध कला नहीं। असली हुनर है शतरंजी चालों में मात–पर–मात देने में। इन फिरंगी जर्नैलों को छकाने में जो मजा आता है, उसके आगे सब नशे फीके हैं। तुम कहते हो, मैं घायल हूँ, मैं कहता हूँ, कलावंत अपना हुनर दिखाने में चोट खा जाए, तो उसकी वह चोट सिंगार हो जाती है।

भीमा–राजा कुँवर सिंह की दिलेरी जवानों को नीचा दिखाती है।

कुँवर सिंहः तुम कहते हो, मैं बहादुर हूँ। मैं मौत से डरता नहीं, मगर मौत को न्यौता भी नहीं देता। आगे बढ़ना भी जानता हूँ और मौके पर कदम पीछे भी हटा सकता हूँ। मेरी दिलेरी के पीछे दिमाग है, कोरा दिल ही नहीं है, हरकिशुन सिंह।

हरकिशुन सिंहः जी, आप थोड़ा लेट जाएँ। मैं डोली का बंदोबस्त करता हूँ।

कुँवर सिंहः डोली! मुझे मेरे बुढ़ापे की याद न दिलाओ, हरकिशुन सिंह। कितनी देर का रास्ता होगा?

हरकिशुन सिंहः जगदीशपुर का। यही कोई–

अश्वारोहीः (जो अब तक चुप खड़ा हुआ था) महाराज, घोड़े से रातभर का रास्ता है, डोली में देर लगेगी।

कुँवर सिंहः तुम कौन हो?

अश्वारोहीः मैं अभी जगदीशपुर से आया हूँ, महाराज ही के पास।

कुँवर सिंहः (बैठकर) तुम जगदीशपुर से आए हो मेरे पास, और अब तक चुपचाप खड़े ही रहे। तुम्हारा नाम?

अश्वारोही: विश्वनाथ सिंह। यह खरीता भी लाया हूँ।

कुँवर सिंह: किसने भेजा है?

विश्वनाथ: कुँवर अमरसिंह ने।

कुँवर सिंह: पढ़ो, हरकिशुन सिंह। अमर सिंह क्या लिखता है? विश्वनाथ तुम कुँवर सिंह को नहीं जानते हो? नालायकी के लिए गोली से उड़ा देता हूँ।

विश्वनाथ: खता हुई महाराज, मैं समझा, महाराज घायल हैं।

कुँवर सिंह: फिर वही बात। जिस भाई से दस महीने से बिछुड़ा हुआ हूँ, उसकी चिट्ठी पढ़ने के लिए अच्छा होने का इंतजार करूँ। जगदीशपुर वापस पहुँचने के लिए मैंने आजमगढ़ छोड़ा, गाजीपुर पर हमला नहीं किया और गंगा पार करने के लिए यह सब जाल रचा———

हरकिशुन सिंह: वह तो अब तक जगदीशपुर पहुँच गए होंगे।

कुँवर सिंह: कौन अमर सिंह? क्या यही लिखा है? पूरी बात कहो, हरकिशुन सिंह।

हरकिशुन सिंह: फिरंगी जगदीशपुर में नहीं हैं। कुमार अमर सिंह आज शाम ही दल–बल सहित वहाँ पहुँच रहे हैं। दक्खिन का सारा इलाका हाथ में आ गया है। आपके पहुँचने भर की देर है। भोजपुर की सारी रैयत जगदीशपुर के झंडे के नीचे फिर जमा हो रही है। आजमगढ़ की लड़ाई की चर्चा से महाराज का असर दिन–दूना, रात–चौगुना बढ़ रहा है।

कुँवर सिंह: और, फिरंगी?

हरकिशुन सिंह: आरा में ही हैं। जंगल की वजह से हिम्मत नहीं पड़ती, मगर हमले की तैयारी जोरों से कर रहे हैं। जासूसों ने खबर दी है।

कुँवर सिंह: क्या?

हरकिशुन सिंह: कर्नल लेगार्ड नामक अफसर एक–दो दिन में ही हमला करनेवाला है। जंगल के किनारे पर रसद का सामान पहुँचाया जा रहा है।

कुँवर सिंह: तो हम अभी रवाना होंगे। अभी कूच का डंका बजाओ। सबेरे तक पहुँचना है। तुम लोग जाओ, तैयारी करो। लेकिन ज़रा ठहरो, हरकिशुन!

हरकिशुन सिंह: जी।

कुँवर सिंह: कुहनी की चोट ने इस हाथ को बेकार ही नहीं किया है, सारे बदन में ज़हर फैलाना शुरू कर दिया है।

हरकिशुन सिंह: फौज को आगे बढ़ने दें। महाराज पीछे चलें।

कुँवर सिंह: तुम नहीं समझते हो, हरकिशुन सिंह। मेरे जगदीशपुर फौरन पहुँचने में ही हित है। जगदीशपुर के उजड़े महल मुझे बुला रहे हैं। मैं बेताब हूँ फिरंगी से बदला लेने के लिए। उसने मेरा मंदिर ढहाया। उसने मेरे भोजपुर की गरीब रैयत को सताया, जिसके अरमानों का मैं आईना हूँ। मैं नहीं रुक सकता।

हरकिशुन सिंह: लेकिन बदन में फैलता हुआ यह जहर? महाराज तो घोड़े पर देर तक चढ़ भी नहीं सकेंगे।

कुँवर सिंहः उसका इलाज है। जिस भुजा को फिरंगी की गोली जहरीला बना रही है, यह गलती हुई, सड़ती हुई भुजा है, इसे अलग करना होगा।

भीमाः महाराज!

हरकिशुन सिंहः यह आप क्या कह रहे हैं! महाराज!

कुँवर सिंहः तुम किसी हकीम से पूछ लो। गलते हुए अंग को अलग करना ही बुद्धिमानी है। और, फिर यह भुजा, जिसे फिरंगी गोली अपवित्र बना चुकी है– है तुममें कोई माई का लाल, जो एक ही वार में इस भुजा को अलग कर दे। तुम, नाथू सरदार? नहीं। तुम विश्वनाथ? तुम भी नहीं। भीमा? कोई नही। हरकिशुन सिंह, उठाओ खड्ग, मेरे मुँह से आह भी न निकलेगी।

हरकिशुन सिंहः मालिक पर हाथ उठाऊँ? महाराज, यह मुझसे न होगा।

कुँवर सिंहः अच्छा, तो यह काम मुझे ही करना पड़ेगा। (तलवार निकालते हुए) तुम न सही, मेरी प्यारी तलवार तो मेरा कहना मानेगी ही। इसकी तेज धार का पानी फिरंगी के लगाए धब्बे को झट से धो देगा।

विश्वनाथः तो क्या महाराज अपने हाथों–

कुँवर सिंहः–यहाँ नहीं, आओ मेरे साथ गंगा मैया के किनारे। उन्हीं की मझधार में यह गोली लगी थी, उन्हीं की धार में यह भुजा भी अर्पित करूँगा। आओ, घोड़ा भी यहीं ले आओ।

(कुँवर सिंह और उसके साथी जाते हैं। पदध्वनि। भीमा सरदार को रोक लेता है।)

भीमाः सरदार!

सरदारः भीमा, महाराज को रोकने की शक्ति मुझमें तो क्या, देवताओं में भी नहीं है।

(नेपथ्य से कुँवर सिंह की आवाज)

कुँवर सिंहः गंगा मैया, तुम्हारे इस बेटे ने बहुतेरी खून की नदियाँ बहाई हैं। आज एक अनोखी भेंट लो माँ, फिरंगी की गोली से अपवित्र किए इस शरीर को पवित्र करो। माँ, मुझे शक्ति दो। तुम्हारा यह जल हाथ में लेकर शपथ खाता हूँ, जब तक तन में जान है, यह देशसेवा में लगा रहेगा। तो यह भेंट लो, माँ, जय गंगा मैया की।

(तलवार से घायल हाथ को काट देते हैं।)

भीमाः राजा कुँवर सिंह की जय!

सरदारः रणबाँकुरे कुँवर सिंह की जय!

हरकिशुन सिंहः महाराज!

(घोड़ों के टापों का स्वर)

भीमाः (सभीत स्वर में) सरदार, सरदार, वह देखो।

सरदारः कैसी ऊँची लहर है!

भीमाः माँ गंगे उमड़ रही हैं।

सरदारः उमड़ो माँ, उमड़ो। ऐसी भेंट और कब मिलेगी तुम्हें माँ।

कुँवर सिंहः तुमने मेरी भेंट स्वीकार की माँ, माँ, माँ।

दूसरा दृश्य

(पाँच दिन बाद, जगदीशपुर में राजा कुँवर सिंह का महल। दूर से शहनाई की आवाज सुनाई दे रही है जो कभी–कभी बंद हो जाती है। कुछ लोग खड़े हैं। अमर सिंह का प्रवेश)

अमरसिंहः यहाँ शहनाई! ओह!

चोबदारः बंद करो यह शहनाई, महाराज को आराम की जरूरत है।

हरकिशुन सिंहः स्वयं महाराज की आज्ञा है कि शहनाई बजेगी।

अमर सिंहः कौन, हरकिशुन। तुम भी महाराज के हठ को नहीं रोकते।

हरकिशुन सिंहः आप जो उनके भाई हैं कुमार अमर सिंह, आपकी बात वे नहीं मानते, तो मैं भला–

अमर सिंहः उनका कहना है अमर सिंह न भी होता, तो भी मेरे भाइयों की कमी नहीं।

हरकिशुन सिंहः लेकिन आपकी दिलेरी का वे लोहा मानते हैं। गंगा के तट पर आपके जगदीशपुर पहुँचने की बात सुनी, तो यहाँ आने के लिए बेताब हो उठे।

अमर सिंहः हरकिशुन सिंह, मैं दंग हूँ। दादा ने यह लोहे का बदन, यह न थकने वाला दिमाग कहाँ से पाया। रात–ही–रात घोड़े पर चलकर यहाँ पहुँचे। कटी भुजा, घायल बदन, न नींद, न आराम– और यहाँ आते ही दूसरे दिन फिरंगियों से वह घमासान लड़ाई।

हरकिशुन सिंहः महाराज की यह सबसे बड़ी विजय थी। सैकड़ों गोरे सिपाही मारे गए। सारी रसद हमारे हाथ आई।

अमर सिंहः अब फिरंगी इस इलाके में मुँह न दिखा सकेंगे।

हरकिशुन सिंहः कर्नैल लेगार्ड के मारे जाने से फिरंगियों की इज्जत में भारी बट्टा लगा है।

अमर सिंहः दादा की यह सूझ अनोखी थी। पहले दुश्मन को जंगल में दूर तक घुस आने दो और फिर हठात् तीनों तरफ से छापा मारो। यह जंगल जगदीशपुर का कवच है।

(चोबदार का प्रवेश)

चोबदारः मालिक, पुरोहित जी पधारे हैं।

अमर सिंहः पुरोहित जी! आने दो। (चोबदार जाता है।) (पुरोहित जी का प्रवेश)

पुरोहित जीः कैसे हैं महाराज? मेरे पास आज्ञा पहुँची, तुरंत बुलाया है।

अमर सिंहः जगदीशपुर के महल पर कंपनी के झंडे के स्थान पर यह भारतीय झंडा देखकर संतोष हुआ, पुरोहित जी?

पुरोहित जीः एक दिन फिरंगियों के अत्याचारों को देखकर महा असंतोष हुआ था, महल के वृक्षों पर लाशें टाँगी गई थीं, मंदिर को बारूद से उड़ा दिया गया था। और आज? आप दोनों भाइयों के शौर्य और प्रताप से फिरंगी किंकर्त्तव्यविमूढ़ हैं।

अमर सिंहः लेकिन पुरोहित जी, मैं समझता हूँ, दादा, काल और उम्र के बंधनों से परे हैं।

पुरोहित जीः आपने ठीक सोचा था कुमार साहब, उनके यश के उत्तुंग शिखर तक काल की पददलित धूल नहीं पहुँच सकती।

हरकिशुन सिंहः इधर ही आ रहे हैं।

(कुँवर सिंह का प्रवेश। स्वर में शिथिलता)

पुरोहित जीः महाराजाधिराज कुँवर सिंह की जय हो। महाराज, इस अवस्था में आपको बाहर आना उचित नहीं।

कुँवर सिंहः कौन ? पुरोहित जी। आप आ गए ?

अमर सिंहः तोषक मँगाऊँ ?

कुँवर सिंहः मँगाओ। और पिता जी का दिया पुराना खड्ग भी। पुरोहित जी, देखा यह लिबास?

पुरोहित जीः महाराज का प्रताप द्विगुणित होकर चमक रहा है इस राजसी वेशभूषा में।

कुँवर सिंहः जानते हो हरकिशुन सिंह, आज मैंने यह ठाठ क्यों रचा है ? नहीं जानते ?

(तोषक लाया जाता है और चौकी पर रख दिया जाता है। कुँवर सिंह बैठते हैं।)

हरकिशुन सिंहः महाराज, थोड़ा लेट जाएँ।

कुँवर सिंहः यह लिबास लेटने के लिए नहीं है, हरकिशुन सिंह। अमर सिंह! अमर सिंह!

अमर सिंहः हाँ भैया।

कुँवर सिंहः मैंने कुछ और लोगों को भी बुलाया था।

पुरोहित जीः बाहर सब महाराज के दर्शन की प्रतीक्षा में हैं।

हरकिशुन सिंहः भोजपुर के सब परगनों के जेठ रैयत आए हैं।

कुँवर सिंहः बुलाओ उनको।

अमर सिंहः यहाँ ?

कुँवर सिंहः हाँ, यह महल जितना मेरा और तुम्हारा है, उतना ही उनका भी।

(चोबदार जाने को उद्यत)

कुँवर सिंहः और, चोबदार, उन्हें भी बुलाओ। क्या नाम था उस मल्लाह का, हरकिशुन?

हरकिशुन सिंहः नाथू सरदार।

कुँवर सिंहः हाँ, और वह जिसने नाव खींची थी।

हरकिशुन सिंहः भीमा मल्लाह।

कुँवर सिंहः दोनों को बुलाओ।

(चोबदार का प्रस्थान)

पुरोहित जीः महाराज, आपकी भुजा बहुत अधिक सूज रही है। आप विश्राम करें।

कुँवर सिंहः पुरोहित जी, आठ महीने पहले आपने मदिरा का एक घूँट पिलाया था।

पुरोहित जीः राजपूती आन का घूँट। विदेशियों से प्रतिशोध लेने की मदिरा का घूँट।

कुँवर सिंहः पुरोहित जी, नशा उतर रहा है। बुढ़ापे के बंधन जो टूक–टूक हो गए थे, फिर से जुड़ गए हैं।

अमर सिंहः (रुँधे गले से) दादा, दादा!

कुँवर सिंहः छी अमर सिंह! तुम्हारी आँखों में आँसू? आज तो मेरी विजय की बेला है, आज तो फिरंगी के अरमानों की कब्र पर मेरा सिंहासन जम रहा है। और तुम्हारी आँखों में आँसू? इधर देखो, रैयत, मल्लाह और ग्वाले!

(चोबदार के साथ जेठ रैयतों, मल्लाहों और ग्वालों का प्रवेश)

अमर सिंहः दादा कौन–सी शक्ति है, जिसने आपके प्राणों में अटूट साहस का तूफान फूँक दिया था? मुझे भी उसका वरदान दीजिए।

कुँवर सिंहः वह देखो अमर सिंह, जेठ रैयत, मल्लाह, किसान। यही है वह शक्ति जिसके बल पर कुँवर सिंह भोजपुर का राजा है। यही है वह तुरही, जिसकी आवाज़ मेरे गले से निकलती थी और फिरंगी भाग निकलते थे। अमर सिंह, नेह के बिना ज्योति कैसी, प्रजा के बिना राजा कैसा। इनका साथ न छोड़ना, भैया।

अमरसिंहः दादा, मैं समझ रहा हूँ।

कुँवर सिंहः शहनाई क्यों बंद कर दी? पुरोहित जी, तिलक लगाइए–लगाइए। आप लोग चुप हैं। कुँवर सिंह का राजतिलक और यह चुप्पी? हरकिशुन सिंह––हाँ––भीमा मल्लाह।

भीमाः महाराज,

कुँवर सिंहः तुम्हारे राजा का तिलक है और तुम गीत न सुनाओगे! आज मल्लाहों का वह गीत गाओ जिसके बल पर कुँवर सिंह राजा बना, वह जो धरती की आवाज़ है।

(भीमा और उसके साथी बहुत हल्के स्वर में गाते हैं।)

राजा कुँवर सिंह का राज,
कि जिसमें दीन बने सरताज
कि जिनके छूने में भी लाज।

कुँवर सिंहः और, और जोर से!

(स्वर तीव्र होता है।)

ताज पर इठलाता है आज,
राजा कुँवर सिंह का राज।

कुँवर सिंहः अमर सिंह

अमर सिंहः दादा।

कुँवर सिंहः सुनी वह आवाज़, गंगा मैया की आवाज़?

अमरः सुन रहा हूँ।

कुँवर सिंहः अमर सिंह, फिरंगी को छोड़ना मत।

अमर सिंहः नहीं छोड़ूँगा। मैं आरा पर हमला करूँगा, दादा।

कुँवर सिंहः कल ही।

अमर सिंहः कल ही दादा।

(स्वर तीव्र हो रहा है।)

कुँवर सिंहः गंगा मैया, तुम भुजा से संतुष्ट नहीं, तो लो।

पुरोहित जीः दीपक बुझ रहा है।

(स्वर मंद हो जाता है।)

अमर सिंहः दादा! दादा!

(पटाक्षेप और गाने की गूँज जारी।)

शब्दार्थ :– **बंदोबस्त**–प्रबंध, इंतजाम, **रैयत**–प्रजा, रियाया, जनता शासित, **सरताज**–नायक, सरदार, शिरोमणि, **इठलाना**–इतराना, मटकना, गर्वसूचक चेष्टा या भाव, **करतूत**–काम, कला, **दिलेर**–बहादुर, साहसी, शूरवीर, **जर्राह**–चीर फाड़ का काम करनेवाला, फोड़ो आदि को चीरकर चिकित्सा करनेवाला, **फिरंगी**–गोरे, अंग्रेज, **हुनर**–कारीगरी, कला, फन, **बेताब**–जो बैचेन हो, विकल, व्याकुल, **मझदार**–नदी के मध्य की धारा, बीच धारा, किसी काम का मध्य, **खरीता**–वह बड़ा लिफाफा जिसमें किसी बड़े अधिकारी आदि की ओर से मातहत के नाम आज्ञापत्र हो, **लिबास**–पहनावा, पोशाक, **चोबदार**–ऐसे सेवक प्रायः राजों, महाराजों और बहुत से रईसों की ड्यौढ़ियों पर समाचार आदि ले जाने और ले आने तथा इसी प्रकार के दूसरे कामों के लिये रहते हैं,सवारी या बारात आदि में ये आगे–आगे चलते हैं, **प्रतिशोध**–बदला।

अभ्यास

पाठ से

1. इस एकांकी की घटना किस समय की है?
2. कुँवर सिंह, विश्वनाथ पर क्यों नाराज हुए ?
3. भीमा अपने सरदार से बाबू वीर कुँवर सिंह के बारे में क्या कहता है ?
5. कुँवर सिंह ने अपनी बाँह काटकर गंगा जी को क्यों अर्पित कर दी ?
6. बच्चे–बच्चे के जबान पर चढ़े कुँवर सिंह के गीत का भाव क्या है ?
7. आप यह कैसे सिद्ध करेंगे कि सन् 1857 के स्वतंत्रता–संग्राम में सभी वर्ग के लोगों ने भाग लिया था?

8. कुँवर सिंह ने वह कौन–सी शक्ति बताई जिसके बल पर वे भोजपुर के राजा बने थे?
9. किसकी बदौलत कुँवर सिंह किनारे पर आ सके और कैसे ?
10. कुँवर सिंह के अनुसार युद्ध की क्या हुनर (कला) है ?
11. अंग्रेजों ने मेरे भोजपुर के गरीब रैयतों को सताया, जिनके अरमानों का मैं आईना हूँ'' संवाद के द्वारा एकांकीकार कुँवर सिंह के किन भावों को व्यक्त करना चाहता है ?
12. अनोखी भेंट क्या है और कुँवर सिंह भेंट किसे देते हैं ?
13. कुँवर सिंह, अमर सिंह का राजतिलक करते हुए क्या सीख देते हैं और क्यों ?
14. नावों को गंगा जी में डुबा देने के लिए महाराज कुँवर सिंह ने क्यों आदेश दिया था?
15. महाराज कुँवर सिंह को अँग्रेजों के विरुद्ध युद्ध करने में इतनी सफलता किनके कारण मिली ?
16. महाराज कुँवर सिंह बहुत अधिक बीमार होने पर भी जगदीशपुर जाने के लिए क्यों बेताब थे ?
17. कुँवर सिंह ने भीमा से कहा था, ''मुझे भी एक साल से नशा है।'' उन्हें कैसा नशा था?
18. इन पंक्तियों का अर्थ प्रसंग देकर लिखिए–
    क. मैं मौत से डरता नहीं पर मौत को न्यौता भी नहीं देता।
    ख. कलावंत अपना हुनर दिखाने में चोट खा गया तो उसकी वह चोट सिंगार हो जाती है।
    ग. नेह के बिना ज्योति कैसी, प्रजा के बिना राजा कैसा ?

पाठ से आगे

1. आपने, 1857 की क्रांति अथवा सिपाही विद्रोह के बारे में इतिहास की पुस्तकों में पढ़ा होगा। इस क्रांति में भाग लेनेवाले प्रमुख सेनानियों की एक सूची बनाइए।
2. इस एकांकी को पढ़ते समय कौन सा पात्र आपको अधिक प्रभावित करता है और क्यों?

9LFJHH

3. आपके आस–पास वैसे लोग रहते होंगे जिन्होंने स्वतंत्रता आन्दोलनों में भाग लिया होगा उनके बारे में जानकारी प्राप्त कर एक लेख तैयार कीजिए।
4. मैं मौत से नहीं डरता, मगर मौत को न्योता भी नहीं देता। आगे कदम बढ़ाना भी जानता हूँ और मौके पर कदम पीछे भी हटा सकता हूँ। मेरी दिलेरी के पीछे दिमाग है, कोरा दिल ही नहीं है। इस कथन से कुँवरसिंह के व्यक्तित्व के किस पहलू का पता चलता है? साथियों से बातचीत कर अपनी समझ को लिखिए।
5. एकांकी में मल्लाह, ग्वाले जैसे किसी जाति सूचक शब्दों का प्रयोग हुआ है। क्या ऐसा प्रयोग होना चाहिए और क्यों? कक्षा में चर्चा कर अपने विचारों को लिखने का प्रयास कीजिए।

भाषा से

1. पाठ में बहुत सारे मुहावरों का प्रयोग हुआ है जैसे लोहा मानना– श्रेष्ठता स्वीकार

9LPFYJ

करना, आँखों में धूल झोंकना–देखते–देखते धोखा देना, अकल मोटी होना–कम बुद्धि, बदन में तूफान फूँकना– बेहद ऊर्जावान होना, अमृत की घूँट पीना–अमर होना, मौत को न्योता देना–जान बूझ कर मृत्यु को आमंत्रण देना, इन मुहावरों का स्वतंत्र रूप से वाक्य में प्रयोग कीजिए और पाठ से अन्य मुहावरों को खोज कर लिखिए।

2. पाठ में ध्वन्यात्मक शब्दों का प्रयोग हुआ है, जैसे पानी के लिए छप–छप वैसे ही निम्नलिखित सन्दर्भों के लिए ध्वन्यात्मक शब्द लिखिए –
   - तेज हवा का प्रवाह ––––––––––––––
   - नदी की धारा ––––––––––––––
   - पैरों की ध्वनि ––––––––––––––
   - खाली हवेली या घर ––––––––––––––
   - आग की लपटें ––––––––––––––
   - अँधेरा सूना रास्ता ––––––––––––––
3. पाठ में प्रयुक्त जातिवाचक और भाववाचक संज्ञा का चुनाव कीजिए–
   ज़हरीला, दिलेरी, हाहाकार, कलाकारी, हरकारा, सरदार, सरदारी, दिलेर, कलावंत, जर्राह, शतरंजी, जासूसी, बेताबी, ज़हर, नालायकी।
4. पाठ में प्रयुक्त 'भला' शब्द के कितने अर्थ निकलते हैं। आप ऐसे दो वाक्य बनाइए जिनसे उनके अर्थ का अंतर स्पष्ट हो जाए।
5. इस एकांकी की कथा को संक्षेप में लिखिए।

योग्यता विस्तार

9LYC17

1. 1857 की क्रांति से जुड़े भारत के महत्वपूर्ण स्थलों को साथियों के सहयोग से नक्शे में पहचान कर कक्षा में प्रदर्शित कीजिए।
2. नाना साहब, तात्या टोपे, बहादुर शाह जफर, वीर नारायण सिंह, लक्ष्मीबाई, बेगम हजरत महल की तस्वीरों के साथ उनका संक्षिप्त जीवन परिचय लिख कर कक्षा में साझा कीजिए।
3. अमर सिंह और कुँवर सिंह दो भाई हैं। भाइयों के संबंध पर आधारित कुछ कहानियों को खोजिए और उस पर कक्षा में चर्चा कीजिए। जैसे प्रेमचन्द लिखित बड़े भाई साहब।
4. छत्तीसगढ़ में 1857 के संग्राम के नायक वीर नारायण सिंह थे। इनके संबंध में जानकारी लेकर कक्षा में सुनाइए।

पाठ 14

आतिथ्य

– श्री भदंत आनंद कौशल्यायन

भारतीय संस्कृति में अतिथि सत्कार की परंपरा को पारिवारिक जीवन के अटूट हिस्से के रूप में देखा जाता है। परन्तु प्रस्तुत आत्मकथा में भदंत आनंद कौशल्यायन ने एक भ्रमणशील व्यक्ति के रूप में एक अपरिचित से गाँव में अपने कटु – मधुर भावानुभूतियों को सहज भाषा में रखा है। एक थका मांदा व्यक्ति सांझ ढलने के पूर्व अपरिचित से भू–भाग में रहने का आश्रय ढूँढने की जल्दबाजी में होता है ऐसा ही कुछ भाव लेखक की यात्रा के पड़ाव को पाने की अपेक्षा और उत्साह को टूटने को लेकर है एक तिरस्कार की चेतना उसके मन में है। लेकिन उसी गाँव में सराय में एक निर्बल से व्यक्ति की आत्मीयता और सेवा भाव ने लेखक को मानवीय अनुभूतियों को समझने के लिए एक नया नजरिया दिया है।

जैसे जीवन पथ पर, वैसे ही साधारण सड़क पर आदमी के लिए अकेले चलना कठिन है। कोई ठहरकर किसी पीछे आनेवाले का साथी हो लेता है, कोई चार कदम तेज चलकर आगे जानेवाले का। लेकिन मुझे उस दिन किसी को आवाज़ देने की भी फुर्सत नहीं थी। किसी साथी की आशामयी प्रतीक्षा में मैं जरा दम लेने के बहाने भी न ठहर सकता था। कारण, उस दिन मेरे सिर पर भूत सवार था। मैंने निश्चय किया था अपने चलने के सामर्थ्य की परीक्षा करने का।

रास्ते चलते प्यास लगती। कुछ देर ठहरकर पानी पीना चाहिए–साधारण नियम है। मैं इस नियम का पालन कहीं नहीं करता। पानी मिलते ही पी लेता और चल देता।

रास्ते चलते से मैं पूछता, ''क्यों भाई, आगे कोई ठहरने लायक गाँव है ?'' लोग किसी गाँव का नाम बतलाते। मैं वहाँ न ठहरता। यही लालच था कि दो–तीन किलोमीटर और हो जाए। आगे एक कस्बे का पता लगा। सोचा, आज वहाँ तक तो जरूर पहुँचेंगे। रात हो चली, पर तब उस कस्बे तक पहुँचने की धुन थी।

किसी ने बताया कि उस कस्बे में एक हाई स्कूल है; उसके हेडमास्टर भले आदमी हैं। यह सुनकर मैंने सोचा कि

यदि मिलेगा तो गरम–गरम पानी से पैर धोऊँगा। हो सकता है, गरम तेल भी मलने को मिल जाए और कहीं गरम दूध मिल गया, तो क्या कहना। लगभग 5–6 किलोमीटर का सफर तय कर चुकने पर थककर चूर हो जाने पर, एक बार बैठकर फिर जल्दी से उठने की आशा मन में न रहने पर, ऐसी इच्छा क्या अनाधिकार चेष्टा समझी जाएगी? जो हो, उस रात मैं ऐसा ही हिसाब लगाता हुआ उन हेडमास्टर के बँगले पर जा पहुँचा। बँगला कस्बे के बाहर था। हेडमास्टर साहब के बँगले पर पहुँचकर मैंने वैसे ही दस्तक दी, जैसे कोई अपने घर के दरवाजे पर देता है। हेडमास्टर साहब! हेडमास्टर साहब! कहकर पुकारा। दरवाज़ा खुला। अंदर से एक सज्जन लालटेन लिए हुए निकले। मुझे उस समय अपनी पड़ी हुई थी। मैं उनकी शक्ल–सूरत, कद को क्या निरखता! वे ही मेरी शक्ल को अच्छी तरह पहचानने की कोशिश करते हुए बोले, ''क्या है?''

''मैं एक विद्यार्थी हूँ, ऐतिहासिक महत्व के स्थानों को देखने के विचार से पैदल यात्रा कर रहा हूँ। आज की रात, आज्ञा हो, तो आपके यहाँ काटना चाहता हूँ।''

आशा के ठीक विपरीत जवाब मिला, ''हर्गिज नहीं।'' मेरी सब अक्ल गुम हो गई। अपने को सँभालते हुए मैंने निवेदन किया, ''यहाँ कोई परिचित नहीं, रात अँधेरी है। पहली बार इस बस्ती में आया हूँ। कहाँ जाऊँ?''

''यहाँ आस–पास कई चोरियाँ हो गई हैं। हम अपने घर किसी को नहीं ठहरने देते।''

''आपके बरामदे में पड़े रहने की आज्ञा दे दीजिए। सुबह होते ही मैं अपना रास्ता लूँगा।''

''नहीं, ऐसा नहीं हो सकता। बस्ती में एक धर्मशाला है, वहाँ चले जाओ।''

''मैं आज बहुत चला हूँ। थककर चूर हो रहा हूँ। एक कदम भी और चलने की सामर्थ्य नहीं है। फिर इस अँधेरे में कैसे, कहाँ धर्मशाला को खोजता फिरूँ?''

''जा रे, इसे धर्मशाला का रास्ता दिखा आ!'' कहकर हेडमास्टर ने एक आदमी को मेरे साथ कर दिया।

थकावट के दुःख से भी अधिक दर्द था मर्माहत अभिमान का। दो–चार कदम चल मैंने उस आदमी से किंचित् रोषभरे शब्दों में कहा, ''जाओ, तुम लौट जाओ। जो बीतेगी सहेंगे। धर्मशाला का रास्ता स्वयं ढूँढ़ लेंगे।''

आदमी शायद यही चाहता भी था। वह लौट गया और मैं अपनी समझ में धर्मशाला की ओर चल दिया, बिना यह जाने कि धर्मशाला किस ओर है। पूरब घूमा, पश्चिम घूमा, दक्षिण घूमा, कहीं कुछ पता न लगा। काफी देर इधर–उधर भटकते रहने पर एक टिमटिमाता हुआ चिराग दिखाई दिया। सोचा, वहाँ कोई होगा, चलकर पूछा जाए; धीरे–धीरे पहुँच ही गया। देखा–दीपक का प्रकाश खिड़की में से आ रहा है। दरवाजे पर फिर दस्तक देनी पड़ी। दरवाज़ा खुलते ही आवाज़ आई, ''क्या है?'' जब तक मैं उत्तर दूँ, मुझे सुनाई पड़ा, ''अरे! तुम फिर आ गए?'' मैंने गर्दन उठाई। वही हेडमास्टर साहब थे, जिनके घर से थोड़ी ही देर पहले अपना–सा मुँह लेकर विदा हुआ था। बात यह थी कि इधर–उधर घूमते मुझे दिशा–भ्रम हो गया और मैं

कोल्हू के बैल की तरह, जहाँ से चला था वहीं फिर आ पहुँचा।

''दौड़ो! दौड़ो! देखो, इसे अभी निकाला था, अब यह पिछवाड़े की तरफ से आया है।'' हेडमास्टर साहब की चिल्लाहट सुनकर दो ही चार मिनट में आस–पास के लोगों ने मुझे घेर लिया। कोई कहता, ''पुलिस को बुलाओ।'' कोई कहता, ''नहीं, थाने में ही ले चलो।'' जो कुछ न कहता, वह चार चपत लगाने का प्रस्ताव तो कर ही देता। मेरी अक्ल हैरान थी, क्या करूँ, क्या न करूँ। बुरा फँसा था। कैसे विश्वास दिलाता कि मैं चोर नहीं हूँ। लोग कहते, देखिए न अंधेर है, अभी–अभी निकाला था, फिर इतनी जल्दी हिम्मत की है। उन्हें क्या मालूम, जो उनके लिए अंधेर है, वही मेरे लिए महाअन्धेर है। विपत्ति पड़ने पर, कहते हैं, अक्ल मारी जाती है। लेकिन जब आदमी को और कोई सहारा नहीं रहता, तब बुद्धि ही उसके काम आती है। तब मैंने स्वयं को दीवार के सहारे खड़ा करने की कोशिश करते हुए कहा, ''देखिए, मैं दूर से चलकर आया हूँ। थकान से चकनाचूर हूँ। आप मुझे बैठने के लिए जगह दीजिए और फिर ठंडे पानी का गिलास। फिर बैठकर कृपया मेरी बात सुन लीजिए। यदि आप लोगों को विश्वास हो जाए कि मैं चोर नहीं हूँ, तो कृपया एक बार फिर अपना आदमी दे दीजिए, मुझे धर्मशाला का रास्ता दिखा देने के लिए और विश्वास न हो तो थाने में भेज दीजिए या और जो चाहे कीजिए। वे लोग बुरे आदमी न थे। और, बुरे आदमी में क्या भलाई नहीं होती ? मेरी बात सुन ली गई। एक स्टूल बैठने के लिए दिया गया और पानी का एक गिलास भी। मैंने स्थिरता से बैठकर हल्के–हल्के पानी पिया और अपना थैला खोलकर उसमें से दो चिट्‌ठियाँ निकालीं। दोनों परिचय पत्र थे। एक था ग्वालियर पुरातत्व विभाग के निदेशक के नाम और दूसरा निज़ाम हैदराबाद के प्रधान मंत्री महोदय के नाम। दोनों से मेरा साधारण परिचय था और यदि वे मुझ अज्ञानी यात्री की कुछ सहायता कर सकें तो धन्यवाद के दो शब्द।

हाँ, तो मैंने परिचय पत्र दिखाते हुए कहा, ''यदि ये पत्र किसी चोर के पास हो सकते हैं तो मैं चोर हूँ और यदि इन पत्रों के रखने वाले के चोर न होने की कुछ संभावना है तो मैं चोर नहीं हूँ।'' लोगों की आपस में फुसफुस हुई और चाहे मैं कोई भी होऊँ निश्चय हुआ, मुझे धर्मशाला ही भेजने का। वही आदमी मेरे साथ कर दिया गया और उसके पीछे–पीछे मैं ऐसे चलने लगा जैसे अखाड़े में हारा हुआ कोई पहलवान। धर्मशाला पहुँचा तब पता लगा कि दरवाज़ा बंद हो चुका है और अब किसी तरह नहीं खुल सकता।

''यही धर्मशाला है'', कहकर वह आदमी मुझे छोड़कर चलता बना। अब क्या करूँ–कहाँ जाऊँ? धर्मशाला में बाहर की ओर एक बरामदा था। मैंने उसी में रात काटने की सोची। पास में कपड़ा काफी नहीं था। तो क्या? सर्दी जोरों से पड़ रही थी। तो क्या ? और कोई चारा नहीं था। अँधेरे में अंदाज करके मैं एक कोने में बैठ जाना चाहता था कि आवाज़ आई, ''कौन है?'' मैंने कहा, ''मुसाफिर।''

''इतनी रात गए आए हो?''

''हाँ भाई, आज ऐसी ही बीती।''

''इधर आ जाओ, उधर हवा लगेगी।'' कहते हुए उस अपरिचित आवाज़ ने मुझे अपने पास के कोने में बुला लिया – ''तुम कहाँ से?''

"तुम कहाँ से?" मैंने पूछा

"हम तो भिखमंगे हैं, दिखाई नहीं देता।"

अंधे भिखमंगे के पास लेटने का जीवन में पहला अवसर था। "कितने पैसे मिले, क्या खाने को मिला?" .... कुछ ऐसे ही सवाल मैंने पूछे। लेकिन मैं तो व्यग्र था अपनी सुनाने के लिए, उसे सुननेवाला मिला था पहले–पहले मुझे वही अंधा।

अथ से इति तक मैंने कह सुनाई। उस सहानुभूति के साथ, जो एक दुखिया को दूसरे दुखिया से होती है, वह अंधा मेरी बात सुनता रहा। राम कहानी खत्म हुई, तब अँधेरे में टटोलते हुए उसने पूछा, "कहाँ हैं तुम्हारी टाँगें? उन्हें जरा दबा दूँ।"

मैंने कहा "न यार, रहने दो।"

"अच्छा, यह बताओ तुम्हारे पास कोई कपड़ा है?"

"है।"

"कहाँ? मुझे दो।"

मेरे पास वही एक साफा था, गज–डेढ़ गज का टुकड़ा। मैंने दे दिया। अंधे ने अपने हाथों से मेरी टाँगों को टटोला और नीचे से ऊपर तक कसकर बाँध दिया। उसने कहा, "अब थोड़ी देर ऐसे ही बैठे रहो।" गहरी सहानुभूति दिखाने वाले की आज्ञा का उल्लंघन आसान नहीं होता। मैं मूर्तिवत् बैठा रहा। थोड़ी देर बाद उसने मेरी टाँगें खोल दीं। रुका हुआ खून तेजी से दौड़ता मालूम हुआ, थकावट जाती रही। बातें करते–करते नींद आ गई। सुबह उठा, तब देखा–मेरा साथी मुझसे पहले ही उठकर चला गया था।

शब्दार्थः– **आतिथ्य**– आवभगत, खातिरदारी, **ऐतिहासिक**– इतिहास संबंधी. **व्यग्र**– व्याकुल, **उल्लंघन**– नियम या विधि विरुद्ध, **किंचित**– अल्प, थोड़ा, तनिक, **मर्माहत**– मर्म को चोट पहुंचना, हृदय की पीड़ा, **पुरातत्व**– प्राचीनकाल संबंधी विद्या, **अखाड़ा**– कुश्ती लड़ने की जगह, मल्ल भूमि, **चकनाचूर**– चूर–चूर, खंड–खंड।

अभ्यास

पाठ से

1. लेखक के द्वारा की गई पदयात्रा का कारण क्या था ?
2. हेडमास्टर जी ने लेखक को अपने घर पर न ठहरने की क्या वजह बताई ?
3. थकावट के दुःख से भी अधिक दर्द था मर्माहत अभिमान का' लेखक द्वारा इस तरह कहे जाने का क्या कारण हो सकता है?
4. थके हुए लेखक के मन में हेडमास्टर जी के घर ठहरने को लेकर कौन–कौन सी

भावनाएँ उठ रही थीं ?

5. हेडमास्टर से मिलने से पूर्व और उसके बाद में लेखक के मनोभावों में क्या परिवर्तन हुआ?
6. परिचय–पत्र देखकर हेडमास्टर के विचारों में किस प्रकार का परिवर्तन हुआ होगा? सोचकर लिखिए।
7. लेखक चोर नहीं था, इस बात का विश्वास दिलाने के लिए उसने क्या किया?
8. लेखक के अनुसार जीवन के पथ पर अकेले चलना क्यों कठिन है ?
9. ''गहरी सहानुभूति दिखाने वाले की आज्ञा का उल्लंघन आसान नहीं होता'' इस पंक्ति के द्वारा लेखक अपने दुखिया भिक्षुक मित्र के किन भावों को बताना चाहता है?
10. ''उन्हें क्या मालूम कि जो उनके लिए अंधेर है, वह मेरे लिए महाअंधेर है।'' लेखक ने महाअंधेर किसे कहा है?

पाठ से आगे

9HH44H

1. पाठ में लेखक ने लिखा है कि 'बुरे आदमी में क्या अच्छाई नहीं होती ? अर्थात हर व्यक्ति में अच्छाई और बुराई संभवतः दोनों होती है। आप स्वयं की बुराई और दूसरों की अच्छाई पर समूह में बात करते हुए बातचीत के प्रमुख बिन्दुओं का लेखन कीजिये।
2. जब सभी लेखक की अवहेलना कर रहे थे तब धर्मशाला के गलियारे में भिक्षुक ने उसकी सहायता और सेवा की। भिक्षुक के इस व्यवहार को पढ़ते–समझते हुए आपके मन में कौन से भाव उत्पन्न हुए? उसे एक अनुच्छेद में लिखिए।
3. पाठ के अनुसार लेखक को लोगों ने रात में चोर समझकर घेर लिया। अपने आप को इस समस्या से उबारने के लिए उसे जब कोई सहारा नहीं मिला तब उसकी अपनी ही बुद्धि काम आई है। आप इस तरह की परिस्थिति में होंगे तो क्या करेंगे? अनुमान कर के और अपने मित्रों से बात कर लिखिए।

भाषा से

9HQZ65

1. **'अनधिकार'** शब्द **'अन्'** **उपसर्ग** के साथ **'अधिकार'** **शब्द** के मेल से बना है जिसका अर्थ होता है 'बिना अधिकार के'। आप भी 'अन्' **उपसर्ग** से बने दस शब्दों का निर्माण कीजिये।
2. **राम कहानी सुनाना, कोई चारा न होना, अपना रास्ता लेना, अथ से इति तक, अपना**

सा मुँह लेकर रह जाना, अक्ल गुम हो जाना, कोल्हू का बैल आदि मुहावरे हैं, जो इस पाठ में आए हैं। इन मुहावरों के अर्थ लिखिए और वाक्यों में प्रयोग भी कीजिये।

3. (क) एक 'स्टूल' बैठने के लिए दिया गया और पानी का एक गिलास।

   (ख) जब आदमी को और कोई सहारा नहीं रहता तब बुद्धि ही उसके काम आती है।

   उपर्युक्त दोनों वाक्यों में **'और'** शब्द के अलग–अलग अर्थ हैं। प्रथम वाक्य में 'और' का अर्थ **जुड़ाव** जबकि दूसरे में **'अन्य'** है। आप भी इसी तरह 'और' शब्द के भिन्न–भिन्न प्रयोग करते हुए पाँच–पाँच अन्य वाक्यों की रचना कीजिए।

4. (1) सुबह होते ही मैं अपना रास्ता लूंगा।

   (2) मैं धीरे–धीरे पहुँच ही गया।

   पाठ से उद्धृत उपर्युक्त उदाहरणों में **'ही'** निपात का प्रयोग हुआ है। कुछ अव्यय शब्द वाक्य में किसी शब्द या पद के बाद लगकर उसके अर्थ में विशेष प्रकार का बल ला देते हैं, इन्हें 'निपात' कहा जाता है। इसी तरह **भी, मात्र, तक, तो, भर** आदि भी निपात है। आप भी इनका प्रयोग करते हुए वाक्य बनाइए।

5. प्रातःकाल अपने साथी को न पाकर लेखक के मन में क्या विचार उठे होंगे? कल्पना करके लिखिए।

6. लेखक के स्थान पर यदि आपके साथ यह घटना घटित होती तो आप इसे अपने किसी मित्र सहेली को पत्र के रूप में कैसे लिखते/लिखतीं ?

योग्यता विस्तार

9HZV7S

1. यात्रा वृतांत साहित्य की एक विधा है। इस विधा के बारे में शिक्षक से चर्चा कर समझ बनाइए और उस पर एक संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।

2. आतिथ्य को भारतीय संस्कृति में महान दर्जा प्राप्त है। आपके यहाँ भी अतिथि आते होंगे उनके साथ हम क्या व्यवहार करते हैं और उनके साथ कैसा व्यवहार होना चाहिए? कक्षा में चर्चा लिखिए।

3. यात्रा में कई तरह के अनुभव होते हैं। अपनी किसी यात्रा का अनुभव लिखिए और कक्षा में सुनाइए।

पाठ 15

मनुज को खोज निकालो

– श्री सुमित्रानंदन पंत

9N9R9F

श्री सुमित्रानंदन पंत हिन्दी काव्य जगत में प्रकृति के सुकुमार कवि नाम से प्रसिद्ध हैं। प्रकृति से मानवता की खोज उनकी कविता का मुख्य विषय है। आज मनुष्य ने अपने बीच अनेक दीवारें खड़ी करके मनुष्य–मनुष्य को बहुत सारे वर्गों में बाँट दिया है। इन विभिन्न वर्गों में बँटे हुए मनुष्यों में से कवि सच्चे मनुष्यों की खोज करना चाह रहा है। वे मनुष्य ऐसे हों जो धर्म, जाति, देश, भाषा आदि के भेद से ऊपर उठे हों।

आज मनुज को खोज निकालो।
जाति, वर्ण, संस्कृति, समाज से,
मूल व्यक्ति को फिर से चालो।
देश–राष्ट्र के विविध भेद हर,
धर्म–नीतियों में समत्व भर,
रूढ़ि–रीति गत विश्वासों की
अंध–यवनिका आज उठा लो। आज मनुज को खोज निकालो।
भाषा–भूषा के जो भीतर,
श्रेणि–वर्ग से मानव ऊपर,
अखिल अवनि में रिक्त मनुज को
केवल मनुज जान अपना लो। आज मनुज को खोज निकालो।
राजा, प्रजा, धनी और निर्धन
सभ्य, असंस्कृत, सज्जन, दुर्जन
भव–मानवता से सबको भर,
खंड–मनुज को फिर से ढालो। आज मनुज को खोज निकालो।

शब्दार्थ– **अखिल**–संपूर्ण, समग्र, **अवनि**–पृथ्वी, जमीन, **विविध**–बहुत प्रकार का, अनेक तरह का, भाँति भाँति का, **समत्व**–समता, बराबरी यवनिका–नाटक का पर्दा, **दुर्जन**–दुष्ट जन, खल, खोटा आदमी, **असंस्कृत**–असभ्य, बिना सुधारा हुआ, **रीति**–कोई कार्य करने का ढंग, प्रकार, तरह।

अभ्यास

पाठ से

1. मूल व्यक्ति को कवि ने कहाँ से खोज निकालने को कहा है ?
2. कवि ने मानव समाज में फैली किन–किन विविधताओं का उल्लेख किया है ?
3. मूल व्यक्ति से कवि का क्या तात्पर्य है ?
4. आज समाज में व्यक्ति–व्यक्ति के बीच किस प्रकार के भेद उत्पन्न हो गए हैं ?
5. इस कविता में कवि ने 'खंड मनुज' का प्रयोग किया है। इससे आप क्या समझते है
6. कवि किस अंध यवनिका को उठाने की बात कह रहा है ?
7. वर्गों में बँटा हुआ मनुष्य किस प्रकार पूर्ण मनुष्य बन सकता है ?
8. रुढ़ि रीतिगत विश्वासों को मिटा देने की बात कवि ने क्यों की है ?

पाठ से आगे

9NIMB3

1. आप की दृष्टि में एक आम आदमी की क्या विशेषताएँ होनी चाहिए। चर्चा कर लिखिए।
2. भाईचारे की भावना को विकसित करने पर पाठ में बार–बार बल दिया गया है। भाईचारे की भावना के विकास में बाधक तत्व कौन–कौन से हो सकते हैं? मित्रों और शिक्षकों से बातचीत कर लिखिए।
3. मनुष्य और मनुष्य के बीच जो भी भेद बताए गए हैं वे भाषा, वेशभूषा, उपासना के आधार पर बताए गए हैं जो केवल बाह्य तत्व हैं, जबकि मूल रूप से सभी मनुष्य एक हैं। कैसे ? इस विषय पर अपनी सहमति और असहमति को कारण सहित लिखिए।
4. हमारे देश में भाषा के दुराग्रह ने एक मनुष्य को दूसरे का दुश्मन बना दिया है। कैसे? शिक्षक तथा साथियों से चर्चा कर लिखिए।
5. हमारे समाज में फैली रुढ़ियों और अंधविश्वासों ने किस प्रकार लोगों में एक–दूसरे के प्रति घृणा के भाव पैदा कर दिए हैं ? स्वयं के अनुभव के आधार पर उदाहरण के माध्यम से अपनी बात को रखिए।
6. इस कविता में एक सच्चे मनुष्य को खोज निकालने की बात कही गई है। एक सच्चे मनुष्य को लेकर आपके मन में क्या कल्पना है? दस वाक्यों में लिखिए।

भाषा से

1. पाठ में प्रयुक्त इन शब्दों के विलोम अर्थ को प्रगट करने वाले शब्दों को ढूँढिए मनुज, विविध, रीति, अवनि, सभ्य, रिक्त, अपनाना, खंड, असंस्कृत, जाति, वर्ण, विश्वास, भीतर, ऊपर, राजा, धनी।

9NSICQ

2. कविता में बहुत से समान रूप से उच्चारित शब्दों का प्रयोग हुआ है वाक्य प्रयोग द्वारा आप इनके अर्थ को स्पष्ट कीजिए –
3. निम्नलिखित के दो–दो समानार्थी शब्द लिखिए–

   भव, राजा, धनी, निर्धन, मानव, अवनि, खोजना, निर्धन,अखिल।
4. भाषा–भूषा एक सामासिक शब्द है, जिसके दोनों शब्द संज्ञा हैं। बीच में 'और' का लोप है। इसी प्रकार के और चार शब्द कविता में से छाँटिए।
5. इन शब्दों को शब्दकोश में दिए गए क्रम के अनुसार लिखिए।

   समत्व, भूषा, भव, असंस्कृत, विविध, विश्वास, अंध, वर्ण, अवनि, अखिल।
6. निम्नलिखित समानोच्चारित शब्दों का प्रयोग अपने वाक्यों में इस प्रकार कीजिए कि उनका अर्थ स्पष्ट हो जाए–

   चिता/चीता, राज/राजा, अंध/अंधा, भव/भाव, जन/जान।

- 'मनु' शब्द में 'ज' प्रत्यय जोड़कर 'मनुज' शब्द बना है, जिसका अर्थ है 'मनु से जन्मा।

योग्यता विस्तार

1. आपके आस–पास के समाज में ढेर सारी रुढ़ियाँ और अंधविश्वास प्रचलित हैं। वे कौन–कौन सी रुढ़ियाँ और अंधविश्वास हैं? उन्हें खोज कर विस्तार से एक सूची बनाएँ। वे क्यों प्रचलित हैं और लोग अपने जीवन में उन्हें क्यों प्रश्रय देते हैं? इसके कारणों का उल्लेख अपने शिक्षकों, बड़े–बजुर्गों, और अभिभावक से बात कर लिखिए।

9P2EED

2. कवि पंत को प्रकृति का सुकुमार कवि कहा जाता है। पंत जी की प्रकृति से संबंधित कोई एक रचना खोजिए और बालसभा में उसका सस्वर गायन कीजिए।

9PBAG1

पाठ 16

बरसात के पानी ले भू–जल संग्रहण

–लेखक मंडल

पानी बिना कोनो परानी के काम नइ चलय। एकरे कारण कहे जाथे–'जल हे त जीवन हे।' पानी ह त ओतकेच के ओतके हे, फेर एकर बउरइया दिन–के–दिन बाढ़त जावत हें। पानी ह कमती परे ल धर ले हे। अब पानी के एक बूँद ल अकारथ गँवाना जीव–जंतु ल बिपत म फँसाना आय। पानी के बूँद–बूँद ल सकेल के रखना जरूरी हे।

पानी के सकेलना ल 'जल संग्रहण' कहे जाथे। 'जल संग्रहण' बर कइ ठन उदिम ये पाठ म बताय गेहे। धरती के भविष्य ह अब 'जल–संग्रहण' के उदिम म माढ़े हे।

धरती के बनावट कुछ अइसे हे के ओ म कइ परत के चट्टान हवँय। कुछ पानी सोखने वाला अउ भुरभुरी हें अउ कुछ तो अतका ठोस हें के ओमा पानी पार नइ जा सकय। जब बरसात होथे तब बहुत अकन पानी ह बोहाके नँदिया–नरवा म चल देथे,फेर कुछ पानी धरती के भीतरी रिसथे घलो। ये ढंग ले रिसने वाला पानी ओ चट्टान म समा जाथे,जेन ह पानी सोंख लेथे अउ ओकर खाल्हे के ठोस चट्टान के पार नइ जा सकय। जमीन के खाल्हे ये ढंग ले जमा होने वाला पानी ह भू–जल आय, जेला हम कुआँ खोद के या नलकूप लगा के पाथन।

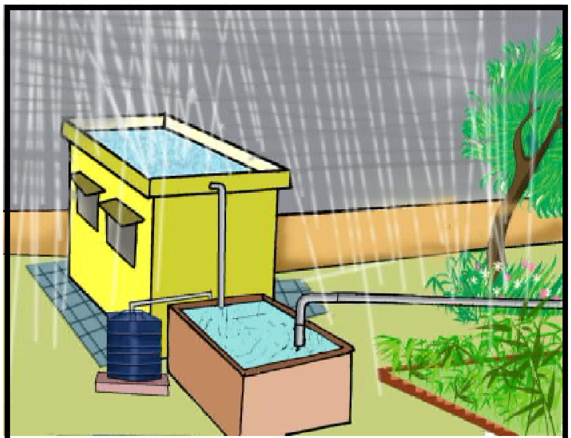
चित्र क्र. 1

पाछू कुछ साल म हमर शहर अउ गाँव के अबादी बहुत बढ़गे हवय। एकरे सेती पानी के माँग पूरा करे बर भू–जल के उपयोग घलो बढ़गे हे। बिजली मिले के कारण शहर अउ गाँव म बहुत जादा नलकूप लगे हें,जेकर ले भू–जल निकाल के घरु उपयोग के संगे–संग खेती–किसानी अउ कल–कारखाना म घलो ओकर उपयोग करे जात हे। एकर नतीजा ये होइस के बरसात के जतका पानी जमीन म रिसथे,ओकर ले जादा पानी हम उपयोग करे बर बाहिर निकालत हन। ये कारण भू–जल के भंडार सतह ह दिन–दिन खाल्हे होवत जात हे,एकर सेती कुआँ अउ नलकूप सुखावत हें,पानी ह खारा होवत हे अउ कइ जघा हमर उपयोग के लइक नइ रहिगे हे।

जंगल के भारी कटाव अउ गहन खेती के कारण बारामसी नंदिया–नरवा कम होवत जात हें, अउ बढ़त अबादी के कारण जघा–जघा पानी के कमी देखे जा सकत हे। हम अपन शहर अउ बड़े गाँव ल देखन त हम पाबोन के उहाँ सरलग नवाँ–नवाँ घर बनत जात हें,सड़क अउ नाली पक्का होवत

हें, तरिया पटावत हें या सुखावत हें, मैदान सकलावत हें अउ पेड़–पौधा कम होवत जात हें। ये सबके नतीजा ये हे के शहर अउ बड़े गाँव म बरसने वाला पानी जमीन म कम रिसथे अउ जमीन के सतह उपर बहिके कइ तरह के अलहन लाथे। खाल्हे डहर म बसे गरीब मन के बस्ती पानी म बुड़ जाथें, नाली मन टिपटिप ले भर के सड़क म बोहावन लगथें अउ पूरा शहर गंदगी ले भर जाथे। एक ढंग ले ये शहर ल मिलइया बरसात के पानी के बरबादी तो आय।

छत और छप्पर का पानी

छत / छप्पर से पानी का भण्डारण

(सोख्ता गड्ढे से पानी सीधे कुंए या नलकूप से डाला जा सकता है।)

चित्र क्र. 2

फोकटे–फोकट बहने वाला पानी ल कुछ सरल उपाय कर के जमीन के भीतर पहुँचाय जा सकथे। ये ढंग ले सकलाय पानी ले भू–जल के भंडार बढ़थे,कुआँ अउ नलकूप मन म पानी के आवक बढ़ जाथे। सुक्खा के दिन म ये पानी ह हमर काम आ सकथे। छत अउ छानी–छप्पर म पड़ने वाला बरसात के पानी बोहा के अकारथ चल देथे। ये पानी ल सोख्ता गड्ढ़ा बना के सहज रूप म जमीन के भीतर पहुँचाय जा सकत हे। कहुँ तीर–तकार म कुआँ हे त ये पानी ल कुआँ म भरे जा सकत हे। छोटे छत अउ छप्पर–छानी के पानी ल नलकूप म डारे जा सकथे या फेर बनाय गे सोख्ता गड्ढा म डारके जमीन के भीतर पहुँचाय जा सकत हे।

छन्ना के साथ सोख्ता गड्ढा

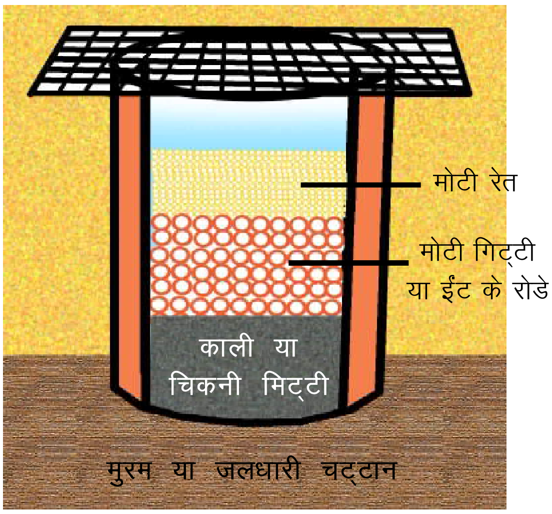

चित्र क्र. 3

मकान के अँगना या तीर–तकार के खुला जमीन ले बोहावत पानी ल घलो सोख्ता गड्ढा म डारके जमीन के भीतर पहुँचाय जा सकत हे। अतका धियान रखे ल परही के चिखला मिले पानी ह सीधा जमीन के भीतर झन जाय। एला रोके खातिर

सोख्ता गड्ढा म छन्ना बनाय के उपाय करे बर परही। ये ल चित्र क्र. 3 म देखाय गे हे।

छोटे बस्ती म दू–चार घर ल मिला के एक ठन सोख्ता गड्ढा बनाय जा सकत हे। सोख्ता गड्ढा ये ढंग ले बनाय जाय के बरसात के पानी छन के खाल्हे उतरय अउ जल सोखइया चट्टान के परत तक पहुँच जाय। ऊपर दे गे चित्र म ये देखाय गे हे के बरसात के पानी ल कोन ढंग ले जमीन के भीतर उतारे जा सकत हे।

शहर–नगर म कुछ खाल्हे भाग अइसे होथें जिहाँ बरसात होइस के पानी भर जाथे। ये ढंग ले सकलाय पानी ल जमीन के भीतरी कइसे उतारे जाय,एला घलो आगू चित्र म दिखाय गेहे। इही ढंग ले शहर अउ बड़े गाँव म कइ ठन सुक्खा अउ बेकार तरिया रहिथें,जेन मन बरसात ले भर जाथें। ईंकर पानी ल घलो उही ढंग ले जमीन के भीतर पहुँचाय जा सकत हे। एकर छोड़ के ये ढंग ले पानी सकलाय ले कुआँ म पानी के आवक बढ़ जाही अउ ओमा साल भर पानी भरे रइही।

कइ ठन शहर गाँव म अइसे छोटे नँदिया–नरवा हवँय जेमा सिरिफ बरसात के दिन म पानी बोहाथे। अइसे नँदिया–नरवा के पाट म जमीन के भीतर पानी रोकने वाला बाँध बना के पानी ओकरे पाट भीतरी घलो रोके जा सकत हे। एकर ले कुआँ–नलकूप मन म पानी के आवक बढ़ जाही । सुक्खा दिन म अइसे नँदिया–नरवा म झिरिया खोद के घलो पानी ले जा सकत हे। एकर छोड़ छोटे–छोटे बाँध बना के घलो अइसे नँदिया–नरवा के पानी ल रोके जा सकत हे। ये ढंग ले

तलाब की तली में नलकूप की तरह पाईप लगाकर भू–जल भरना

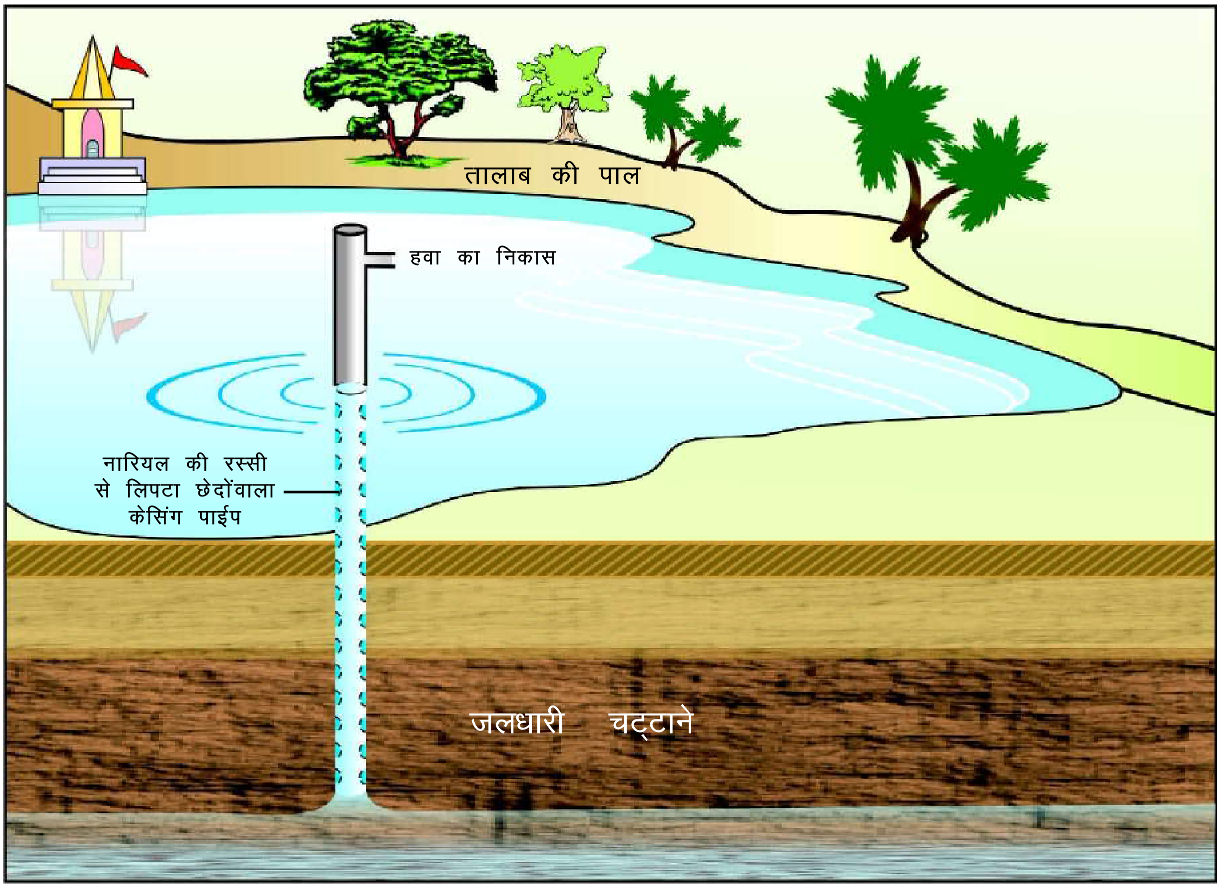

चित्र क्र. 4

कुछ महीना तक निस्तार बर पानी मिल सकही। एकर ले घलो पानी रिस के धरती के खाल्हे पहुँचही अउ कुआँ,नलकूप मन म पानी के आवक बढ़ही।

बरसात के पानी ल जमीन के भीतरी डारके भू–जल के भंडार बढ़ाय के ये कुछ उपाय हवँय,जेला अपनाके कम खरचा म पानी के कमी ल दूर करे जा सकत हे।

छत्तीसगढ़ी शब्द मन के हिन्दी अर्थ

पाथन	=	पाते हैं	रिसथे	=	रिसता है
जघा	=	जगह	नरवा	=	नाला
पाबोन	=	पाएँगे	सरलग	=	लगातार
सकलावत हें	=	कम हो रहे हैं, इकट्ठे हो रहे हैं	बुड़ जाथें	=	डूब जाते हैं
टिपटिप ले	=	लबालब	फोकटे–फोकट	=	फालतू
सकलाय	=	एकत्रित	तीर–तकार	=	आस–पास
चिखला	=	कीचड़	निस्तार	=	निर्वाह,गुजारा

टिप्पणी

झिरिया – सूखी हुई नदी,नाले या तालाब में जल संचित करने के लिए खोदा गया अस्थायी गड्ढा।

अभ्यास

पाठ से

1. भू–जल काला कथें ?
2. भू–जल के उपयोग काबर बाढ़ गेहे ?
3. भू–जल के भंडार काबर कम होवत जात हे ?
4. बारामासी नँदिया–नरवा के कम होय के का कारण हे ?
5. बरसाती पानी के जमीन के भीतर कम रिसे के का–का कारण हें ?
6. बरसाती नँदिया–नरवा के पानी ल कइसे रोके जा सकत हे ?

पाठ से आगे

1. भू–जल के भंडार ल बढ़ाय के का–का उपाय हो सकत हे कक्षा में चर्चा कर लिखव।
2. कुआँ अउ नलकूप म पानी के आवक कइसे बढ़ाय जा सकत हे ? गाँव के सियान मन ल पूछ के लिखव।
3. भू–जल के संग्रहण काबर जरूरी हे ? सोंच के लिखव। अगर जल के संग्रहण नई करहीं त का हो जही विचारव।

A1PIHK

भाषा से

A1YEY8

1. समास विग्रह करके नाँव लिखव –

   भू–जल, कल–कारखाना, छप्पर–छानी, नँदिया–नरवा, खेती–किसानी, पेड़–पौधा।

2. खाल्हे लिखाय वाक्य मन ले विशेषण–विशेष्य शब्द छाँट के लिखव –

   क. ओखर खाल्हे ठोस चट्टान होथे।

   ख. जंगल के भारी कटाव अउ गहन खेती के कारन बारामसी नँदिया–नरवा कम होवत जात हें ।

   ग. हम अपन शहर अउ बड़े गाँव ल देखन त हम पाबोन के उहाँ नवाँ–नवाँ घर बनत जात हें ।

   घ. शहर अउ बड़े गाँव म कइ ठन सुक्खा अउ बेकार तरिया रहिथें।

3. पाठ म आय अनुनासिक (ँ) अउ अनुस्वार (ं) वाले शब्द मन ल छाँट के लिखव।

4. खाल्हे लिखाय शब्द मन ल अपन वाक्य म प्रयोग करव –

   आबादी, बारामासी, संगे–संग, तीर–तकार, निस्तार।

5. 'पानी हे,त जिनगानी हे',ये विषय ल लेके दस वाक्य लिखव ।

6. गाँव के नँदिया, तरिया अउ बोरिंग के पानी ल प्रदूषित होय ले बचाय के उपाय लिखव।

योग्यता विस्तार

A28AZV

1. पानी के महत्तम ऊपर रहीम कवि के लिखे ये दोहा ल याद करव–

   रहिमन पानी राखिए, बिन पानी सब सून।
   पानी गए न ऊबरे,मोती,मानुष, चून।।,

2. जल संरक्षण ल लेके बहुत अकन नारा लिखे गे हे। अइसन नारा ल खोज के अपन कापी म लिखव।

3. अपन घर के अँगना म एक ठन सोख्ता गड्ढा बनावव,जइसन पाठ म चित्र म बताय गे हे। ये सोख्ता गड्ढा ल अइसे जघा म बनावव जिहाँ बरसात म ओंरवाती के पानी गिरथे। अइसने सोख्ता गड्ढा अपन स्कूल म घलो बनावव।

पाठ 17

तृतीय लिंग का बोध

A2H72I

—लेखक मंडल

प्राचीन काल

इस काल के संबंध में जो तथ्य मिलते हैं यद्यपि उसका ऐतिहासिक प्रमाण नहीं है फिर भी प्राचीन पौराणिक कथाओं के माध्यम से यह जानकारी जरूर मिलती है कि इस काल में लोग इस समुदाय के प्रति काफी सकारात्मक थे। इस काल की कथाओं में तृतीय लिंग समुदाय के पात्र काफी आदर्शवादी थे। रामचरित मानस, भागवत, महाभारत व अन्य पुराणों में अनेक बार किन्नरों का उल्लेख मिलता है। किंवदंती है कि त्रेतायुग में श्रीराम जब 14 साल के लिए वनवास जा रहे थे तब अयोध्यावासी सरयू नदी तक उन्हें छोड़ने आए थे। नदी के तट पर श्रीराम ने 14 साल बाद उन्हें फिर से मिलने का आश्वासन देकर वापस घर जाने का निर्देश दिया। कहा जाता है राम की आज्ञा पाकर किन्नरों को छोड़कर सभी नर–नारी वापस लौट आए थे। 14 साल बाद जब श्रीराम वापस आए तो उन्होंने देखा कि सरयू के तट पर कई किन्नर उनका इंतजार कर रहे थे। जब उन्होंने इसका कारण पूछा तो किन्नरों ने बताया कि 14 साल पहले आपने केवल नर और नारी को ही वापस लौटने की आज्ञा दी थी सो वे लौट गए। हम किन्नर हैं अतः हम यहीं रुक गए और आपका इंतजार करने लगे। कहते हैं श्रीराम ने उनकी भक्ति से प्रसन्न होकर आशीर्वाद दिया था कि कलयुग में उनका राज होगा और उनकी दुआएँ लोगों को लगेंगी। इसी तरह रामचरितमानस, पुराणों व महाभारत में कई बार किन्नरों द्वारा महत्वपूर्ण अवसरों पर गायन और वादन करने के संकेत मिलते हैं।

द्वापर युग का शिखंडी नामक पात्र इस समुदाय के लिए एक कालजयी पात्र सिद्ध हुआ है। महाकाव्य महाभारत में शिखंडी का उल्लेख मिलता है। शिखंडी महाराज द्रुपद का पुत्र व द्रोपदी का भाई था जो किन्नर था। उसे कहीं–कहीं सती का अवतार भी कहा गया है। शिखंडी ने अपनी शिक्षा–दीक्षा विधिवत पूरी की थी और इस पात्र ने यह सिद्ध कर दिया कि किन्नर समुदाय के लोग दुनिया के बड़े से बड़े कार्य कर सकते हैं। कहा जाता है कि शिखंडी ने धर्म की रक्षा के लिए महाभारत का युद्ध लड़ा था। उसकी प्रतिभा को देख श्रीकृष्ण ने उसे महाभारत के युद्ध में सेनापति बनाया था। गीता के पहले अध्याय में लिखा है कि 'शिखंडी च महारथः' अर्थात महारथी था। उपर्युक्त कथाएँ इस बात की प्रमाण हैं कि उस काल में इस समुदाय को काफी सामाजिक मान्यता मिली हुई थी। ये कथाएँ काल्पनिक या ऐतिहासिक हैं, यह यद्यपि बहस का विषय हो सकता है पर इन कथाओं को समाज में जिस प्रकार स्वीकृति मिली इससे प्रमाणित होता है कि उस काल में थर्ड जेंडर समुदाय के व्यक्तित्व के विकास के लिए उपयुक्त व्यवस्था थी।

मध्यकाल

इस काल के संबंध में कुछ ऐतिहासिक प्रमाण मिलते हैं। यह वह काल था जब बाहर के राजाओं ने भारत पर आक्रमण किया। इन आक्रमणों से काफी कुछ क्षति हुई वहीं कई क्षेत्रों में सांस्कृतिक विविधता का भी विकास हुआ। वे अपने साथ अपने देशों की संस्कृति सभ्यता लेकर यहाँ आए थे। इससे हमारी संस्कृति काफी समृद्ध हुई। कुछ मुसलमान राजाओं ने थर्ड जेंडर समुदाय के लोगों को अपने महलों में राजकुमारियों व रानियों के अंगरक्षकों के रूप में रानिवास में नियुक्त किया। मध्यकालीन ऐतिहासिक दस्तावेजों से जानकारी मिलती है कि कुछ मुगल राजाओं ने किन्नरों को गुप्तचर विभाग व सेना विभाग में भी कार्य करवाया।

इसी तरह कई मुगल राजाओं ने किन्नरों को बहुत इज्जत से आश्रय दिया था। गान व नृत्य कलाओं के ये विशारद हुआ करते थे। इस काल में बनी परंपराओं का आज भी दैहारों (किन्नरों के आश्रम) में पालन होता है। लगातार आक्रमण और राजनैतिक अस्थिरता के चलते किन्नर अपने आपको असुरक्षित मानने लगे। कई आक्रमणकारियों का दृष्टिकोण इनके प्रति अच्छा नहीं था। इन संकटों से छुटकारा पाने के लिए अब किन्नर अलग–अलग रहने के बजाय एकत्रित होकर रहने लगे। इसी सुरक्षा और आश्रय की भावना से ही गुरु–शिष्य परंपरा का विकास हुआ। दैहार में रहने वाले मुस्लिम धर्म का पालन करते थे। दैहार में किन्नर पवित्रता व अनुशासन का जीवन बिताते थे। वहाँ वे किन्नर अपने गुरुओं से नृत्य व गायन में पारंगत होते थे। अपनी अस्मिता की रक्षा के लिए वे ज्यादातर बाहर नहीं निकलते थे, केवल अपने आजीविका के लिए साल में एक–दो बार बधाई माँगने निकला करते थे। आज किन्नर जिस कोथपन भाषा का प्रयोग करते हैं वह फारसी से आई है। चूंकि भाषा व विशिष्ट संस्कृति का विकास संगठन की प्रक्रिया से जुड़ी हुई होती है अतः इस काल में किन्नरों की विशेष भाषा (कोथपन) का प्रचलित होना यह बताती है कि वे समूहों में रहना सीख रहे थे। संभवतः बधाई माँगने व एकत्रित रहने की परंपरा इसी काल में पनपी है। कहा जाता है कि मध्यकाल में अजमेर नामक स्थान में एक बड़े मुस्लिम संत रहा करते थे, जो अजमेर के ख्वाजा नाम से प्रसिद्ध भी हुए। उन्होंने एक किन्नर की भक्ति से प्रसन्न होकर उसे पुत्ररत्न का वरदान दिया था। उस घटना की याद में आज भी बाबा के उर्स के वक्त किन्नर बड़ी संख्या में अजमेर में चादर चढ़ाने पहुँचते हैं।

आधुनिक काल

तृतीय लिंग समुदाय ने आधुनिक काल में भी अनेक कीर्तिमान रचे हैं। आधुनिककाल की चुनौतियाँ अन्य कालों की अपेक्षा काफी अलग रहीं। अब दुनिया सिमट चुकी है। विज्ञान, औद्योगिकीकरण व राजनीतिक विचारधाराओं ने लोगों के मस्तिष्क के द्वार खोल दिए हैं। अब लोग अपने अंतर्संबंधो के विषयों में खुलकर बातें करने लगे हैं। समुदाय के कई लेखकों ने अपने यौन संबंधों व प्रेम प्रसंगो के बारे में काफी खुलकर लिखना शुरु भी कर दिया। यौन व्यवहार को समाज में मान्यता दिलाने के लिए राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अनेक संगठन बनने लगे

हैं। इसमें नाज, यूनीसेफ, मित्र श्रृंगार, हम सफर व दक्षिण भारत में थर्ड जेंडर वेलफेयर सोसाइटियों का गठन हुआ। सुप्रीम कोर्ट ने जैसे ही धारा 377 में संशोधन किया, काफी लोग खुलकर सामने आने लगे। राष्ट्रीय एड्स नियंत्रण संगठन ने थर्ड जेंडर समुदाय के लोगों के स्वास्थ्य व अन्य अधिकारों के लिए लक्ष्यगत हस्तक्षेप परियोजनाएँ चलाई। इसके तहत भी लोग संगठित होने लगे। थर्ड जेंडर के यौन व्यवहारों पर इतनी बारिकियों से काम हुआ कि इस समुदाय के अंतर्गत पाई जाने वाली विभिन्नताओं का परिचय मिला। इन विभिन्न समूहों को अलग–अलग नाम भी दिया गया जैसे किन्नर, टीजी आदि। यहाँ एक बात उल्लेख करना आवश्यक है कि अब किन्नर उसे कहा जाता है जो नारी वेश में पवित्रता व अनुशासन की जिंदगी जीते हैं। अतः किन्नर एक आदर्शवादी नाम हो गया।

तृतीय लिंगसमुदाय के लोगों ने कार्पोरेट, समाजसेवा, राजनीति, फैशन, संगीत व अन्य क्षेत्रों में लोहा मनवाया। इनकी प्रतिभा को देख लोग दाँतों तले उंगली दबाने के लिए मजबूर हो गए। सिल्वेस्टर मरचेन्ट, लक्ष्मी नारायण त्रिपाठी, मनेन्द्र सिंह गोयल, फैशन डिजाइनर रोहित व विधायक शबनम मौसी आदि प्रमुख हैं। इस प्रकार हम देख सकते हैं कि इस समुदाय के अंदर कई क्षमताएँ और प्रतिभाएँ छिपी हुई हैं। समुदाय को मुख्यधारा से जोड़ना बहुत जरुरी है ताकि इनकी प्रतिभा व शक्ति का उपयोग समाज को श्रेष्ठ और सुंदर बनाने में किया जा सके। अतः हमें ऐसी सामाजिक व्यवस्था का निर्माण करना बहुत जरुरी है, जहाँ तृतीय लिंग समुदाय का प्रत्येक व्यक्ति अपने संपूर्ण व्यक्तित्व का विकास कर सके। हमारी भारतीय संस्कृति सदैव ही **''सर्वे भवन्तु सुखिनः'' सहनाववतु सहनौ भुनक्तु** के आदर्शों पर विकसित हुआ है। विश्व का कल्याण तभी संभव है जब यहाँ रहने वाले हर व्यक्ति को अनुकूल वातावरण मिल सके। केवल तृतीय लिंग समुदाय ही नहीं बल्कि कई ऐसे वर्ग हैं जो विकासक्रम में पीछे हो गए हैं, उन्हें पुनः उसी विकास की गति से जोड़ना बहुत जरूरी है।

अभ्यास

पाठ से

1. राम के वन गमन के प्रसंग में किन्नरों के बारे में किस कथा का वर्णन मिलता है?
2. शिखंडी कौन थे और क्यों प्रसिद्ध हुए ?
3. राम वनवास से वापस लौटते हुए किन्नरों को क्या आशीर्वाद दिए ?
4. दैहार क्या है ?
5. तृतीय लिंग को किन अन्य नामों से जानते हैं ?
6. तृतीय लिंग के लोगों ने किन–किन क्षेत्रों में प्रसिद्धि प्राप्त की है?
7. विकासक्रम में पीछे कौन से वर्ग है और क्यों ?

पाठ से आगे

A2R346

1. पाठ में प्राचीन कालों के नाम आए हैं जैसे त्रेता, द्वापर, कलियुग, ये काल क्यों प्रसिद्ध हैं? मित्रों से चर्चा कर लिखिए।
2. महाभारत, रामचरितमानस, पुराण आदि प्रसिद्ध ग्रन्थों का उल्लेख पाठ में है। इन कथाओं पर आपस में चर्चा कर संक्षिप्त रूप में लिखिए।
3. ऐसा दिखता है कि समाज में हर तबके के लोग अपनी आजीविका के लिए परिश्रम करते हैं और इसमें समाज का सहयोग मिलता है। तृतीय लिंग के लोगों को आजीविका के लिए संघर्ष क्यों करना पड़ता है विचार कर लिखिए।
4. कोई मनुष्य तृतीय लिंग का है इसमें उसका क्या दोष है ? हम उससे समाज के अन्य लोगों की तरह सामान्य व्यवहार क्यों नहीं कर पाते हैं ? अपने विचार व्यक्त कीजिए।
5. प्रस्तुत पाठ से तृतीय लिंग के कई प्रसिद्ध नामों का उल्लेख है इससे यह स्पष्ट होता है कि इस समुदाय के लोगों को समान अवसर मिले तो अपनी क्षमता को साबित कर सकते हैं। आपके अनुसार इन्हें अवसर क्यों नहीं मिल पाता है? साथियों से बात कर अपनी समझ को रखिए।

भाषा से

A2ZY5T

अलग–अलग, गुरु–शिष्य, एक–दो, शिक्षा–दीक्षा

1. उपर्युक्त शब्द पाठ में प्रयुक्त हुए हैं, जिनको लिखने में योजक चिह्न (–) का प्रयोग किया गया है। योजक चिह्न का प्रयोग पुनरुक्त, युग्म और सहचर शब्दों के मध्य किया जाता है, उदाहरण स्वरूप– हानि–लाभ, जीवन–मरण, कभी–कभी खाते–पीते। आप पाठ से और अपने आस–पास प्रचलित ऐसे 10 शब्दों को लिखिए जिनमें योजक चिह्नों का प्रयोग होता हो।
2. किन्नर, उर्स, आजीविका, अस्मिता, बधाई, पारंगत, प्रतिभा, विशारद शब्दों का छत्तीसगढ़ी भाषा में प्रचलित अर्थ वाले शब्द लिखिए।

योग्यता विस्तार

A39U7G

1. लोकतांत्रिक समाज में तृतीय लिंग या थर्ड जेंडर के लोगों को क्या–क्या अधिकार मिलने चाहिए इस विषय पर वाद–विवाद प्रतियोगिता का आयोजन कीजिए।
2. पाठ में थर्ड जेंडर के कई सफल नामों का उल्लेख किया गया है। उनके बारे में पता कर उनके सफलता और संघर्ष की कहानियों को कक्षा में सुनाइए।

पाठ 18

ब्रज–माधुरी

A3IQ94

– कविवर पद्‌माकर/हरिश्चंद्र/बेनी

ब्रजभाषा मूलतः ब्रज क्षेत्र की भाषा है। यह विक्रम की 13वीं शताब्दी से लेकर 20वीं शताब्दी तक भारत में साहित्यिक भाषा के रूप में प्रतिष्ठित रही। आज भी यह भाषा मथुरा, आगरा और अलीगढ़ जिलों में बोली जाती है। इसे हम केंद्रीय ब्रजभाषा भी कह सकते हैं। प्रारम्भ में ब्रजभाषा में ही काव्य रचना हुई। भक्तिकाल, रीतिकाल और आधुनिक काल तथा आरंभिक वर्षों में प्रचुर मात्रा में साहित्य सृजन इस भाषा में हुआ, जिनमें सूरदास, रहीम, रसखान, बिहारी, केशव, धनानन्द, भारतेंदु, जयशंकर प्रसाद आदि कवि प्रमुख हैं। प्रस्तुत पद में भक्ति और श्रृंगार के भाव सामर्थ्य और प्रवाह को देखा जा सकता है।

घनाक्षरी

चितै–चितै चारों ओर चौंकि–चौंकि परें त्योंही,
जहाँ–तहाँ जब–तब खटकत पात है।
भाजन सो चाहत, गँवार ग्वालिनी के कछु,
डरनि डराने से उठाने रोम गात हैं।।
कहैं 'पदमाकर' सुदेखि दसा मोहन की,
सेष हू, महेस हू, सुरेस हू, सिहात हैं।
एक पाँय भीत, एक पाँय मीत काँधे धरें,
एक हाथ छींकौ एक हाथ दधि खात हैं।। 1।।

– पद्‌माकर

पंकज कोस में भृंग फस्यौ, करतौ अपने मन यों मनसूबा।
होइगो प्रात उएँगे दिवाकर, जाउँगो धाम पराग लै खूबा।।
'बेनी' सो बीच ही और भई नहिं काल को ध्यान न जान अजूबा।
आय गयंद चबाय लियौ, रहिगो मन–ही–मन यों मनसूबा।। 2।।

– बेनी

सखी हम काह करैं कित जायें।
बिनु देखे वह मोहिनी मूरति नैना नाहिं अघायँ।
बैठत उठत सयन सोवत निस चलत फिरत सब ठौर।
नैनन तें वह रूप रसीलो टरत न इक पल और।
सुमिरन वही ध्यान उनको ही मुख में उनको नाम।
दूजी और नाहिं गति मेरी बिनु मोहन घनश्याम।
सब ब्रज बरजौ परिजन खीझौ हमरे तो अति प्रान।
हरीचन्द हम मगन प्रेम–रस सूझत नाहिं न आन।। 3।।

– भारतेंदु

शब्दार्थ :– **चितै–चितै**–टोह या आहट लेते हुए, **चौंकना**–हैरान होना, **खटकना**–आहट होना, खलना, **भाजन**–भागना, **रोम**–देह के बाल, रोयाँ, लोम, **गत**–शरीर, **अंग–सिहाना**–स्पर्धा करना, पाने के लिये ललचना, लुभाना, **भीत**–दीवाल, **मीत**–मित्र, **छींका**–शिकव, रस्सी का लटकता हुआ जालदार फँदा जिसपर बिल्ली आदि के ड़र से दूध या खाने की दूसरी वस्तुएँ रखते हैं, सिकहर, **दधि**–दही, **पंकज**–कमल, कीचड़ में उत्पन्न होनेवाला, **भृंग**–भौरा, भ्रमर, **मंसूबा**–उत्साहित होना, हौसला करना, **धाम**–स्थान,ठौर, अपना गृह या आश्रय स्थल, **पराग**–वह रज या धूलि जो फूलों के बीच लंबे केसरों पर जमा रहती है, पुष्परज, **दिवाकर**–सूर्य, **अजूबा**–अद्भुत,अनोखा, अनूठा, **गयंद**–बड़ा हाथी, **अघाना**–तृप्त होना, बरजना, मना करना, रोकना, **गति**–अवस्था, दशा, हालत, **सुमिरन**–स्मरण।

अभ्यास

पाठ से

1. 'चितै–चितै चारो ओर' इस छंद में कौन बार–बार चौंककर इधर–उधर देख रहा है और क्यों?
2. कमल में भौंरा कैसे बंद हो गया ?
3. कमल कोष में बंद भौंरा मन ही मन क्या सोच रहा था ?
4. भौंरे की इच्छाओं का अंत कैसे हुआ ?
5. नैन अघाने का क्या आशय है ?
6. नायिका अपनी सखी से मन की किन दुविधाओं का उल्लेख करती है ?

7. भाव स्पष्ट कीजिए –

सुमिरन वही ध्यान उनको ही मुख में उनको नाम।
दूजी और नाहिं गति मेरी बिनु मोहन घनश्याम।।

पाठ से आगे

A3SLAR

1. भौंरे के मन में ढेर सारी इच्छाएँ थीं जो अगले पल में ध्वस्त हो गईं! हमारे मन में भी ढेर सारी इच्छाएँ जन्म लेती हैं पर वे पूर्ण नहीं हो पातीं क्यों ? साथियों के साथ विचार कर लिखिए।
2. बाल श्रीकृष्ण की लीलाओं को आपने अपने बड़े–बुजुर्गों से सुना और पुस्तकों में पढ़ा होगा, जो लीला आपको प्रभावित करती है उसे लिख कर कक्षा में सुनाइए।
3. जिस तरह श्रीकृष्ण बाँसुरी (वाद्य यंत्र) बजाते थे वैसे ही आप भी कोई वाद्य यंत्र बजाते होंगे। आप किस प्रकार का वाद्य यंत्र बजाना पसंद करेंगे कारण सहित अपना अनुभव लिखिए।
4. पद में सखी के मन में उलझन है कि वह क्या करे और कहाँ जाए? ऐसे ही हमारे जीवन के अनेक उलझने हैं जिसे हम किससे कहें। क्या आपके साथ भी ऐसा होता है? इस विषय पर अपने साथियों के साथ चर्चा कर अपने अनुभवों को लिखिए।
5. बालक कृष्ण के दही चुराने के पीछे क्या मकसद हो सकता है कक्षा में चर्चा करें।

भाषा से

A42HCE

1. ब्रज माधुरी पाठ के पद ब्रजभाषा में लिखे गए हैं। ब्रजभाषा के निम्न शब्दों को छत्तीसगढ़ी में क्या कहते हैं? ढूँढ़ कर लिखिए, जैसे–सिहात है, काँधे, पाँव, मीत, आजु लौ, कित, उरहानौ, होइगो, प्रात, सखी, बरजौ, खीजौ, काह।
2. चितै–चितै चारो ओर चौंकि–चौंकि परै त्योंहि, पंक्ति में 'च' वर्ण की आवृति हुई है जो अनुप्रास अलंकार है। इस अलंकार के अन्य उदाहरण कविता से ढूँढ़ कर लिखिए।
3. कुछ शब्दों के दो या दो से अधिक अर्थ होते हैं जो उसके सन्दर्भ के आधार पर अर्थगत भिन्नता रखते हैं जैसे 'भाग' शब्द का अर्थ भागना और हिस्सा है। निम्नलिखित शब्दों के अर्थगत भिन्नता को स्पष्ट करते हुए वाक्य में प्रयोग कीजिए–काल, भीत, जग, रोम, मन, मोहन, घनश्याम, आन।
4. (क) 14 वर्षों की **अवधि** बीत जाने के बाद राम के न लौटने से लोग आकुल होने लगे।

(ख) तुलसीदास जी ने रामचरितमानस की रचना **अवधी** में की है।

ऊपर के दो उदाहरण से स्पष्ट है कि सुनने में बहुत समान लगनेवाले शब्द का अर्थ और प्रयोग की दृष्टि से भिन्नता रखते हैं, जिन्हें हम श्रुति समभिन्नार्थी शब्दों के रूप में पहचानते हैं निम्नलिखित ऐसे ही शब्दों का अर्थ ग्रहण करते हुए वाक्य में प्रयोग कीजिए।

कोष–कोस, रीति–रीती, अंश–अंस, दिन–दीन, चिर–चीर, अली–अलि, कूल–कुल।

5. दैनिक जीवन में कभी हम हँसते हैं, कभी उदास हो जाते हैं, कभी क्रोधित होते हैं, कभी प्रेम करते हैं तो कभी घृणा करते हैं और कभी हमें आश्चर्य होता है। ये ही भाव कविताओं में भी प्रकट होते हैं। इन भावों को साहित्य में 'रस' कहा जाता है। रस के निम्नलिखित दस भेद हैं–

   श्रृंगार, वीर, रौद्र, हास्य, वीभत्स, अद्भुत, करुण, शांत, भयानक और वात्सल्य।

   पाठ में पंकज कोष ....इस छंद में जीवन की निरर्थकता बताई गई है। अतः यह शांत रस की रचना है। इसी तरह सखी हम काह करें ....इस छंद में गोपियों का श्रीकृष्ण के प्रति प्रेम भाव प्रकट हो रहा है। अतः यहां श्रृंगार रस विद्यमान है। उक्त प्रकार के छंदों के एक–एक अन्य उदाहरण शिक्षक से पूछकर लिखें व समझें।

योग्यता विस्तार

A4BDE2

1. चितै–चितै चारो ओर' इस छंद के आधार पर श्रीकृष्ण के माखन चोर के रुप का जो भाव आपके मन पर उभरा है उसका अपने शब्दों में चित्रांकन कीजिए।
2. श्रीकृष्ण की बाल लीलाओं पर आधारित सूर, रसखान नन्ददास आदि भक्त कवियों द्वारा रचित रचना को पुस्तकालय से खोज कर पढ़िए।
3. ब्रजभाषा के कुछ कवित्त और सवैया छंदों को खोजकर पढ़िए और उनका बालसभा में सस्वर गायन कीजिए।

पाठ 19

कटुक वचन मत बोल

– श्री रामेश्वर दयाल दुबे

वाणी की मिठास पर भक्ति कालीन कवियों ने बार–बार बल दिया है। प्रस्तुत पाठ में वाणी की मृदुलता को अथवा बात कहने के अंदाज को कई उदाहरणों के द्वारा स्पष्ट किया गया है। वाणी सबके पास है पर उसका सम्यक् समुचित प्रयोग हर किसी को नहीं आता। समय और सन्दर्भ के अनुरूप हम वाणी का कैसे प्रयोग करें यह हम अपने परिवेश से सीखते और अपने अनुभवों से मांजते हैं। चीनी दार्शनिक कन्फ्यूशियस द्वारा जीभ और दाँत के उदाहरण के जरिए लेखक ने मीठी वाणी के सत्कार और कटु वचन के अस्वीकार को स्पष्ट किया है।

दास प्रथा के दिनों में एक मालिक के पास अनेक गुलाम थे, जिनमें एक था लुकमान। लुकमान था तो गुलाम, किन्तु वह बड़ा बुद्धिमान था। उसकी प्रशंसा इधर–उधर फैलने लगी। एक दिन उसके मालिक ने उसे बुलाया और कहा–''सुनते हैं, तुम बहुत होशियार हो। मैं तुम्हारा इम्तहान लूँगा। अगर तुम कामयाब हो गए, तो तुम्हें गुलामी से छुट्टी दे दी जाएगी। अच्छा जाओ। एक मरे हुए बकरे को काटो और उसका जो हिस्सा सबसे बढ़िया हो, उसे ले आओ।''

लुकमान ने वैसा ही किया। एक बकरे को कत्ल किया और उसकी जीभ लाकर मालिक के सामने रख दी। कारण पूछने पर लुकमान ने कहा–''अगर शरीर में जीभ अच्छी हो, तो फिर सब अच्छा–ही–अच्छा है।''

मालिक ने कहा–''अच्छा, इसे उठा ले जाओ और अब बकरे का जो हिस्सा सबसे बुरा हो, उसे ले आओ।''

लुकमान बाहर गया, लेकिन थोड़ी देर में उसने उसी जीभ को लाकर मालिक के सामने फिर रख दिया। कारण पूछने पर लुकमान ने कहा– ''अगर शरीर में जीभ अच्छी नहीं है, तो फिर सब बुरा–ही–बुरा है।''

एक दूसरी घटना है। एक जिज्ञासु चीनी दार्शनिक कन्फ्यूशियस के पास पहुँचा और उसने उनसे पूछा–''यह बताइए कि दीर्घजीवी कौन होता है?''

वृद्ध कन्फ्यूशियस मुस्कराए और बोले– ''जरा उठकर मेरे पास आइए और मेरे मुँह में देखिए–जीभ है या नहीं?''

जिज्ञासु ने देखकर कहा– ''जी हाँ, जीभ तो है।''

कन्फ्यूशियस ने फिर कहा– ''अच्छा, अब देखिए कि दाँत हैं या नहीं?''

जिज्ञासु ने देखकर कहा–'' दाँत तो एक भी नहीं है।''

अब कन्फ्यूशियस ने कहा–''जीभ तो दाँत से पहले पैदा हुई थी। उसे दाँतों से पहले जाना चाहिए था। ऐसा क्यों नहीं हुआ?''

''मेरे पास इसका कोई जवाब नहीं है। आप ही बताइए।''

कन्फ्यूशियस बोले–''जीभ कोमल है, दाँत कठोर हैं। जिसमें लचीलापन होता है, जो नम्र होता है, वह अधिक समय तक जीता है, जीवन में जीतता है।''

ये दो कहानियाँ हैं, किन्तु एक ही सत्य को उद्घाटित करती हैं और वह यह कि जीवन में वाणी का बहुत बड़ा महत्त्व है।

वाणी तो सभी को मिली हुई है, परन्तु बोलना किसी–किसी को ही आता है। बोलते तो सभी हैं, किन्तु क्या बोलें, कैसे शब्द बोलें, कब बोलें–इस कला को बहुत कम लोग जानते हैं। एक बात से प्रेम झरता है, दूसरी बात से झगड़ा होता है। कड़वी बात ने संसार में न जाने कितने झगड़े पैदा किए हैं। जीभ ने दुनिया में बहुत बड़े–बड़े कहर ढाए हैं। जीभ होती तो तीन इंच की है, पर वह पूरे छह फीट के आदमी को मार सकती है। संसार के सभी प्राणियों में वाणी का वरदान मात्र मानव को मिला है। उसके सदुपयोग से स्वर्ग पृथ्वी पर उतर सकता है और उसके दुरुपयोग से स्वर्ग भी नरक में परिणत हो सकता है। भारत विनाशकारी महाभारत का युद्ध वाणी के गलत प्रयोग का ही परिणाम था।

इसीलिए सदा–सदा से यह कहा जाता है कि किसी का हृदय अपनी कटुवाणी से विचलित मत करो। कदाचित् मन्दिर और मस्जिद तोड़नेवाले को क्षमा मिल जाए तो मिल जाए, किन्तु हृदय मन्दिर तोड़ने वाले को क्षमा कहाँ?

मधुर वचन है औषधि, कटुक वचन है तीर।
श्रवण द्वार ह्वै संचरै, सालय सकल शरीर।
कुटिल वचन सबसे बुरा, जारि करै तन छार।
साधु वचन जल रूप है, बरसै अमृत धार।।

स्वर्गीय श्री लालबहादुर शास्त्री अपने विनम्र स्वभाव और मधुर वाणी के लिए प्रसिद्ध थे। प्रयाग में एक दिन उनके घर पर किसी नौकर से कोई काम बिगड़ गया। श्रीमती शास्त्री का क्रोध में आना स्वाभाविक था। उन्होंने नौकर को बहुत डाँटा और उसके साथ सख्ती से पेश आईं। शास्त्री जी भोजन कर रहे थे। उन्होंने अपनी पत्नी से कहा– ''अपनी जबान क्यों खराब कर रही हो? लो, तुम्हें एक शेर सुनाऊँ–

कुदरत को नापसन्द है सख्ती जबान में।
इसलिए तो दी नहीं हड्डी जबान में।''

और फिर मुस्कराते हुए शास्त्री जी ने आगे कहा– ''जब एक शेर सुना है, तो एक दूसरा शेर भी सुन लो–

जो बात कहो, साफ हो, सुथरी हो, भली हो।
कड़वी न हो, खट्टी न हो, मिश्री की डली हो।।''

कहना न होगा, इन शेरों को सुनकर श्रीमती शास्त्री का क्रोध का पारा बहुत नीचे उतर गया था।

यह बात स्वीकार करनी पड़ेगी कि सभी बातें ऐसी नहीं हो सकतीं, जो दूसरों को प्रिय ही लगें। सत्य कभी–कभी कड़वा होता है। कुछ बातें कहनी ही पड़ती हैं, किन्तु ऐसे अवसर पर

होना यह चाहिए कि बात भी कह दी जाए और उसमें वह कड़ुवाहट न आने पाए, जो दूसरे के हृदय को विदीर्ण कर देती है। जरूरी नहीं है कि जीभ की कमान से सदा वचनों के बाण ही छोड़े जाएँ। वाक्चातुरी से कटु सत्य को प्रिय और मधुर बनाया जा सकता है।

किसी राजा ने स्वप्न देखा कि उसके सारे दाँत टूट गए हैं। ज्योतिषियों से फल पूछा। एक ने कहा– ''राजन्, आप पर संकट आने वाला है। आपके सब संबंधी और प्रियजन आपके सामने ही एक–एक कर मर जाएँगे।''

दूसरे ज्योतिषी ने कहा,'' आप अपने सारे संबंधियों और प्रियजनों से अधिक काल तक संसार का सुख–ऐश्वर्य भोगेंगे।'' दोनों कथनों का सत्य एक ही है, किन्तु पहले ज्योतिषी को कारावास मिला और दूसरे को पुरस्कार।

सुबह–सुबह बुलबुल ने ताजे खिले फूल से कहा–''अभिमानी फूल! इतरा मत। इस बाग में तेरे जैसे बहुत फूल खिल चुके हैं।'' फूल ने हँसकर कहा–'' मैं सच्ची बात पर नाराज़ नहीं होता, पर एक बात है कि कोई भी प्रेमी अपने प्रिय से कड़वी बात नहीं कहता।''

यदि आपकी वाणी कठोर है, तीखी है, कर्कश है तो उसे सुधारिए, मीठी बनाइए, नहीं तो लोकप्रिय व्यक्तित्व का सपना अधूरा ही रह जाएगा।

शब्दार्थः– **जिज्ञासु**–जानने की इच्छा करने वाला, पूछताछ करने वाला, **प्रयाग** – इलाहाबाद, **विदीर्ण**–बीच से फाड़ा हुआ, टूटा हुआ, भग्न, **वाक्चातुरी**–हाजिर जवाब, **कुदरत** – प्रकृति या ईश्वरीय शक्ति, **विचलित** – अस्थिर, चंचल, **सख्ती** – कठोरता, कड़ाई, **कहर** – आफत, विपत्ति, **दीर्घजीवी** – लम्बी उम्र या आयु वाला।

अभ्यास

पाठ से

1. लुकमान ने बकरे के शरीर के सबसे अच्छे और बुरे हिस्से के चयन में जीभ को ही क्यों चुना?
2. चीनी दार्शनिक कन्फ्यूशियस के कथन के जरिए लेखक क्या बताना चाहता है ?
3. लेखक ने हृदय को तोड़ने वालों को क्षमा न देने की बात क्यों कही है?
4. किसी के द्वारा प्रयोग किए कठोर वचन शरीर में चुभते हैं। क्यों ? उदाहरण के साथ स्पष्ट कीजिए।
5. श्रीमती शास्त्री का क्रोध का पारा किस शेर को सुनकर नीचे उतर गया और क्यों ?
6. श्री लालबहादुर शास्त्री जी ने शेर के माध्यम से अपनी पत्नी को क्या समझाने का प्रयास किया, स्पष्ट कीजिए।
7. दोनों ज्योतिषियों ने राजा को एक ही बात कही, उनके कहने के तरीके में आपको क्या अंतर लगता है?
8. लोकप्रिय बनने के लिए आपको क्या करना होगा ?

पाठ से आगे

A4U5HC

1. "जीभ कोमल है, दाँत कठोर हैं। जिसमें लचीलापन होता है, जो नम्र होता है, वह अधिक समय तक जीता है। इस उक्ति पर आप अपना अभिमत दीजिए।
2. वाणी तो सभी को मिली हुई है, परन्तु बोलना किसी–किसी को ही आता है। ऐसा कहा जाता है। क्या आप इस तरह के लोगों से मिले हैं जो बातें करते समय बिना सोचे–समझे बोल जाते हैं। उनके बारे में लिखिए।
3. लुकमान के इस कथन से आप कहाँ तक सहमत हैं, कि जीभ अच्छी नहीं तो सब बुरा ही बुरा है। तर्क सहित अपने विचार रखिए।
4. 'एक बात से प्रेम झरता है और दूसरी बात से झगड़ा होता' है। इस तरह के अनुभव आप सभी के भी रहे होंगे इसके बारे में आपस में बात कर लिखिए।
5. वाक् चातुर्य से कटु वचन को प्रिय और मधुर बनाया जा सकता है, इस बात पर विचार करते हुए अपनी समझ को लिखिए।
6. आपके अपने अनुभव के हिसाब से जीवन में वाणी का क्या महत्व है? अपने अच्छे और बुरे अनुभवों को रखिए।
7. 'कड़वी बात ने संसार में न जाने कितने झगड़े पैदा किए हैं'– कोई पौराणिक या ऐतिहासिक घटना को आधार बनाकर इस कथन की सत्यता सिद्ध कीजिए।

भाषा से

AG8DXH

1. पाठ में विनम्र स्वभाव, मधुर वाणी, गलत प्रयोग, विनाशकारी महाभारत, अभिमानी फूल, मीठी वाणी जैसे विशेषण शब्दों का प्रयोग हुआ है अपने शिक्षक के सहयोग से पता कीजिये कि उक्त शब्द विशेषण के किन भेदों के उदाहरण हैं ?
2. पाठ में आए कुदरत, जबान, नापसंद, शेर, सख्ती जैसे विदेशज शब्दों के पर्यायवाची शब्द (किसी शब्द–विशेष के लिए प्रयुक्त समानार्थक शब्दों को पर्यायवाची शब्द कहते हैं। यद्यपि पर्यायवाची शब्द समानार्थी होते हैं किन्तु भाव में एक–दूसरे से किंचित भिन्न होते हैं।) खोज कर वाक्य में प्रयोग कीजिए।
3. वाक्य संरचना को समझने के लिए निम्नलिखित उदाहरणों को देखिए–
    1. उसकी प्रशंसा इधर–उधर फैलने लगी।
    2. दास प्रथा के दिनों में एक मालिक के पास अनेक गुलाम थे, जिनमें एक था लुकमान।
    3. एक दिन उसके मालिक ने उसे बुलाया और कहा सुनते हैं तुम बहुत होशियार हो।

    पहले वाक्य में एक क्रिया अथवा एक ही विधेय है उसे सरल या साधारण वाक्य कहते हैं। दूसरे वाक्य में एक प्रधान उपवाक्य है और एक आश्रित या सहायक उपवाक्य है। यह संपूर्ण वाक्य मिश्र वाक्य है। तीसरे वाक्य में दो वाक्य हैं जो 'और'

शब्द से जुड़े हैं और दोनों स्वतंत्र है जिन्हें संयुक्त वाक्य कहते हैं। पाठ से इस प्रकार के दो–दो वाक्यों को चुन कर लिखिए। यह भी जानने का प्रयास कीजिए कि मिश्र वाक्य में आश्रित उपवाक्य संज्ञा उपवाक्य है, या विशेषण अथवा क्रिया विशेषण उपवाक्य है। आप भी उक्त तीनों प्रकार के दो–दो वाक्यों की रचना कीजिए।

4. पाठ में दुर, सद, वि, तथा अभि उपसर्ग के योग से बने शब्द यथा दुरूपयोग (दुर + उपयोग), सदुपयोग – सत् + उपयोग, विनम्र (वि + नम्र) एवं अभिमानी (अभि + मानी) आए हैं। वे शब्दांश जो शब्द के पूर्व में जुड़कर शब्द के अर्थ में परिवर्तन अथवा विशेषता उत्पन्न करते हैं, उपसर्ग कहलाते हैं। आप भी इन उपसर्गों से बने पाँच–पाँच शब्द लिखिए।
5. इस पाठ का एक छोटा अनुच्छेद श्रुतिलेख के लिए बोलिए। उत्तर पुस्तिकाओं का अदल–बदल कराकर विद्यार्थियों से उनका परीक्षण कराएँ। शिक्षक श्यामपट पर अनुच्छेद लिखेंगे।
6. दीर्घजीवी शब्द दीर्घ+जीवी दो शब्दों से मिलकर बना है। इसी प्रकार दो शब्दों को मिलाकर पाँच नए शब्द और बनाइए, जैसे– काम+चोर से बना कामचोर।
7. इस पाठ का सारांश अपने शब्दों में लिखिए।

योग्यता विस्तार

AGH9ZJ

1. निम्नलिखित दोहों पर समझ बनाते हुए पढ़िए–
   बोली एक अनमोल है, जो कोई बोलै जानि
   हिये तराजू तौलि के, तब मुख बाहर आनि। –*कबीरदास*
2. हमारी वाणी में कटुता के क्या कारण हो सकते हैं? हम किसी के प्रति अपमानजनक भाषा और गाली का प्रयोग क्यों करते हैं? इस विषय पर अपने साथियों के साथ चर्चा कर अपने–अपने विचारों को उदाहरण के साथ लिखिए।
   - बानी बोल अमोल है, जो कोई जाने बोल।
     पहले भीतर तोलिए, फिर मुख बाहिर खोल।। – *रहीम*
   - ऐसी बानी बोलिए, मन का आपा खोए।
     औरन को सीतल करै, आपहु सीतल होए।। – *कबीर*
   - खीरा मुख ते काटिए, मलिए लोन लगाय।
     रहिमन कड़वे मुखन कों, चहिए यही सजाय।। – *रहीम*

   इस प्रकार के अन्य दोहों, सूक्तियों और उद्धरणों का संग्रह कर कक्षा में साथियों के साथ शिक्षक के सहयोग से चर्चा कीजिए।
3. किसी ऐसे व्यक्ति के बारे में आप पाँच बातें बताएँ जिनका बोलना या तो आपको बहुत अच्छा लगता है या अच्छा नहीं लगता।
4. कोमल वाणी के महत्व पर किसी कवि की दो पंक्तियाँ खोजिए और कक्षा में सुनाइए।

पाठ 20

मिनी महात्मा

– श्री आलम शाह खान

AGR627

गाँधी जी के इस कथन "अत्याचार को सहना अत्याचार को बढ़ावा देना है" को आत्मसात करती इस कहानी का मुख्य पात्र मोहन पुलिस अधिकारी की ज्यादती का शांतिपूर्ण परंतु दृढ़ विरोध करता है। अपने निश्चय पर अटल मोहन के प्रतिकार के समक्ष पुलिस अधिकारी को अपनी गलती सार्वजनिक रूप से स्वीकार करते हुए खेद व्यक्त करनी पड़ती है। प्रस्तुत कहानी न सिर्फ किशोरवय बालक की दृढ़ता और प्रतिकार की शक्ति को अभिव्यक्त करती है। बल्कि यह कहानी संबंधों के सौहार्द को भी बनाए रखने का प्रयास करती है।

बात जरा–सी थी पर मोहन था कि रोए चला जा रहा था। लोग समझा–समझाकर थक गए कि बड़े छोटों को पीटते चले आए हैं, अगर 'पुलिस अंकल' ने उसके एक चपत लगा भी दी तो क्या हो गया? कौन सा पहाड़ टूट पड़ा उस पर? बड़े हैं, पड़ोसी हैं–प्यार भी करते हैं, अच्छे–बुरे में भी काम आते हैं, पर वह अब रोते–रोते मुँह बिसूरने लगा था, उसकी हिचकियाँ बँध गईं।

"अरे भाई, बड़े हैं, जरा जल्दी होगी, किसी ने उन्हें नहीं टोका। एक तुम्हीं उनके आड़े आ गए।"

"क्योंकि उनकी गलती थी। बड़ों ने नहीं टोका उन्हें और मैंने टोक दिया तो मुझे पीट दिया, क्यों? कोई बड़ा उन्हें रोकता टोकता तो क्या वह उसके चाँटा जड़ देते? नहीं तो मुझे इसलिए पीट दिया कि मैं बच्चा हूँ, छोटा और कमजोर हूँ ....।"

लोग भी तरह–तरह की बातें कर रहे थे–

"लड़का जिरह किए जाता है, इसे कौन समझाए?"

"रोता है, रोने दो – कब तक रोएगा?"

"अभी थककर आप चुप हो जाएगा।"

"चलो जी, चलो .... सब–इंस्पेक्टर साहब आप भी चलें ..... सुबह–ही–सुबह रोनी सूरत सामने पड़ी। छुट्टी का दिन न बिगड़ जाए।" इतना कह–सुनकर दूध के बूथ के आगे खड़े लोग बिखर गए। दूध खत्म होने पर दूधवाला भी बूथ बंद कर चला गया। पर वह वहीं खड़ा रोता रहा–रोता रहा; टस–से–मस न हुआ। सूरज की किरणें चमकने पर भी जब वह घर न पहुँचा तो उसकी माँ ने इधर–उधर पूछा। पड़ोस के गुल्लू ने सारी बातें बतलाई। सुनकर माँ उस बूथ के पास गई, तो वह उनसे लिपट गया। हिचकियाँ भरकर रोने लगा। माँ ने भी वही कहा, जो सबने कहा था।"अरे बेटा! बड़े हैं, बाप बराबर, तनिक चपतिया दिया तो क्या हो गया? कौन तीर तान दिया? चुप भी हो जा अब।"

"मार दिया तो कुछ नहीं, बड़े हैं, और मार दें, पर मेरा कसूर तो बताएँ। बप्पा को कारखाने में यूनियनवालों ने मारा; वे अस्पताल में पड़े हैं। उनका कोई कसूर होगा, पर मुझे क्यों मारा। मेरी क्या गलती थी, क्या कसूर था?"

''अब जिद मत कर, तूने दूध भी नहीं लिया .... तेरे बप्पा को अस्पताल नाश्ता देने जाना है, तुझे याद नहीं?''

''मैं नहीं जाऊँगा। कहीं नहीं जाऊँगा। जाऊँगा तो पुलिस अंकल के घर।''

''मान भी जा बेटे, मैं उनसे कह दूँगी कि आगे से ऐसा सुलूक न करें बच्चों के साथ।''

''पर जो दो चाँटे मुझे जड़ दिए, उनका क्या?''

''उनका क्या? अब चुप भी हो ले, नहीं तो मैं भी लगा दूँगी, चल।''

''तो तुम भी क्यों चूको, लगा दो।''

''मैं कहती हूँ घर चल। अस्पताल जाना है, अब उठ भी।''

''मैं नहीं आता, पुलिस अंकल के घर जाकर पूछूँगा उनसे कि मेरा कसूर बताइए।''

''नहीं आता तो जा मर कहीं।'' इतना कह माँ सिर पर पल्ला ढँककर वहाँ से चल दीं।

ट्रिन .... ट्रिन .... ट्रिन घंटी घनघनाई। थोड़ी देर बाद दरवाजा खोला तो पाया– भीगी आँखें लिए, सामने मोहन खड़ा है। उसे देखकर शेरसिंह सकपकाए।

''अंकल! आपने मुझे क्यों मारा? मेरा कसूर क्या था?'' सुबकते हुए उसने वही सवाल पूछा।

''किसने मारा? किसको? मैं कुछ नहीं जानता।''

''आपने मारा मुझे। आखिर क्यों मारा?''

''जा, मारा तो मारा। दफा हो जा यहाँ से, नहीं तो और पिट जाएगा। चल खिसक।'' वे गरजे।

''मारो .... और मारो, पर मैं नहीं जाऊँगा, जब तक आप यह नहीं बताएँगे कि मेरा कसूर क्या था....'' वह भी कड़ककर बोला। अब आसपास के घरों की मुँडेरों से दस–पाँच चेहरे उभर आए। देखा, बरामदे के सामने मुँह बिसूरता मोहन खड़ा है और अपने बरामदे में झल्लाए, शेरसिंह।

''जाएगा भी यहाँ से, या दो–एक चपत खाकर ही टलेगा।''

''आप जो चाहें करें। जब तक मेरा कसूर नहीं बताएँगे, मैं यहाँ से नहीं जाऊँगा।''

''अजीब उजड्ड–ढीठ लड़का है।'' एक पड़ोसी ने कहा।

''देखिए, आप इसे समझाएँ; अगर यहाँ से दफा नहीं हुआ तो मैं इसे कोतवाली में बंद करवा दूँगा,'' शेरसिंह गरजे।

''आप जो चाहें सो करें, पर मेरा कसूर बताएँ, जिससे मैं आगे ऐसा कुछ न करूँ कि बड़ों को मुझ पर हाथ उठाना पड़े?' मोहन बोला।

''अभी तो बस तू इतना कर कि यहाँ से दफा हो जा। नहीं तो...'' वे भन्नाए। ''सच, पड़ोस का लिहाज है, वरना इस बच्चू को वह सबक सिखाता कि...'' 'शेरसिंह कुढ़कर बोले। परसों ही वे नायक से तरक्की लेकर असिस्टेंट सबइंस्पेक्टर बने थे।

''मैं सबक सीखने ही आया हूँ। आप मुझे बताएँ कि कतार तोड़नेवाले को टोकना कोई पाप है?''

''यार, इस लड़के पर कौन–सा भूत सवार है? किसी भी तरह नहीं मानता।' इतना कहकर शर्मा जी नीचे उतरे। वर्मा जी भी साथ आए और उसे पुचकारकर दिलासा देते बोले, 'बहुत हो गया, बेटे मोहन! अब छोड़ो भी और घर चले जाओ।'

''आप सच मानें, मेरी हेठी नहीं हुई, अगर अंकल ने पीट दिया.... और लगा दें दो–चार पर बताएँ तो कि आखिर क्यों मारा मुझे? ....''

''कुत्ते की दुम, टेढ़ी की टेढ़ी। कहा न भाई बड़े हैं।''

''बड़े तो आप सब हैं। सभी पीट दें, मैं कुछ नहीं बोलूँगा। लेकिन इतना बताएँ कि क्यों? सिर्फ इसलिए कि मैं छोटा हूँ, कमजोर हूँ।''

''नहीं–नहीं यह बात नहीं। तुमसे कोई बदतमीजी हुई होगी। इसलिए, बस।''

''तो यह बता दें कि क्या बदतमीजी हुई?''

''जा, जा कुछ नहीं हुआ। पीट दिया हमने, कर ले जो कुछ करना हो;'' अब शेरसिंह के भीतर बैठा पुलिसवाला बोला।

''ठीक है, तो मैं यहीं बैठा हूँ। आपके फाटक के बाहर।''

''बैठ या मर, हमारी बला से;'' शेरसिंह ने कहा। तभी उनकी घरवाली बाहर आई और उसने सामने खड़े लोगों के हाथ जोड़कर वहाँ से जाने को कहा और मोहन की बाँह थाम भीतर ले गई।

''अब बोल बेटा! क्या गजब हो गया? अगर इन्होंने एक–आध लगा भी दी, तो क्या हुआ? जैसे हमारी अमरित, वैसा तू। चल मुँह धो, कुल्ला कर और नाश्ता कर ले, उठ!''

''आंटी! आपकी बात सर आँखों पर .... पर अंकल बताएँ तो?''

''अब क्या बताएँ ..... समझ ले कि गुस्सा आ गया।''

''तो बस, बाहर पाँच पड़ोसियों के सामने यही कह दें।''

''भई, तू तो बहुत जिद्दी है, इससे क्या हो जाएगा?''

''मुझे तसल्ली हो जाएगी कि मैंने ठीक काम किया था।''

''मैं कहती हूँ कि तुमने गलती नहीं की, ठीक किया।''

''आपने कहा, माना .... पर पीटा तो अंकल ने, सबके सामने।''

''अजी सुनते हो, सुबह–सवेरे क्या महाभारत रचा बैठे। कह दो कि ठीक था मोहन, बस गुस्से में पीट दिया।''

''बस, बस रहने दो अपनी भलमनसाहत। यह नाचीज मुझे अपने घर में, अपने बच्चों के सामने, अपमानित करना चाहता है,'' शेरसिंह गुर्राए।

''इसमें क्या हुआ जो हेठी होती है आपकी?''

''तुम रुको, मैं इसे अभी धक्के मार–मार बाहर कर देता हूँ।'' इतना कहकर शेरसिंह आगे बढ़े।

''आप क्यों हलाकान होते हैं अंकल, मैं खुद ही चला जाता हूँ आपके घर से।'' मोहन ने इतना कहा और हाथ जोड़कर बाहर आ गया, पर गया नहीं। फाटक पर ही घुटनों में सिर रखकर बैठ गया।

उधर वह पुलिस की नई वर्दी पहनकर तैयार होने लगे।

''सुनिए, वह लड़का अभी तक फाटक पर डटा है, कह दो कि गुस्सा आ गया था। क्यों जगत में डंका पिटवाते हो कि बित्ते–भर का छोकरा थानेदार के दर्जे के सरकारी अफसर के

दरवाजे पर सत्याग्रह किए बैठा है। कहीं अखबारवालों को भनक पड़ गई तो तिल का ताड़ बनेगा। फिर आज गांधी जयंती भी है।''

''क्या कहती हो, उसके आगे गिड़गिड़ाऊँ, कहूँ कि मेरे बाप बख्शो....।'' तभी 'सबको सन्मति दे भगवान, ईश्वर–अल्लाह तेरे नाम' की गूँज सुनाईं दी। खिड़की से झाँका, तो देखा–लड़के झंडे और तख्तियाँ उठाए प्रभातफेरी पर निकले हैं। असिस्टेंट सबइंस्पेक्टर भीतर खड़े थे और मोहन बाहर उनके फाटक पर डटा था, तभी लड़कों की टोली आ पहुँची। वहाँ अपने साथी को गठरी बना बैठे देखा, तो सब वहीं रुक गए।

''क्या हुआ?''

''मोहन यहाँ?''

''क्यों बैठा है?''

''चलो, इसे भी साथ लो, इसे भी तो एक तख्ती बनानी थी।''

''चलो मोहन, प्रभातफेरी में। यहाँ बैठे क्या कर रहे हो?'' आगे वाले बड़े लड़के ने उसे बाँह थामकर उठाया, तो देखा, उसकी आँखें सूजकर लाल हो गई हैं और अभी भी उसकी आँखों से आँसू बह रहे हैं।

''अरे क्या हुआ इसे?'' सभी के मुँह से निकला।

तभी एक लड़के ने, जो सुबह दूध लेने आया था, सारी बात बताई और कहा कि मोहन सुबह से इस बात पर अड़ा है कि अंकल बताएँ उसने ऐसा क्या कसूर किया था, जो उन्होंने उसे पीट दिया। सब समझाकर हार गए, पर यह यहाँ से टलता ही नहीं।

''मोहन ! तुम्हारी तख्ती का पन्ना कहाँ है ? कल तो हेकड़ी बघार रहे थे कि गांधी जी की वह बात चुनूँगा कि ...।

''वह तो यह रहा, लो पढ़ो,'' कहकर मोहन ने एक कागज आगे बढ़ा दिया। उस पर लिखा था –''अत्याचार को सहना उसे बढ़ावा देना है।''

''ठीक है, गाँधी जयंती पर गांधी जी की एक बात को सही करके दिखाएँ।'' इतना बोल एक बड़े लड़के ने तिरंगा ऊँचा करते हुए जोर से कहा – ''दोस्तो! अंकल को सफाई तो देनी ही होगी। हम सब यहीं रुकें। बोलो–महात्मा गांधी की जय। .... अंकल, बाहर आइए....।'' और आस–पास ऐसे ही नारे गूँजने लगे।

अब तो मोहल्ले भर के लोग भी वहाँ जमा हो गए। नारे गूँजते रहे। मोहन हाथ जोड़कर फाटक के आगे खड़ा रहा। थोड़ी देर बाद बाबा फरीद फाटक खोलकर भीतर गए और शेरसिंह जी के साथ बाहर आए। फिर सबको स्नेह से देखते हुए बोले, ''प्यारे बच्चो! सुनो, अंकल तुमसे कुछ कहना चाहते हैं'', इतना कहकर वे पीछे हट गए।

अब सामने पुलिस अंकल आए और कहने लगे, ''अच्छा बच्चो! आज सुबह मुझसे एक ज्यादती हो गई। मैं अत्याचार कर बैठा। गुस्से में मैंने मोहन पर हाथ उठा दिया। कसूर मेरा ही था। मैं शर्मिन्दा हूँ।'' इतना सुनना था कि मोहन ने आगे बढ़कर अंकल के चरण छुए और जोर से नारा लगाया, ''अंकल, जिन्दाबाद!''

शब्दार्थः– **जिरह**–बहस, पूछताछ, फेरबदल कर बार–बार एक ही प्रश्न को पूछना, **हेठी**–अपमान, प्रतिष्ठा में कमी, तौहीनी, **मुंडेरों**– दीवार का वह ऊपरी भाग जो सबसे ऊपर की छत के चारों ओर कुछ–कुछ उठा हुआ होता है, **बिसूरना**–मन में दुःख मानना, **हेकड़ी**–डींग हाँकना, बढ़ चढ़कर बातें करना, **तनिक**–थोड़ा, अल्प, **चपतिया**–झापड़ मारना, चपत लगान **सलूक**–व्यवहार, बर्ताव, **दिलासा**–तसल्ली, ढाढ़स, सांत्वना।

अभ्यास

पाठ से

1. वह जरा सी बात क्या थी, जिसकी वजह से मोहन लगातार रोये जा रहा था ?
2. ''जा–जा कुछ नहीं हुआ। पीट दिया हमने। कर ले जो कुछ करना हैं ! अब शेर सिंह के भीतर बैठा 'पुलिसवाला' बोला'' इस कथन में 'पुलिसवाला' लिखने के पीछे लेखक का क्या भाव है ?
3. सबके समझाने के बाद भी मोहन घर क्यों नहीं जा रहा था ?
4. शेर सिंह की पत्नी ने लोगों से क्या और कैसे कहा ?
5. मोहन ने अपने व्यवहार में विरोध को शामिल कर साबित किया कि अत्याचार को सहना उसे बढ़ावा देना है। कैसे ?
6. 'लड़का जिरह किए जाता है। इसे कौन समझाए?' लोग किस आधार पर ऐसा कह रहे थे?
7. इस पाठ में कुछ वाक्य ऐसे हैं जिनमें बालकों की बात पर ध्यान न देने का भाव छिपा है। ऐसे चार वाक्य पाठ में से छाँटकर लिखिए।
8. 'बात 'मान भी जा बेटे! **मैं उनसे** कह दूँगी, आगे से ऐसा सुलूक न करें बच्चों के साथ।' लिखिए इस वाक्य में–
   – **'मैं'** किसके लिए आया है ?
   – **'उनसे'** किसके लिए आया है ?
   – 'ऐसा सुलूक' कहकर किस सुलूक की बात कही गई है ?
   – 'मान भी जा बेटे' में कौन–सा भाव छिपा है ?
9. कहानी में आए निम्नलिखित पात्रों के बारे में आपने जो राय बनाई हो, उसे पात्रवार चार–पाँच पंक्तियों में लिखिए।

पाठ से आगे

AH123U

1. फरीद बाबा के व्यक्तित्व का वह कौन सा पहलू है जिसके माध्यम से उन्होंने झगड़े को आसानी से सुलझा दिया। हर समाज में इस तरह के लोग होते हैं। अपने आस–पास के ऐसे लोगों के बारे में समूह में चर्चा कर उनके मानवीय पहलुओं को लिखिए।
2. मोहन सच्चाई पर अड़ा रहा और अंत में उसकी विजय हुई। शेर सिंह को अपनी गलती को स्वीकार करना पड़ा। क्या आपने अपने आस–पास में ऐसी कोई घटना देखी या सुनी है जिसमें सच्चाई की जीत हुई हो। अपना अनुभव लिखिए।
3. मिनी महात्मा' शीर्षक कहानी में मोहन ने महात्मा गाँधी के किन सिद्धांतों का पालन किया? अपने मित्रों से बात कर लिखिए।
4. कतार में लगकर कोई भी सामान लेने के क्या फायदे और नुकसान आपको लगते हैं। अपने अनुभव के आधार पर लिखिए।
5. फरीद बाबा ने पुलिस अंकल को भीतर जाकर क्या समझाया होगा, जिसे सुनकर पुलिस अंकल अपनी गलती स्वीकार करने आ गए ?
6. इस कहानी को पढ़कर आपकी क्या राय/समझ बनती है? लिखिए।
7. मोहन के प्रति शेरसिंह ने जो दुर्व्यवहार किया था, मोहन उसका विरोध गाँधी जी द्वारा सुझाए गए मार्ग पर चलकर कर रहा था। महात्मा गाँधी जी द्वारा इस संबंध में क्या मार्ग सुझाया गया था? मोहन द्वारा किए जा रहे उक्त व्यवहार से आप कहाँ तक सहमत हैं? लिखिए।

भाषा से

AH9X5H

1. पाठ में 'सर आँखों पर' तथा 'पहाड़ टूटना' जैसे मुहावरों का प्रयोग हुआ है, इसी प्रकार 'कुत्ते की दुम, टेढ़ी की टेढ़ी' लोकोक्ति भी आई है।

   कोई भी ऐसा वाक्यांश जो अपने साधारण अर्थ को छोड़कर किसी विशेष अर्थ को व्यक्त करे, वह मुहावरा कहलाता है। जबकि लोकोक्ति लोक–अनुभव से बनती हैं । किसी समाज ने जो कुछ अपने लंबे अनुभव से सीखा है उसे एक वाक्य में बाँध दिया है। ऐसे वाक्यों को ही लोकोक्ति कहते हैं। इसे कहावत, जनश्रुति आदि भी कहते हैं। मुहावरा वाक्यांश है और इसका स्वतंत्र रूप से प्रयोग नहीं किया जा सकता। लोकोक्ति संपूर्ण वाक्य है और इसका प्रयोग स्वतंत्र रूप से किया जा सकता है। जैसे–'होश उड़ जाना' मुहावरा है। 'बकरे की माँ कब तक खैर मनाएगी' लोकोक्ति है। अब आप पाँच मुहावरे

और पाँच लोकोक्ति खोज कर लिखिए और उनका अर्थ स्पष्ट करते हुए वाक्य में प्रयोग कीजिये।

2. इन शब्दों को देखें – लम्बाई, चतुराई, बुढ़ापा, नम्रता, मिठास, समझ, चाल, दूरी, मनाही, निकटता इत्यादि। जिस नाम या संज्ञा से पदार्थ में पाए जाने वाले किसी धर्म अवस्था, गुण दोष का बोध हो वह, भाववाचक संज्ञा है। पाठ में आए निम्न शब्दों से भाववाचक संज्ञा बनाइए – ईमानदार, बेईमान, खराब, सफेद कमजोर, चालाक।
3. पाठ आधारित कुछ शब्द दिए जा रहे हैं जिनके अनुस्वार व अनुनासिक हटा दिए गए हैं। निम्नांकित दिए गए शब्दों में अपनी समझ के अनुसार अनुनासिक लगाएँ– उदाहरण पाँच, मुह, डाका, हसना, आख, गाधी, आसु, अकल, हू, गूज, मच, तखितया।
4. निम्न शब्द दो–दो पदों के योग से बने हैं। उन पदों को अलग–अलग करके लिखिए। महात्मा, धर्मात्मा, पुण्यात्मा, परमात्मा, पापात्मा।
5. 'बड़ा' या 'बड़े' शब्द का प्रयोग कई अर्थों में होता है। भिन्न–भिन्न अर्थों में इसका प्रयोग कीजिए और अर्थ भी लिखिए।
6. नीचे लिखे वाक्यों में कोष्ठक में अंकित मूल क्रिया का सही रूप बनाकर रिक्त स्थान भरिए–

   (क) स्कूल की घंटी ....। मंदिर में घंटा ....। (बजाना)

   (ख) हम गाँधी जयंती ....। बच्चे बाल दिवस ....। (मनाना)

   (ग) प्रधानजी ने झंडा ....। अध्यापक ने झंडियाँ ....। (फहराया)

   (घ) घर में भाई ....। घर में बहन ....। (आना)

योग्यता विस्तार

AHIT75

1. पाठ का नाम 'मिनी महात्मा' है। 'मिनी' अंग्रेजी शब्द है जिसका अर्थ है 'छोटा'। पाठ में भी इसी आशय से मिनी शब्द का प्रयोग किया गया है। पाठ में और भी कई अंग्रेजी शब्द आए हैं। उन्हें खोज कर इस तरह से वाक्य में प्रयोग करते हुए लिखिए ताकि उनका अर्थ भी स्पष्ट हो सके।
2. राष्ट्रपिता ने कहा था कि "अत्याचार को सहना उसे बढ़ावा देना है" गाँधी जी द्वारा कहे गए इस प्रकार के अन्य कथनों को ढूँढ़ कर लिखिए और उन पर साथियों से चर्चा कीजिए।
3. आपने किन–किन मौकों और स्थानों पर लोगों को कतारबद्ध देखा है, इसके क्या फायदे हैं? इनपर आपस में बातचीत करते एक सूची बनाइए।
4. विरोध–प्रदर्शन के दो तरीके होते हैं एक लड़ाई–झगड़ा करके, दूसरा शान्ति से। आपको दोनों तरीकों में कौन–सा उचित लगता है?

पाठ 21

सिखावन

(दोहा)

AHSP8S

—संकलित

सिखावन माने सीखे के बात या शिक्षा। ये पाठ म संकलित नौ ठन दोहा म कवि ह नौ ठन शिक्षा दे हवय। पहिली के सियान मन अपन जिनगी के अनुभव अपन पाछू के पीढ़ी ल सउप देवँय। इही किसम ले ज्ञान के भंडार ह भरत रहय। इही अनुभव अउ ज्ञान के बात सिखावन कहे जाय।

का होगे के रात हे, घपटे हे अँधियार ।
आसा अउ बिसवास के, चल तैं दीया बार।

एके अवगुन सौ गुन ल, मिलखी मारत खाय।
गुरतुर गुन वाला सुवा, लोभ करे फँद जाय।

मीठ—लबारी बोल के, लबरा पाये मान।
पन सतवंता ह सत्त बर,हाँसत तजे परान।

घाम — छाँव के खेल तो,होवत रहिथे रोज।
एकर संसो छोड़ के, रद्दा नावा तैं खोज।

लाखन — लाखन रंग के, फुलथे फूल मितान।
महर — महर जे नइ करे, फूल अबिरथा जान।

सब ला देथे फूल — फर,सब ला देथे छाँव।
अइसन दानी पेड़ के, परो निहरके पाँव।

तैं किताब के संग बद, गंगाबारू,मीत।
एकरे बल म दुनिया ल,पक्का लेबे जीत।

ठाड़े — ठाड़े नइ मिले,ठिहा ठिकाना — सार।
समुँद कोत नँदिया चले, दउड़त पल्ला मार।

हे उछाह मन म कहूँ , पाये बर कुछु ज्ञान।
का मनखे ? चाँटी घलो,पाही गुरु के मान।

छत्तीसगढ़ी शब्द मन के हिन्दी अर्थ

का होगे	=	क्या हो गया,	मितान	=	मित्र
घपटना	=	सघनता के साथ छा जाना	महर–महर	=	सुगंध से महकना
अँधियार	=	अंधकार	नइ	=	नहीं
आसा	=	आशा	अबिरथा	=	बेकार
बिसवास	=	विश्वास	निहरके	=	झुककर
बारना	=	जलाना	बदना	=	(क्रिया)अनुष्ठान के साथ मानना (संज्ञा)मनौती
मिलखी मारत	=	पलक झपकते ही			
गुरतुर	=	मीठा			
फँद जाना	=	फँस जाना	एकरे	=	इसी का
लबारी	=	झूठ	पक्का	=	निश्चित
लबरा	=	झूठा	ठिहा–ठिकाना	=	मंजिल,गन्तव्य
सतवंता	=	सत्यवादी	सार	=	निचोड़
सत बर	=	सत्य के लिए	समुंद	=	समुद्र
परान	=	प्राण	कोत	=	तरफ,ओर
घाम	=	धूप	पल्ला मारना	=	तेज गति के साथ (दौड़ना)
संसो	=	चिन्ता			
रद्दा	=	रास्ता	उछाह	=	उत्साह
नवा	=	नया	चाँटी	=	चींटी
लाखन–लाखन	=	लाखों–लाख	घलो	=	भी

अभ्यास

पाठ से

1. हमन ला चाँटी ले का–का सिखावन मिलथे ओरिया के लिखव।
2. 'ठाढ़े–ठाढ़े ठिहा–ठिकाना नइ मिलय'–एमा कवि के भाव ल बने अरथा के लिखव ?
3. काकर बल म ये दुनिया ल जीते जा सकत हे, अउ 'दुनिया ल जीतना' के का अर्थ हे ?
4. पेड़ ल दानी काबर कहे गे हवय ?

5. 'घाम–छाँव के खेल' के अर्थ ल बने समझ के लिखव ?

6. 'रात' अउ 'अँधियार' के अर्थ कवि के अनुसार का हो सकत हे ?

7. 'आसा अउ बिसवास के दिया बारना' के भाव ल लिखव ।

पाठ से आगे

1. एके अवगुन सौ गुन ल, मिलखी मारत खाय।

   गुरतुर गुल वाला सुवा, लोभ करे,फँद जाय ।।

   इसका संदर्भ क्या हो सकता है व इससे आप कहाँ तक सहमत है। विचार कर लिखिए।

3. जीवन बर आसा अउ बिसवास ल कवि ह जरूरी बताय हे। का तुमन घलव वइसने सोचथन बिचार करके लिखव।

4. नवा रद्दा खोजे ले जीवन म का–का परिवर्तन हो सकथे, अपन कक्षा के दू समूह बनाके सोचव अउ लिखव।

5. ''अगर दुनिया में किताब या किताब लिखइया नइ होतिन ता का होतिस।'' ए विषय में 10 लाइन लिखव।

6. सीख के अइसनेहे दोहा मन ल सकेल के लिखव।

भाषा से

1. कविता अउ लेख के भाषा म बड़ अंतर होथे। कविता के भाषा अउ लेख के भाषा ल पढ़व अउ गुनव। कविता म शब्द भले कमती होथे,फेर ओकर अर्थ ह बड़े होथे। एमा कमती शब्द म बड़ गहरी बात ल कहे के उदिम कवि ह करे रहिथे। एकरे सेती कविता के शब्द म लुकाय भाव अउ विचार ल बने देखे अउ समझे ल परथे। एकर छोड़,कवि ह अपन भाषा ल गहना–गुरिया घलो पहिराथे,तेला 'अलंकार' कहे जाथे। जइसे–

   अ. आसा अउ बिसवास के दीया ।

   ब. गुरतुर–गुन ।

   पहिली डाँड़ ल पढ़व अउ गुनव। दिया ह माटी के बनथे,फेर कवि ह आसा अउ बिसवास के दिया बनाय हे। एकर माने,कवि ह आसा अउ बिसवास ल दिया के रूप दे हवय। ये ह 'रूपक' अलंकार के उदाहरण आय।

अब दुसरइया म दू शब्द के जोड़ी हवय–गुरतुर अउ गुन। दूनो शब्द के शुरू ह 'ग' अक्षर ले होय हे। अइसन प्रयोग ल 'अनुप्रास अलंकार' कहिथें।

अपन शिक्षक ले पूछके अउ आने–आने प्रयोग के बारे म जानव अउ लिखव, जइसे–

अ – लाखन–लाखन।

ब – ठाढ़े–ठाढ़े।

2. ये पाठ के कविता ह दोहा छंद म बँधाय हे। छंद माने बँधना। छंद ह कई प्रकार के होथे। कोनो छंद म 'मात्रा' के गिनती करे जाथे त कोनो छंद म 'वर्ण' के गिनती करे जाथे। जेमा 'मा़त्रा' के गिनती करे जाथे,तेला 'मात्रिक छंद' अउ जेमा 'वर्ण' के गिनती करे जाथे,तेला 'वार्णिक छंद' कहे जाथे।

   दोहा ह अर्धसम मात्रिक–छंद आय। एकर चार चरण होथे। पहिली अउ तीसर चरण के 13–13 मात्रा के पाछू 'यति' होथे । दुसरइया अउ चौथइया चरण म 11–11 मात्रा होथे। सब मिला के 24–24 मात्रा होथे। मात्रा के गिनती ल 'गुरु' अउ 'लघु' ल समझ के करे जाथे 'गुरु' माने दू मात्रा अउ 'लघु' माने एक मात्रा। गुरु वर्ण के उच्चारण म जादा समय लागथे अउ लघु वर्ण के उच्चारण म कम समय लागथे। जेन वर्ण म कोनो मात्रा नइ रहय या 'इ' अउ 'उ' के मात्रा रहिथे,तेला 'लघु' या एक मात्रा माने जाथे। आने मात्रा वाला वर्ण ल दू मात्रा या 'गुरु' माने जाथे। गुरु के चिनहा 'S' अउ लघु के चिनहा '।' जइसे होथे।

| | | | | S

उदाहरण– कमल, कमला

| | S S S S | | |, | | S S S S | = 13+11=24

सब ला देथे फूल–फर,सब ला देथे छाँव ।

| | | | S S S | S, | S | | | S S | = 13+11=24

अइसन दानी पेड़ के,परो निहर के पाँव ।

पाठ म आय दू ठन दोहा ल लिखके मात्रा के गिनती करव ।

3. छत्तीसगढ़ी भाषा म गंज अकन मुहावरा के प्रयोग करे जाथे। एकर प्रयोग ले भाषा के प्रभाव के ताकत बढ़ जाथे अउ भाव म गहराई आ जाथे।

4. खाल्हे लिखाय मुहावरा मन ल अपन वाक्य म प्रयोग करव ।

   मिलखी मारना, मीठ लबारी बोलना, पल्ला मारना ।

5. उल्टा अर्थ वाला शब्द लिखव –

   अँधियार, आसा, लबरा, छाँव, जीत ।

6. जेन शब्द ह संज्ञा या सर्वनाम शब्द के विशेषता बताथे, तेला 'विशेषण' कहे जाथे। जइसे–'गुरतुर गुन'। एमा'गुन'के विशेषता बताय जावत हे। कइसन गुन हे ? ये प्रश्न के उत्तर हवे 'गुरतुर हे'। संज्ञा शब्द के साथ 'कइसे' या 'कइसन' के प्रश्न करे म 'विशेषण'शब्द के पता लग जाथे।

   पाठ के दोहा मन म आय 'विशेषण' शब्द ल छाँट के लिखव ।

7. पाठ म आय दोहा मन के संदेश उपर दस वाक्य लिखव ।

योग्यता विस्तार

1. पं. सुंदरलाल शर्मा के खंडकाव्य 'दानलीला' ल पढ़व। ओमा के दोहा ल याद करव ।
2. कबीर दास अउ तुलसी दास मन कइ ठन सिखावन दोहा लिखे हवँय। दूनो के सिखावन दोहा ल लिखव अउ याद करव ।

टिप्पणी

AIKCDQ

गंगाबारू अउ मीत– छत्तीसगढ़ म एक ठन अइसन परंपरा हे,जेहा आने जघा नइ मिलय,एहा मितानी के परंपरा आय । पारा–परोस के मनखे अउ नता–गोता वाला मनखे मन के आगू म पूजा–पाठ के सँग एक दूसर ल गंगा के बारू या बालू खवाके मितान बन जाथें। ये अइसन नता आय जेहा कई पीढ़ी तक चलथे। अइसने किसम के कई ठन मितानी – परंपरा छत्तीसगढ़ म हवय। जइसे – भोजली, जँवारा, महापरसाद बदे के पंरपरा।

577TC4

पाठ 22

हिरोशिमा की पीड़ा

–श्री अटल बिहारी वाजपेयी

किसी एक देश में हुआ नर संहार समस्त मानव जाति की चेतना को झिंझोड़ सकता है। ऐसे में हमार उत्तदायित्व क्या होता है। यही बताने के लिए इस पाठ का चयन किया गया है। इस पाठ में मानवतावादी दृष्टिकोण, मानवीय संवेदना, करूणा एवं विज्ञान के सदुपयोग आदि के बारे में बताया गया है।

किसी रात को
मेरी नींद अचानक उचट जाती है,
आँख खुल जाती है,
मैं सोचने लगता हूँ कि
जिन वैज्ञानिकों ने अणु अस्त्रों का
आविष्कार किया था :
वे हिरोशिमा – नागासाकी के
भीषण नरसंहार के समाचार सुनकर
रात को सोए कैसे होंगे ?

दाँत में फँसा तिनका,
आँख की किरकिरी,
पाँव में चुभा काँटा,
आँखों की नींद,
मन का चैन उड़ा देते हैं।

सगे–संबंधी की मृत्यु,
किसी प्रिय का न रहना,
परिचित का उठ जाना
यहाँ तक कि पालतू पशु का भी बिछोह
हृदय में इतनी पीड़ा इतना विषाद भर देता है

कि चेष्टा करने पर भी नींद नहीं आती
करवटें बदलते रात गुजर जाती है।

किंतु जिनके आविष्कार से
वह अंतिम अस्त्र बना
जिसने छः अगस्त उन्नीस सौ पैंतालीस की काल रात्रि को
हिरोशिमा–नागासाकी में मृत्यु का तांडव कर
दो लाख से अधिक लोगों की बलि ले ली,
हजारों को जीवन भर के लिए अपाहिज कर दिया

क्या उन्हें एक क्षण के लिए सही, यह
अनुभूति हुई कि उनके हाथों जो कुछ
हुआ, अच्छा नहीं हुआ ?
यदि हुई, तो वक्त उन्हें कटघरे में खड़ा नहीं करेगा
किंतु यदि नहीं हुई तो इतिहास उन्हें कभी माफ नहीं करेगा।

– अटल बिहारी वाजपेयी

शब्दार्थ – **आविष्कार** – नवनिर्माण, प्राकट्य, नई खोज, ईजाद, **कालरात्रि** – अंधेरी एवं भयानक रात, **भीषण** – भयानक, भयंकर, **नरसंहार** – लोगों का सामूहिक विनाश, **बिछोह** – वियोग, **विषाद** – गहरा दुःख, **चेष्टा** – कोशिश, **अनुभूति** – अनुभव जन्य, **कटघरा** – काठ का बना घेरा, अदालत में वह स्थान जहाँ विचार के समय अभियुक्त और अपराधी खड़े किए जाते हैं।

पाठ से –

1. हिरोशिमा और नागासाकी नामक स्थान कहाँ स्थित हैं?
2. कवि की नींद अचानक किसी रात को क्यों उचट–उचट जाती हैं?
3. कवि का हृदय विषाद से क्यों भर जाता है?
4. विश्व युद्ध के दौरान परमाणु बम कहाँ गिराया गया था?
5. कविता में किस तिथि को 'कालरात्रि' कहा है और क्यों?

6. उस भीषण नरसंहार में कितने लोगों की बलि चढ़ी?

7. कवि वैज्ञानिकों से किस प्रकार की अनुभूति की अपेक्षा करता है और क्यो?

पाठ से आगे –

1. "इतिहास उन्हें कभी माफ नहीं करेगा।" इस पंक्ति में उन्हें किसके लिए कहा गया है और कवि ने ऐसा क्यों कहा है?

2. इस कविता का शीर्षक 'हिरोशिमा' की पीड़ा कहाँ तक उचित है? समूह में चर्चा कीजिए और लिखिए।

3. युद्ध क्यों होते हैं? इनके कारणों पर विचार कीजिए और कारणों को बिन्दुवार लिखिए।

4. विज्ञान को सद्कार्यों से कैसे जोड़ा जा सकता है? अपने विचार लिखिए।

5. विश्व को जीतने के लिए युद्ध अथवा प्रेम व शांति में से आप किसे चुनेंगे और क्यों ? तक सहित उत्तर दीजिए।

भाषा से –

1. निम्नलिखित शब्दों के दो–दो पर्यायवाची लिखिए।

नर –

आँख –

रात –

देश –

हाथ –

पाँव –

2. निम्न मुहावरों का अर्थ लिखिए एवं उनका वाक्यों में प्रयोग कीजिए –

आँख खुलना –

उठ जाना –

आँख की फिरकिरी –

करवटें बदलना –

3. कविता में 'हिरोशिमा – नागासाकी' एवं 'सगे–संबंधी ' इन शब्दों के बीच योजक चिन्ह (–) का इस्तेमाल हुआ है। ऐसे ही पाँच अन्य मिलते–जुलते शब्द बीच योजक चिन्ह लगता है, लिखिए ।

योग्यता विस्तार –

1. 'हिरोशिमा –नागासाकी' नरसंहार के संबंध में इंटरनेट से जानकारी एकत्र कर पढ़िए।
2. 'वसुधैव कुटुम्बकम' की भावना से संबंधित श्लोगन बनाइए।
3. इतिहास में कुछ ऐसे युद्ध हुए हैं जिन्हें भुलाया नहीं जा सकता है। ऐसे युद्धों के विषय में इंटरनेट, पुस्तकालय अथवा इतिहास के शिक्षक से जानकारी प्राप्त कीजिए।

और भी जाने –

अटल बिहारी वाजपेयी –

भूतपूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी का जन्म 25 दिसंबर 1924 को हुआ। वाजपेयी जी राष्ट्रभाषा हिन्दी के प्रबल समर्थक रहे हैं। राजनीति में अपनी स्वच्छ छवि के कारण अजातशत्रु कहे जाते हैं। आप राजनेता होने के साथ–साथ कवि, कुशल वक्ता एवं पत्रकार के रूप में जाने जाते हैं। आप पहले विदेश मंत्री थे जिन्होंने संयुक्त राष्ट्र संघ में हिन्दी में भाषण देकर भारत का गौरव बढ़ाया था। सन् 1942 में 'भारत छोडो आंदोलन' के तहत जेल–यात्रा भी की। आपने राष्ट्र–धर्म, पांचजन्य, चेतना, दैनिक स्वदेश तथा वीर अर्जुन का संपादन किया। आपने बहुत–सी पुस्तकें लिखीं। जिनमें आपके द्वारा दिए गए लोकसभा में भाषणों का संग्रह, लोकसभा में अटल जी, अमर बलिदान, न्यू डाइमेंशन ऑफ इंडियन फॉरेन पॉलिसी आदि मुख्य हैं।

57GPDR

स्वच्छता के जरिए स्वास्थ्य की ओर एक कदम

1. हाथ अच्छी तरह धोकर ही भोजन ग्रहण करें।
2. खुले में रखे भोज्य पदार्थों का सेवन न करें।
3. घर के सामने कचरा न फेकें।
4. कचरा कूड़ेदान में ही डालें एवं बंद कूड़ेदान का इस्तेमाल करें।
5. इधर–उधर मल–मूत्र विसर्जित न करें न ही थूकें, इस हेतु शौचालय का इस्तेमाल करें।
6. सड़क पर भूल से भी केले का छिलका अथवा चिकनाई वाला पदार्थ न डालें।
7. घरों के आस–पास पानी एकत्र न होने दें एवं एकत्र पानी के निकासी का बंदोबस्त करें।
8. जलाशयों में समय–समय पर पोटाश, क्लोरिन, फिटकरी आदि डालें ताकि पानी पीने योग्य रहे।
9. सूखे कचरों को एकत्र कर जला दें।
10. प्लास्टिक बैग का इस्तेमाल न करें।
11. सार्वजनिक भोज में प्रयुक्त पत्तल, ग्लास आदि को यहाँ–वहाँ न फेकें।
12. किसी भी तरह की नशीली वस्तुओं का सेवन न करें।
13. टीकाकरण हेतु हमेशा नई सुई का ही इस्तेमाल करें।
14. स्वास्थ्य विभाग द्वारा जनहित में जारी निर्देशों का पालन करें एवं उनके द्वारा मुहैया कराए गए सुविधाओं का लाभ उठाएँ।
15. स्वच्छ एवं स्वस्थ भारत के निर्माण में अपना योगदान दें।

शब्दकोश

शब्दकोश में शब्दों के संयोजन तथा उनके अर्थ समझिए। खाली स्थान पर क्रम से चौकोर में दिए गए शब्दों में से उसी क्रम का शब्द चुनकर लिखिए और उसका अर्थ भी लिखिए।

अ

अंकल	–	चाचा, ताऊ, काका	....		....
अंतर्यामी	–	हृदय की बात जाननेवाला	अफवाह	–	झूठी खबर
अंदाज	–	अनुमान	अबोध	–	जिसे बोध न हो।
अखिल	–	सम्पूर्ण	अभय	–	भय रहित
अग्रसर	–	आगे बढ़ते हुए	अभिभूत	–	बहुत अधिक प्रभावित
....		....	अभिराम	–	सुंदर, प्रिय, सुख देनेवाला
अडिग	–	अचल	अभिशप्त	–	शापग्रस्त
....		....	अमल	–	पालन करना
अदब	–	सम्मान	....		....
अदम्य	–	जिसे दबाया न जा सके	....		....
अधखुली	–	आधी खुली	अरमान	–	इच्छा
अधिपति	–	स्वामी	अरुण	–	लाल
अधीर	–	जो धैर्य खो चुका हो	आलस	–	सुस्ती
अधूरा	–	अपूर्ण	अलौकिक	–	अद्भुत, अनोखा
अनभ्यास	–	बिना अभ्यास के	अवतरित	–	प्रकट
अनवरत	–	लगातार	अवनति	–	पतन
अनाथ	–	बेसहारा	अवनि	–	पृथ्वी
अनुकूल	–	पक्ष में	....		....
अनुपम	–	जिसकी उपमा न दी जा सके	....		....
अनुयायी	–	पीछे–पीछे चलने वाला	असाधारण	–	जो साधारण न हो
अनुरोध	–	निवेदन	असीम	–	जिसकी सीमा न हो
अपंग	–	जो किसी अंग से विहीन हो	अहाता	–	चहारदीवारी

अचरज, अथक, अफरा–तफरी, अमोल

अरदास, अवमानना, अवसर

आ

आकुलता – छटपटाहट, बेचैनी
आक्रामक – आक्रमण करनेवाला
आखिरकार – अंत में
....
....
आगत – आया हुआ, अतिथि
आग्रह – बल देकर निवेदन करना
आघात – चोट
आर्थोपैडिक – हड्डी संबंधी
आदेश – आज्ञा
आधार – सहारा, आश्रय

आधार लेना – सहारा लेना
....
आनंदी मुद्रा – प्रसन्न मुद्रा
....
आभा – प्रकाश
....
आभास – अंदाज, पूर्व ज्ञान
आमंत्रित – निमंत्रित
....
आवागमन – आना–जाना
....

आखेट, आखेटक, आधुनिक, आपात,
आभारी, आलेख, आश्रित

इ

....
इंडेक्स कार्ड – संदर्भ सूची
....
इजारेदार – अधिकारी, ठेकेदार
....
इतिवृत्त – कहानी, कथा

इर्द–गिर्द – आस–पास
....
इम्तहान – परीक्षा
इश्तहार – विज्ञापन
....

इच्छित, इतर, इंगित, इमदाद, इष्ट

ई

ईश – ईश्वर

ईर्ष्या – द्वेष, जलन

उ, ऊ

....
उकेरना – पत्थर पर तराशकर लिखना
उजड्ड – गँवार

उज्वलता – चमकीलापन
उत्कट – तीव्र
उत्तुंग – बहुत ऊँचा

....		....	उबालना	–	खौलाना
उत्फुल्ल	–	प्रसन्नता से खिला हुआ	उर्वरा	–	उपजाऊ
....		....	उलाहना	–	शिकायत
उद्यत	–	उतावला	उसूल	–	सिद्धांत
....		....	ऊटपटांग	–	बेढंगा

उकताना, उत्पन्न, उपकार, उत्स

ए, ऐ

एकांकीकार	–	एकांकी नाटक का लेखक	एडवांस	–	अग्रिम
एकाग्रता	–	ध्यान	....		....
....		....			

एकाधिकार, ऐश्वर्य

ओ, औ

....		....	औषधि	–	दवाई
....		....	....		....

ओजस्वी, ओला, औसत

क

कंदरा	–	खोह	कराह	–	दर्दभरी आवाज
कक्ष	–	कमरा	कायल होना	–	प्रभावित होना
कटुक	–	कड़ुवा	काया	–	शरीर
कद	–	देह की ऊँचाई–लंबाई	करिश्मा	–	आश्चर्यजनक कार्य, चमत्कार
कदर	–	तरह	कलह	–	लड़ाई, झगड़ा
कपोत	–	कबूतर	कलित	–	सुंदर
कमनीय	–	सुंदर	कहा	–	क्या
कयामत	–	प्रलय	कहावैं	–	कहलाते हैं
कर्कश	–	कठोर	काक	–	कौआ
कर्मनिष्ठ	–	कर्म के प्रति ईमानदार	....		....
करबद्ध	–	हाथ जोड़कर	कानन	–	वन, जंगल
करारा	–	अच्छा, चुनिन्दा	....		....

कामयाब – सफल
....
....
कार्यान्वयन – कार्य का होना, करना
किरीट – मुकुट, ताज
....
कीर्ति – यश, प्रसिद्धि
कुत्सित बुरी भावना
कुपित – नाराज़
कुफ्र – पाप
कुतुबनुमा – दिशासूचक यंत्र

कुर्बानी – बलिदानी
कुरीति – बुरी रीति
....
कुहराम – शोक का शोरगुल, हाय–तौबा
कृतज्ञता – एहसान
....
क्रूरता – निर्दयता
कोकिल – कोयल
कोतवाली – थाना, आरक्षी केन्द्र
कोसकर – गाली देकर

काागा, कानून, कामारि, कायापलट, किला, कुदिन, कुलच्छन, कृश

ख

खंड – टुकड़ा
खंड मनुज – टुकड़ों–टुकड़ों में बँटा मनुष्य
खता – दोष, अपराध
....
खुशबू – सुगंध
खामखाह – बेकार में

खिलवाड़ – मजाक
....
....
खातिर – सम्मान
....
ख्याति – प्रसिद्धि
खरीता – पत्र

खाता, खिन्न, खिलौना, खुलेआम, खुशी, खूबी

ग

गगन – आकाश
गठन – बनावट, रचना
....
....
गद्दारी – देशद्रोह, राजद्रोह
गात – शरीर
गिड़गिड़ाना – अनुनय–विनय करना
गिरि – पर्वत
....

ग्रीवा – गर्दन
....
गुमसुम – चुपचाप
गुम हो जाना – खो जाना
गेह – घर
गैर जिम्मेदार – सौंपी गई जिम्मेदारी को न निभानेवाला
गौण – साधारण, अप्रधान

गदर, गिरीश, गुजर, गठरी

च

....		....
....		....
चरमोत्कर्ष	–	चरम ऊँचाई। बहुत अधिक उन्नति।
....		....
चाटुकार	–	खुशामदी
चातक	–	पपीहा
चालो	–	छाँटकर निकालो, गतिमान करो
चिल्ल पौं	–	शोर गुल
....		....
चीत्कार	–	चीख
....		....
चौपट	–	बर्बाद
चौपाल	–	गाँव का सार्वजनिक स्थान
चौमास	–	बारिश के चार महीने
....		....

चंदन, चंद्रिका, चलन, चिह्नित, चोट

छ

छद्म	–	कपट, धोखा, अपने असली रूप को छिपाना
....		....
छल	–	कपट, यथार्थ का गोपन
....		....
....		....
....		....
....		....

छलावा, छबि, छिद्र, छात्र, छुरिका

ज

....		....
जनतंत्र	–	जनता द्वारा बनाया गया तंत्र
जननी	–	माता
जर्नेल	–	जनरल, सेना का एक बड़ा अधिकारी
....		....
जबान	–	भाषा
जलप्रपात	–	झरना
जश्न	–	उत्सव
....		....
जालिम	–	अत्याचारी
जिजीविषा	–	जीने की इच्छा
जिज्ञासु	–	जानने की इच्छा रखने वाला
जिरहबख्तर	–	कवच
जिह्वा	–	जीभ
जिह्वाग्र	–	जीभ का अगला भाग
....		....
जूझना	–	लड़ना
....		....
ज्यादती	–	अत्याचार
जरहि	–	वैद्य

जग, जबर, जायदाद, जुगुप्सा, जोश

झ

....

झापड़ – थप्पड़

झटपट, झोली

ट

टटोलना – खोजना ....

टस–से–मस न होना – बिना हिले–डुले ....

टिपटाप, टेलीग्राम

त

तंग नजरी – संकीर्ण विचार संकुचित दृष्टिकोण

तटस्थल – किनारे की भूमि

तत्कालीन – उसी समय का

तत्परता – मुश्तैदी

तबादला – बदली, स्थानांतर

तमतमाना – क्रोधित होना

तंबू – डेरा, टेंट

तरक्की – उन्नति, पदोन्नति

....

तराशना – काटकर आकार देना, फाँक–फाँक करना

तरुण – जवान

तसल्ली – दिलासा, सांत्वना

तादाद – संख्या

तासों – उससे, इससे

तिकड़म – किसी भी तरह सफलता प्राप्त करना

तिल का ताड़ बनाना – बढ़ा–चढ़ा कर कोई बात कहना

तीक्ष्ण – तेज, उग्र

....

तोबा – पश्चाताप करना

तोषक – बड़ा तकिया, लोढ़

....

तरणी, तैश, तोहफा

थ

थमना – रुकना, बंद होना ....

....

थाती, थान

द

....
....
दक्षता – कुशलता
....
दफा हो जाना – चला जाना
दलहा – एक पर्वत का नाम
दस्ता – सेना की टुकड़ी
दस्तावेज – अभिलेख, रिकार्ड
द्रवित – भावुक, पिघलना
दृगकोर – आँखों का कोना
दाँताकसी – कहासुनी
दिलासा देना – तसल्ली देना
दिलेर – साहसी, दिलवाला
दिवाकर – सूर्य
द्विगुणित – दो गुणा/दुगुना,
दीर्घजीवी – लंबे समय तक जीनेवाला
....
दुर्गुण – अवगुण
दुश्मन – शत्रु, बैरी
....
दूभर – कठिन
देवांगना – देव–कन्या
द्रोह भावना – बैर, दुश्मनी की भावना
दृष्टिगोचर होना – दिखाई देना

दूत, दंडित, दर्प, दंभी, दीपोत्सव

ध

....
....
धमा–चौकड़ी – उछलकूद
धरा – पृथ्वी
धाम – स्थान, निवास
धीरज – धैर्य
धैर्यपूर्वक – धीरज धरकर
....
....

धनंजय, धमकाना, ध्वज, ध्वस्त

न

नज़र – दृष्टि
नज़र अंदाज करना – उपेक्षा करना, ध्यान न देना
नतमस्तक – सिर झुकाकर
....
....
नाचीज़ – तुच्छ
नाटा – ठिंगना, छोटा
नित्य – प्रतिदिन
निर्जीव – जिसमें जीव नहीं, मृत
निर्दय – बिना दया के, दयारहित, करुणाविहीन
निर्देशन – मार्गदर्शन, निर्देश के अनुसार

निर्भय – बिना भय के, भयमुक्त
निमग्न – डूबा हुआ, रमा हुआ
नियति – भाग्य
नियाज़ – भाग्य
निरंतर – लगातार
निरुपाय – जिसका कोई उपाय न हो
निशा – रात, रात्रि

निष्ठा – लगन, ईमानदारी
.... – ....
निस्सीम – जिसकी कोई सीमा न हो
निहत्थे – बिना हथियार के
निहारना – देखना
.... – ....
.... – ....

नफ़ा, नतीजा, निष्प्रभ, नेह न्योता

प

.... – ....
पग – पाँव, पैर
पटुता – दक्षता
पड़ाव – ठहराव
पतित – गिरा हुआ

.... – ....
पथ – रास्ता, मार्ग
पथ–प्रदर्शन – रास्ता दिखाना
पयस्विनी – दूध देने वाली गाय
परवरिश – देखभाल, पालन–पोषण
परस्पर – आपस में
परास्त – हार
परिचायक – सेवा करने वाला

परिचर्या – सेवा
पश्तो – अफगानिस्तान की भाषा

.... – ....
पार्थ – अर्जुन
पाषाण – पत्थर
पार्थिव – पृथ्वी की तरह, निर्जीव
पिद्दी – बहुत छोटा
पुरखा – पूर्वज

पुरस्कार – इनाम
पुष्पवेणी – फूलों की माला
पेश करना – प्रस्तुत करना, हाजिर करना, उपस्थित करना
प्रजनन स्थान – जन्म देने का स्थान
प्रताड़ना – चोट पहुँचाना, बुरा–भला कहना

.... – ....
प्रतिशोध – बदला
प्रदत्त – दिया गया
प्रतिकूल – विपरीत
प्रतिवाद – विरोध
प्रतीक्षा – इंतजार
प्रदीप – दीपक
प्रमाद – आलस्य
प्रवास – अल्पवास
प्रहार – चोट
प्रियदर्शन – प्रिय के दर्शन

.... – ....
प्रौढ़ा – अधेड़ उम्र की औरत

पखवाड़ा, पतोहू, पाखंड, प्रेक्षागृह, प्रतिकार

फ

....		....
....		....
फतह	–	विजय
फरियाद	–	दुहाई, अपराध की शिकायत
फरिश्ते	–	देवदूत
....		....
फुसफुस	–	धीरे–धीरे बातचीत करना
....		....
फैलोशिप	–	सदस्यता प्राप्त करने पर मिलने वाली छात्रवृत्ति
....		....
फिरंगी	–	विदेशी

फकत, फ़कीर, फर्ज, फूहड़, फैसला

ब

....		....
बंदी	–	बँधा हुआ, कैदी
बंदोबस्त	–	प्रबंध
....		....
....		....
बखूबी	–	अच्छी तरह
बख्शो	–	क्षमा करो
बदतमीजी	–	बुरा–व्यवहार
बर्दाश्त करना	–	सहन करना
....		....
बयार	–	हवा
बाडीगार्ड	–	अंगरक्षक
बायोडाटा	–	जीवनवृत्त
बित्तेभर	–	बहुत छोटा
ब्यालू	–	रात का भोजन
बीहड़	–	घना जंगल
बुत	–	मूर्ति
बुतपरस्त	–	मूर्तिपूजक
बुद्धि दीप्त	–	बुद्धि की चमक
बेइंसाफी	–	अन्याय
बेड़ी	–	जंजीर, (पाँवों में लोहे की संकल)
बेशुमार	–	बहुत अधिक, जिसकी गिनती न हो
बेहतर	–	उससे श्रेष्ठ
....		....
....		....
.बोध	–	समझ

बंदनवार, बंधु, बंधुआ, बैठक, बैरागी

भ

भई	–	हुई
भनक पड़ना	–	उड़ती–उड़ती बात सुनाई पड़ जाना
....		....
भव्य	–	अति सुंदर
भ्रम	–	संदेह

भाजन – भागना चाहते हैं।

भीत – दीवाल

भुजा – बाँह

.... – ....

भवन, भ्रमर

म

मंथर – धीमी

मुंडेर – छत पर चारों ओर बनी मेंड़ (घेरा)

.... – ....

मगजमारी – माथापच्ची

.... – ....

मज़मून – विषयवस्तु

मझधार – बीचधार

.... – ....

मरियल – बहुत कमजोर, मरे जैसा

महत्वाकांक्षा – विशेष उपलब्धि की इच्छा

मातहत – अधीनस्थ, अपने अधीन काम करने वाले

मातृहीन – बिना माता के

.... – ....

मानवीय – मानव जैसा

माफिक – अनुकूल

.... – ....

मिन्नत – खुशामद

मीत – मित्र

मुआवजा – नुकसान की भरपाई के लिए दिया जाने वाला धन

मुद्रा – स्थिति

मुक्तिमंत्र – स्वतंत्र होने का मंत्र

मुल्क – देश

मुसाफिर – यात्री

मुस्तैदी – उत्साह से डटे रहना

मूर्तिवत – मूर्ति के समान, स्थिर

.... – ....

.... – ....

मक़सद, मदारी, मजदूर, माननीय, मिट्ठू, मेघ, मौन

य

यकीन – विश्वास

.... – ....

यत्र–तत्र – यहाँ–वहाँ

.... – ....

यदाकदा – कभी–कभी

यवनिका – परदा

युद्ध घोष – लड़ाई की घोषणा

यूरोपीय – यूरोप के

.... – ....

.... – ....

यतीमखाना, यथाशक्ति, योजना, यौगिक

र

....		....
रम्य	–	सुंदर
....		....
रवैया	–	व्यवहार
....		....
....		....
रिक्त	–	रीता, खाली, खोखला
रिवाज़	–	परम्परा
रिहर्सल	–	कोई काम करने के पहले उसका अभ्यास करना
रिक्तता	–	रीतापन, खालीपन
रीति	–	प्रथा, नियम
रुआबदार	–	प्रभावशाली
रुग्ण	–	रोगी
रुचि	–	पसंद, अच्छा लगना
रूह	–	आत्मा
रोगमुक्त	–	बिना किसी रोग के
....		....
....		....

रंक, रदन, रसना, रार, रोज़ाना, रौद्र

ल

लगान	–	खेती पर लिया जाने वाला कर
....		....
लबालब	–	भरपूर
ललाम	–	सुन्दर, मनोहर
....		....
लाभप्रद	–	लाभदायी
लायक	–	काबिल, योग्य
लिबास	–	पहनावा
लियाकत	–	योग्यता, गुण
लैदर–जैकेट	–	चमड़े की जैकेट
....		....
लोभ	–	लालच
लौह पुरुष	–	साहसी पुरुष, सरदार वल्लभ भाई पटेल का सम्बोधन

लगी, लाठी, लोकायन

व

वंचित	–	रहित
....		....
वचनबद्ध	–	वचन में बँधे हुए.
....		....
वयः संधि	–	बचपन और किशोरावस्था, युवावस्था, और बुढ़ापा के बीच की अवस्था
वसुन्धरा	–	धरती
वहशी	–	पागल, निर्दयी
वाजिब	–	सही, उचित
वाणी	–	बोली, भाषा, वचन
वाम	–	उल्टा, बायाँ
वास	–	निवासस्थल, रहना
विख्यात	–	प्रसिद्ध
विच्छिन्न	–	अलग हुई/हुआ
विनम्र	–	कोमल
विपत्ति	–	विपदा
विपुल	–	बहुत अधिक
....		....

....

विलक्षण – अनोखा

विशारद – दक्ष, कुशल, किसी विषय का विज्ञानी

विशेषज्ञ – किसी विषय में, विशेष योग्यता रखनेवाला

विश्लेषण – छानबीन

विषाद – दुख

....

वीरगर्वित – वीरों के पराक्रम से गर्व करने योग्य

वीरान – सूना

वक्रतुंड, वचनामृत, विलग, विहंग, विफल, वीरांगना,

श

शख्स – आदमी

शर्म – लज्जा

शस्य – धान

....

....

शिरोधार्य – सिर पर धारण करने योग्य

शिला – चट्टान (बड़ा पत्थर)

शुक – तोता

शूल – काँटा, पीड़ा

....

श्रवण – कान, सुनना

शयनागार – सोने का स्थान

शहीदी – बलिदानी

शागिर्दी – शिष्यत्व

शिकस्त देना – हराना

....

शौर्य – वीरता, बहादुरी

श्यामल – हरियाली

....

शालीन, शिखि, शेयर, शौक, श्वेत

ष

षड़यंत्र – कुचक्र

....

....

षोडश, षष्ठी

स

संक्रामक – संपर्क में आने से फैलने वाला

संकीर्ण – संकरा

....

....

सँजोया – संभाला

संयुक्त – जुड़ा हुआ

....

सख्य – सखाभाव

....

सन्न – स्तब्ध, भौंचक

सबक – शिक्षा, पाठ

सभीत – भय के साथ, भयभीत

समत्व — समानता, बराबरी

....

सयानी — समझदार

....

सरिता — नदी

सर्जन — चीरफाड़ करनेवाला, ऑपरेशन करनेवाला डॉक्टर

सर्वोच्च — सबसे ऊँचा

सहस्र — एक हजार

सहिष्णु — सहन शील

सामर्थ्य — क्षमता, योग्यता, शक्ति

सार्वजनिक — सबके लिए

सींकिया — दुबला–पतला

सोफियाना — कृत्रिमता

सुभग — भाग्यवान

साहचर्यजनित — साथ होने से पैदा हुई

सिद्धहस्त — जिसका हाथ मँजा हुआ हो, दक्ष, कार्यकुशल

सिहान — सराहना करना

सीमाहीन — जिसकी कोई सीमा न हो, असीम

सुखद — सुख देनेवाला

सुखधाम — सुख का घर

सुगमता — आसानी से, सरलता से

सुरभि — सुगंध

सूरमा — वीर, पराक्रमी

स्वच्छंद — स्वतंत्र, मुक्त

सौंदर्य — सुंदरता

स्नेह — प्रेम

स्पेशल — खास तौर पर, विशेष

सकपकाना — घबराना

सतत — लगातार

समीर — हवा

सराबोर — भीगा हुआ

सर्वसत्ता — सभी की सत्ता

सहजशक्ति — स्वाभाविक गुण

सुलूक — व्यवहार

सैलानी — घुमक्कड़

स्वराज्य — अपना राज्य

स्वेद — पसीना

सकाम, संग्रहीत, संध्या, सगाई, सरासर, सामुदायिक

ह

हतप्रभ — आश्चर्यचकित

हराम — बिना मेहनत के

हर्गिज — बिल्कुल

....

हलाकान — घबराना

....

हिदायत — निर्देश

....

हरीतिमा — हरियाली, हरे रंग का प्रभाव

हिलमिल कर — मिलजुल कर

हेकड़ी — अकड़पन

हेय — तुच्छ, नीच

हौसला — उत्साह

....

....

हलवाई, हालाँकि, हिम्मत, हेडमास्टर, हृदय

क्या आप जानते हैं इकबाल आपसे क्या कह रहा है?

इकबाल आपसे कह रहा है मैं कक्षा में प्रथम आया!

सांकेतिक भाषाः सामान्य परिचय

सांकेतिक भाषा का उपयोग श्रवण बाधित व्यक्ति द्वारा संप्रेषण हेतु किया जाता है। वाक् के अभाव में श्रवण बाधित सांकेतिक भाषा का उपयोग करते हैं। आमतौर पर लोगों की धारणा है कि सांकेतिक भाषा में व्याकरण का अभाव होता है परन्तु यह सही नहीं है, सांकेतिक भाषा में भी व्याकरण है। व्याकरण की दृष्टि से अमेरिकन सांकेतिक भाषा सबसे ज्यादा उन्नत है। अमेरिकन सांकेतिक भाषा फिंगर स्पेलिंग पर निर्भर है तथा वहां सिंगल हैण्डेड फिंगर स्पेलिंग का प्रयोग किया जाता है। इंडियन सांकेतिक भाषा में डबल हैंड़ेड फिंगर स्पेलिंग का प्रयोग किया जाता है। आइये अब हम डबल हैंड़ेड फिंगर स्पेलिंग जाने–